

Stridarpana

Basta bhasha

No: 76







स्त्रीदर्पण

जिस में विद्यानुरागी लड़कियों और स्त्रियों का
परमार्थ साधन और गृह कार्य्य की प्रवी-
णता और निपुणता और उत्तम वार्त्ता
लाप का वर्णन अति सरलता और
सुगमता सहित किया गया है

काश्मीरि पण्डित माधव प्रसाद एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर
ज़िलअ सुल्तांपुर मुल्क अवध प्रणीत

लखनऊ
दूसरी बार
मुन्शी नवलकिशोर साहब के यन्त्रालय में
मुद्रित हुआ॥

अक्तूबर सन १८७९ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्त्थात् नवम्बर सन् १८७९ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लि
तैय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घट
कर नियत हुवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार
की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत
का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
व्याकरण और ज्योतिष।	अमरविनोद	भगवद्गीता
सिद्धान्त चन्द्रिका	जगद्विनोद	भगवती गीता
लघुकौमुदी	औषधिसङ्ग्रह कल्पवल्ली	श्रीमद्भागवत सटीक
मुहूर्त्तचिन्तामणि सारिणी	निघण्ट भाषा	तथा दशम स्कन्ध
शीघ्रबोध	वैद्यदर्पण	हनुमानबाहुक
पाराशरी सटीक	रामविनोद	सांख्यतत्त्वकौमुदी
मुहूर्त्तगणपति	कोष और इतिहास ॥	सुखसागर टेपका
सङ्ग्रहशिरोमणि	शिवसिंह सरोज	ब्रह्मसार
जातकचन्द्रिका	सामुद्रिक	परमार्त्थसार
लघुजातक भाषाटीका	गणितकामधेनु	प्रेमसागर
सहित	कमीशन बड़ोदा	सूरसागर
भाषाजातकालङ्कार	शब्दार्त्थकोष	रागप्रकाश
संस्कृतजातकालङ्कार	अमरकोष तीनों काण्ड-	भक्तमाल
जातकाभरण	भाषाटीकासहित	अवधयात्रा
मुहूर्त्तदीपक	अमरकोष प्रथम काण्ड	कथा गंगाजी
होरामकरन्द	अनेकार्त्थकोष	रामायण टेपकी
मुहूर्त्तचिन्तामणि	ब्रजविलास	रामायण जिल्दबन्दी
मुहूर्त्तमार्त्तण्ड	दुर्गापाठ सटीक	रामायण तुलसीकृत प-
वैद्यक	दुर्गापाठ मूल	त्थर के छापे की
शार्ङ्गधर सटीक	अपराधभञ्जन स्तोत्र	सतसई रामायण
वैद्यजीवन	महिम्नस्तोत्र	कवितावली रामायण
वैद्यमनोत्सव	श्रीगोपाल सहस्रनाम	गीतावली रामायण
अमृतसागर बड़ी	शिवार्च्चन	रामायण दोहावली
अमृत सागर	गङ्गालहरी	सुन्दरीचरित्र

स्त्री दर्पण ॥

—·※·—

जिसमें विद्यानुरागी लड़कियों और स्त्रियों का परमार्थ साधन और गृह कार्य्य की प्रवीणता और निपुणता और उत्तम वार्त्तालाप का वर्णन अति सरलता और सुगमता सहित किया गया है ॥

——o——

काश्मीरि पण्डित माधव प्रसाद साहब ऐक्स्ट्रासिस्टेन्ट कमिश्नर
ज़िलअ सुल्तांपुर मुल्क अवध प्रणीत

लखनऊ

दूसरी वार

मुन्शी नवलकिशोर साहब के यन्त्रालय में
मुद्रित हुआ ॥

——o——

अक्टूबर सन् १८७८ ई०

भूमिका ॥

धन्य है उस परमेश्वर सर्व शक्ति प्रभु को जिसने अपनी इच्छा से इस संसार को प्रकट किया जिसको देख कर बड़े बड़े ज्ञानवान और ज्योतिषी और पण्डितों की बुद्धि इस संसार रूपी सागर की रचना में डूबती और उछलती है और वार बार पार नहीं पाती और यथार्थ में गुणानुवाद और प्रशंसा के योग्य वही परमात्मा है जिसकी माया के चरित्र अद्भुत और चित्र बिचित्र भासते हैं और बड़े २ बुद्धिमान उसके यश कीर्तन में नेति नेति पुकारते हैं यह जगत उसका प्रकाश और वही इसका प्रकाशक है उसने अपनी कृपा से कदाचित् जिसके हृदय में सूर्य्य रूपी ज्ञान उदय कर दिया उसको तो निःसन्देह इस प्रकाशका चमत्कार ऐसे माया रूपीअन्धकार में सुझाई दिया नहीं तो बहुतों ने इसमें खोज किया परन्तु आदि अन्त न पाया उसकी लीला की गति अपरम्पार है वही सब का कर्ता है अब हमको भी उचित है कि अपने परमात्मा परमधाम के चरण कमल में शीस नवावें और मन बच कर्म से ज्ञान रूपी ज्योति के प्रकाश होने का अपने हृदय में उससे कांक्षा करें कि वही सब जगत के मनुष्यों का अज्ञान रूपी सागर से बेड़ा पार करेगा लिखनेको प्रयोजन इस पुस्तक के और कारण इस कहनावत के कहनेका यह है कि इन दिनों में गवर्नमेण्ट इण्डिया की अभिलाषा इस बात पर विशेष करके है कि स्त्रियों को भी लिखना पढ़ना सिख-लाना और सुहाग बुद्धिसे शृंगार देना चाहिये और मेरी वुद्धि में भी स्त्रियों के पढ़ाने लिखाने की आवश्यकता इसलिये विशेष है कि वे अपने धर्म कर्म की बातों से जानकारी प्राप्त कर घरका बंदोबस्त अच्छे प्रकार से कर सकें और नन्हे नन्हे बच्चे जब तक कि पाठशाला नहीं जा सकें उनको बातों बातों में लिखने पढ़ने की बातें सिखा सकें कि उस से उन बच्चों को पढ़ने के समयमें बहुत लाभ हो परन्तु बहुत से मनुष्य हमारे देश के स्त्रियों का पढ़ना उत्तम नहीं समझते विद्या ऐसे पदार्थ का स्त्रियों को प्राप्त होने में अच्छा नहीं जानते इस जगह उनके संदेह व शंका का खण्डन करना नहीं चाहता परन्तु मैं उनसे यह कहूंगा कि वे प्राचीन कालका वृत्तान्त पुस्तकों से देख लें कि जब हिन्दुओं का राज्य था स्त्रियों के पढ़ने लिखने की कितनी चर्चा थी कि गान्धारीजी जो राजाधृतराष्ट्र की रानी और कौरवों की माता थी लिखने पढ़ने में बड़ी प्रवीण थीं व्यासजी ऐसे ऋषि उससे सम्मति लेते थे अखीर समय में राजा भोज की रानी लीलावती बड़ी पण्डिता हुई जिसका भोजप्रबन्ध में बिस्तार सहित वृत्तान्त

लखा है प्रयोजन यह है कि अगले समय में बहुत पढ़ी लिखी स्त्रियां होंगई कि जिनका वृत्तान्त जो लिखा जाय तो एक जुदी पोथी बनजाय कई बर्ष हुये कि मैंने एक पुस्तक उर्दू भाषा में देखी जो किसी मुसल्मान डिपुटी कलक्टर ने लड़कियों के शिक्षा के हेतु बनाई थी उस पुस्तकके देखने से मुझको प्रकट हुआ कि यह पुस्तक इस प्रकार की बनी है कि कदाचित् स्त्री अथवा पुरुष उसको देखें तो अलबत्ता जाने कि स्त्रियों का पढ़ना कितना अवश्य है और पढ़ी लिखी स्त्री किसतरह अच्छे प्रकार से घरका बन्दोबस्त कर सक्ती है परन्तु वह पुस्तक जो कि उर्दू में है और बोल चाल और सब बातें उसकी मुसल्मान औरतों की हैं इसलिये मैंने सोचा कि जो इसी ढंग पर नागरी भाषा में ऐसी पुस्तक लिखी जाय जिसमें हिन्दुओं की लड़कियों का वृत्तान्त हो और सब बात चीत हिन्दुओं के अनुसार हो कि उत्तम घराने में बहुधा लड़कियां नागरी पढ़ी हुई होतीहैं तो ऐसी पुस्तक के पढ़ने से अत्यन्त उनको लाभ और निर्मल बुद्धि प्राप्त होगी जससे अनेक प्रकार का सुख भोग करेंगी धन्य है उस परमात्माको कि जिसने यह अभिलाषा मेरी पूर्ण की और यह पुस्तक समाप्त हुई नाम इसका मैंने स्त्री दर्पण रक्खा ॥





स्त्री दर्पण ॥

—•*•—

जो मनुष्य जगतकी व्यवस्थापर कभी विचार नहीं करता उससे अधिक कोई बुद्धिहीन नहीं है विचार करने के लिये सृष्टि में अनेक प्रकार की बातें हैं परन्तु सब से उत्तम और अवश्य मनुष्य की दशा है विचार करना चाहिये कि जिस दिनसे मनुष्य उत्पन्न होता है जन्मसे मरण काल तक उसको क्या २ बाधा आगे आती हैं और किस प्रकार उसकी दशा बदला करती है मनुष्य की अवस्था में सब से अच्छा समय लड़कपन का है इस अवस्था में मनुष्य को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं होती माता पिता अति प्रेम से पालते हैं और यथा शक्ति उसको सुख देते हैं सन्तान के अच्छे भोजन और वस्त्र से माता पिताको आनन्द होताहै बल्कि मा बाप सन्तान के सुख के कारण अपने ऊपर बड़े २ क्लेश उठाते हैं जो पिता होते हैं मज़दूरी मेहनत से कमाते हैं कोई उद्यम करते हैं कोई व्योपार कोई नौकरी ग़र्ज़ जिस प्रकार से बन पड़ता है सन्तान के सुख के हेतु धन पैदा करते हैं और जो माता होती है अगर बाप की कमाई घरके खर्चको अट नहीं सक्ती किसी काल में द्रव्य के हेतु आप भी मेहनत किया करती हैं कोई माता सिलाई करती है कोई गोटा बिनती है कोई टोपियां काढ़तीहै यहां तक कोई दुखकी मारी माता चर्खा कातकर चक्की पीसकर अपने बच्चों को पालती है सन्तानकी ममता जो मा बाप को होती है बनावट और दिखावट की नहीं होती बल्कि सच्ची और अंतःकरण का स्नेह है परमेश्वर ने सन्तान की ममता माता पिता को इस कारण लगादी है

कि उनका प्रति पालन होय बाल अवस्था में बच्चे निहायत बेबस होते हैं न बोलते न समझते न चलते न फिरते अगर मा बाप प्रीति से पुत्र को न पालते तो बच्चे भूखों मरजाते कहां से उनको रोटी मिलती कहां से कपड़ा लाते और किस प्रकार बड़े होते मनुष्य पर तो क्या पशु पक्षियों में भी बच्चे की ममता बहुत है मुर्गी बच्चे को किस प्रकार से पालती है दिनभर उनको पंखों में छिपाये बैठी रहती है और एक दाना भी अनाज का जो उसको मिलता है तो आप नहीं खाती बच्चों को बुलाकर चोंच से उनके आगे धर देती है अगर चील्ह या बिल्ली उसके बच्चों को मारना चाहे तो अपने जीव का शोच न करके लड़ने और मरने को तैयार हो जाती है ग़रज़ यह स्नेह और प्रीति मा बापको इसी-लिये परमेश्वर ने दी है कि छोटे से नन्हे २ बालकों को जो इच्छा हो अटकी न रहे क्षुधा के समय भोजन और प्यास के समय पानी सर्दी से बचने को ऊनी कपड़ा और अनेक प्रकार की सुख की वस्तु समय पर मिलजावैं देखने से यह बात मालूम होती है कि यह निर्मल प्रीति उसी समय तक रहती है जब तक बच्चों को ज़रूरत और एहतियाज होती है जब मुर्गी के बच्चे बड़े होजाते हैं वह उनको परों में छिपाना छोड़ देती है और जब बच्चे चल फिरके अपना पेट आप भर लेने के योग्य होजाते हैं मुर्गी कुछ भी उनकी सहायता नहीं करती बल्कि जब बड़े होजाते हैं इस प्रकार मारने लगती है कि मानो वह उनकी माता नहीं है मनुष्य के माता पिता का भी यही हाल है जब तक बालक बहुत छोटा है माता दूध पिलाती है और उसको गोद में उठाये फिरती है अपनी नींद हराम करके बच्चे को थपक २ कर सुलाती है जब बालक इतना सयाना हुआ कि वह खिचरी दाल चावल खाने लगा मा दूध बिल्कुल छुड़ादेती है और वही दूध जिसको बर्षों दुलार से पिलाती रही कठोरताई और कठिनाई से नहीं पीने देती कड़ुई वस्तु थनों पर लगा

लेती है और बालक हठ करता है तो मारती और घुड़कती है कुछ दिनों पीछे बच्चों का यह हाल होजाता है कि गोदमें लेना तक नागवार होता है क्या हमने अपने छोटे भाई बहिन को इस बात पर मारखाते नहीं देखा कि मा के गोद से नहीं उतरते हैं और माता रिस करती है कि कैसा कपूत लड़का है कि एक क्षणमात्र को गोद से नहीं उतरता इन बातों से यह मत समझो कि माको प्रीति नहीं रही बल्कि हर एक अवस्था के साथ एक नये प्रकार की प्रीति होती है सन्तान की दशा एकसी नहीं रहती आज दूध पीते हैं फिर खाने लगे फिर पांओं चलना सीखा जितना बड़ा बच्चा होता गया उसी प्रकार प्रीति का रंग बदलता गया लड़के और लड़कियां पढ़ने लिखने के लिये कैसी २ मारें खाते हैं अगर ना समझी से बच्चे न समझें परन्तु मा बाप के हाथों से जो क्लेश कि तुमको पहुंचे वह अवश्य तुम्हारे अर्थ के लिये हैं तुम को संसार में माता पिता से अलग रह कर बहुत दिनों जीना पड़ेगा किसी के मा बाप जन्म भर जीते नहीं रहते अहो भाग्य है उन लड़के और लड़कियों के जिन्होंने मा बापके जीतेजी ऐसा हुनर और अदब सीखा जिस से उनके जन्म भर सुख चैन में गुजरे और बड़े निकृष्ट भाग्य हैं वह लड़के या लड़कियां जिसने माता पिता के जीनेकी क़दर न की और सुख मा बापके कारण मिला उसको अकार्थ किया और ऐसी अच्छे सावकाश और निश्चिन्त के समय को आलस्य और खेल कूद में खो दिया और जन्म भर दुख और क्लेश में काटा आप दुःख में रहे और माता पिता को भी अपने कारण क्लेश में रक्खा मरने पर कुछ अवश्य नहीं शादी ब्याह हुये पीछे औलाद मा बाप से जीते जी छूट जाते हैं जब औलाद जवान होती है मा बाप वृद्ध होजाते हैं और आप पुत्र के आधीन होजाते हैं और इसी से जवान हुये पीछे पुत्र को माता पिता से सहायता नहीं मिल सक्ती बल्कि पुत्रही को माता पिता की

सेवा करनीपड़ती है पुत्र और पुत्रियों को उस समयपर बड़ा विचार करना चाहिये कि मा बापसे अलग हुये पीछे उनकी अवस्था किस प्रकार बीतेगी संसारमें बहुत भारी बोझा पुरुषों के शिरपर है संसार में खाना कपड़ा और नित्य के खर्च की सब वस्तु द्रव्य से मिलती है और सब खटराग द्रव्यका है स्त्रियों को बड़े आनन्दकी बात है कि बहुधा कमाने और द्रव्यके पैदाकरने के लिये उनको कुछभी परिश्रम नहीं करना पड़ता देखो पुरुष उद्यम के लिये कैसे २ कठिन परिश्रम करते हैं कोई भारी भार शिर पर उठाता है कोई लकड़ी ढोता है सुनार, लुहार, ठठेरा, कसेरा, कंदलागर, जरकोब, तारकश, मुलम्मासाज़, सलमा सितारे वाला, विदुर साज़, मीना साज़, क़लईगर, आईना साज, जरदोज़, मनिहार, नालबन्द, नगीना बनाने वाला, कामदानी वाला, सानगर, नियारिया, बढ़ई, खरादी, नारियल वाला, कंघी बनाने वाला, नसफोड़, कागज़ी, जुलाहा, रफूगर, रंगरेज़, छीपी, दस्तारबंद, दर्ज़ी, नैचाबंद, मोची, मुहरकन, संगतराश, चमार, कुम्हार, हलवाई, तेली, तमोली, गन्धी वग़ैरह, जितने उद्यम वाले हैं सबके कामों में बराबर का क्लेश है और यह क्लेश द्रव्य के हेतु पुरुष सहते और उठाते हैं परंतु इस बातसे यह नहीं समझना चाहिये कि स्त्रियों को सिवाय खाने और पीने और सो रहने के कोई कार्य्य संसार का ताल्लुक़ नहीं है बल्कि गृहस्थी के बहुत कार्य स्त्रियां करती हैं पुरुष अपनी कमाई स्त्रियों के आगे लाकर धर देते हैं स्त्रियां अपनी बुद्धि से उस को ऐसे यत्न और सुघराई के साथ उठाती हैं कि सुख के सिवाय इज़्ज़त और नाम पर दाग़ लगने नहीं पाता पस अगर विचार से देखो तो संसार रूपी गाड़ी जब तक एक पहिया पुरुष और दूसरा पहिया स्त्रीका न हो चल नहीं सक्ती पुरुषको द्रव्य की कमाई से इतना समय नहीं बचता कि उसको घरके छोटे छोटे कार्यों में लगावें। ऐ लड़को, यह बात सीखो कि पुरुष

होने पर तुम्हारे काम आवे। और ऐ लड़कियो, वह गुणप्राप्त करो कि स्त्री होने पर तुमको उससे आनन्द और स्वार्थ प्राप्त हो अगर्चि इसमें संदेह नहीं है कि स्त्रीको परमेश्वरने पुरुष से किसी क़दर निर्बल पैदाकियाहै परंतु हाथपांव कान आंख बुद्धि समझ याद सब मनुष्य के बराबर स्त्री को दिये हैं लड़के इन्हीं वस्तुवोंसे काम ले कर मुंशी पण्डित आचर्य वैद्य कारीगर दस्तकार हर इल्म में होशियार और सब हुनरमें चतुर होजाते हैं लड़कियां अपना समय गुड़ियां खेलने और कहानी सुननेमें खोकर बेहुनर रहतीहैं जिन स्त्रियोंने समयकी क़दर पहचानी और उसको कामकी बातोंमें लगाया वह पुरुषोंकी तरह संसारमें मशहूर हुईहैं जैसे मैत्रेयी व गांधारी व लीलावती वग़ैरह या इनदिनोंमें अंगरेजोंकी शाहजादी श्रीमहारानी विक्टोरिया यह वह स्त्रियांहैं जिन्हों ने एक कोटेसे घर और कुनबेका नहीं बल्कि एकदेश और जगत् का बन्दोबस्त किया बाज़ अज्ञान स्त्रियां शोच करतीं हैं कि बहुत पढ़कर क्या पुरुषोंके समान मुंशी और पण्डित होनाहै फिर क्लेश करने से क्या प्रयोजन परंतु जो कोई स्त्री विशेष पढ़गईहै तो निस्संदेह उसने विशेष स्वार्थ और परमार्थ भी प्राप्त कियाहै हम इसबातसे इन्कार नहीं करते कि विशेष विद्या स्त्रियोंको पढ़ना अवश्य नहीं परंतु जितना अवश्यहै उसको कितनी स्त्रियां हासिल करतीहैं कमसे कम उर्दू या नागरी भाषापढ़ना अवश्य है अगर इतना नहीं है तो विशेषहर्ज होताहै यह अपनेकी बात दूसरे पर प्रकटकरना पड़तीहै या उसको छिपानेसे हानि होती है स्त्रियों की बातें बहुधा लज्जा और पर्देकी होती हैं परंतु अपनी माता और भगिनीसे कभी उनको जाहिरकर ने की जरूरत होतीहै संयोगसे समय पर मा बहिन पास नहीं आतीं ऐसी जगह पर लज्जाको छोड़कर कहनाही पड़ताहै नहीं तो कार्य्य हानि होताहै लिखना पढ़नेसे कठिनहै परंतु अगर कोई मनुष्य किसी पुस्तकसे चारसतर रोज़ नक़लकिया करे और इसीक़दर अपने दिलसे बनाकर लिखाकरे और इस-

लाह किया करे तो जरूर थोड़े दिनों में वह लिखना सीख जायगा अच्छे अक्षर लिखनेसे कुछ प्रयोजन नहीं लिखना एक हुनर है जो जरूरतके समय बहुत काम आता है अगर अशुद्ध हो या अक्षर बदसूरत औ ना दुरुस्त लिखे जांय तो बेदिल होकर समझको छोड़ मतदो कोई कार्य हो प्रथम अच्छा नहीं हुआ करता अगर कैसे बड़े पण्डितको एक टोपी कतरने और सीने को देव जिसने कभी न कतरी और सीं हो अवश्य वह टोपी को खराब करेगा चलना फिरना जो तुमको अब ऐसा सहज है कि बेपरिश्रम करे दौड़ते फिरते हो तुमको कदाचित् याद न रहा हो कि तुमने किस तौरसे सीखा परंतु तुम्हारे माता पिता और बड़ोंको अच्छेप्रकारसे याद है पहिले तुमको बेसहारे बैठना नहीं आता था जब तुमको गोदसे उतारकर नीचे बैठाते थे एक आदमी पकड़े रहता था या तकिये का सहारा लगादेते थे फिर तुमने गिर पड़कर घुटनों चलना सीखा फिर खड़ाहोना फिर चारपाई पकड़कर फिर जब तुम्हारे पांव अधिक मजबूत होगये तो धीरे धीरे चलना आगया परंतु सैकड़ों बेर तुम्हारे चोटलगी और हमने तुमको गिरते सुना अब वही तुमहो कि परमेश्वरकी कृपासे दौड़ २ फिरते हो इसी प्रकार एक दिन लिखना भी आ जायगा और माना अगर लड़कों की तरह लिखना भी न आया तो भी बक़दर जरूरत तो जरूर आ जायगा और यह बात तो न रहेगी कि धोबिनके कपड़ों और पिसनहरी कि पिसाईको याद रहनेके हेतु दीवार पर लकीरें खींचती फिरो या कङ्कड़ पत्थर जोड़कर रक्खो घरका हिसाब किताब लेना देना जबानी याद रखना बहुत कठिन है बाज मनुष्योंकी प्रकृति होतीहै कि जो रुपया घरमें दिया करतेहैं उसका हिसाब पूछा करतेहैं अगर जबानी याद नहीं है तो मनुष्यको शङ्का होतीहै कि यह रुपया कहां खर्च हुआ और इनमें बे प्रयोजन का विरुद्ध औ लोभ प्रकट होताहै अगर स्त्रियां इतना लिखनाभी सीखलिया करें कि अपने समझके वास्ते अवश्यहो तो कैसी उत्तम बात

है लिखने पढ़ने के सिवाय सीना परोना रसोई बनाना ए दो गुण सब लड़कियों को सीखने जरूर हैं किसी मनुष्यको यह मालूम नहीं है कि उसको क्या संयोग आगे आवैगा बड़े अमीर और बड़े धनाढ्य जणमात्रमें गरीब व कंगाल होजाते हैं अगर कोई गुण हाथमें पड़ा होता है तो जरूरतके समय काम में आता है यह एक प्रकट बातहै कि पिछले जमानेके राजा महाराजा बावजूद सम्पत्ति और राज्यके अवश्यकरके कोईगुण सीखरक्खा करते थे कि आपत्तिकाल में कामआवे चेतकरो कि संसारकी कोई अवस्था भरोसेके योग्यनहीं है अगर तुमको इस समय सुख और सम्पत्ति प्राप्त है तो परमेश्वर की बिनती करो कि उसने अपनी कृपासे तुम्हारे घरमें सुख व सम्पति दिया है परन्तु यह उचित नहीं है कि तुम इस सुखका आदर न करो या आगेके लिये भरोसा करलो कि यही सुख तुमको सदा रहेगा सुखके दिनों में स्वभावों का ठीक रखना अवश्यहै अगर्चि परमेश्वर ने तुमको चाकर नौकर भी दिये हों परन्तु तुमको अपनी प्रकृति नहीं बिगाड़नी चाहिये कदाचित् अपने को यह सामर्थ्य न रहै तो यह स्वभाव बहुत क्लेश देगा आप उठकर पानी न पीना या छोटे २ कार्यों में सेवकों या छोटे भाई बहिनोंको क्लेश देना उचित नहीं है स्वभावके बिगाड़ने का यही चिन्ह है तुमको अपना सब काम आप करना चाहिये बल्कि तुम घरके बहुतकाम आप करसक्तीहो और अगर तुम थोड़ासा परिश्रम भी अंगीकार करो तो अपनी माताको बहुत कुछ सहायतादे सक्तीहो खूबविचार करके अपनाकाम कोई ऐसा मतछोड़ो जिसको माता अपने हाथोंकरे या दूसरों को उसके हेतु बुलाती और क्लेश देती फिरे ऐ मेरी दुलारी लड़कियो रातको जब सोनेलगो अपना बिछौना अपने हाथ से बिछालिया करो और सबेरे उठकर आप तह करके यतनसे अच्छी जगह रखदिया करो अपने कपड़ोंकी गठरी इसतरह पर रक्खो कि जब कपड़े को बदलने की इच्छा हो अपने हाथ से फटा उधरा दुरस्त करके पहिनलिया और मैले वस्त्रों को

इसप्रकारसे रक्खो कि जबतक धोबिन कपड़े लेनेआवें अलग खूंटी पर लटका रक्खो अगर मैले कपड़े खूंटी पर उठा न रक्खोगी कदाचित् चूहे काटडालें या पड़े पड़े अधिक मैले हों कि धोबिन उसको अच्छे प्रकार निर्मल न कर सके या शायद पृथ्वीकी सर्दी और पसीनेकी तरीसे उसमें दीमकलग-जावे फिर धोबिन को अपने मैले कपड़ा आप देखकर दिया करो और जब धोकरलावे आप देखलियाकरो कदाचित् कोई वस्त्र कम न करलाईहो या कहींसे फाड़ न दियाहो या कहीं दाग़ न रह गयेहों इसी प्रकार जब तुम अपने कपड़ोंकी ख़बर रक्खोगी तुम्हारे कपड़े खूब साफ़ धुलाकरेंगे और कोई कपड़ा न खोवेगा जो भूषण तुम पहने रहतीहो बड़े दामोंकी चीज है चार घड़ी दिन रहे और जब सोकर उठो चेतकर लिया करो कि सबहैं या नहीं बहुधा बेसुध लड़कियां खेल कूदमें गहना गिरा देती हैं गहना गिरने के कई दिन पीछे उनको मालूम होताहै कि बालीगिरगई,छल्ला निकलपड़ा जबघरमें कई बेर झाड़ दीगई क्या मालूम तनिकसी चीज कहांगई या किसीजगह मिट्टीमें दब गई तब ना समझ लड़कियां गहने के वास्ते रोतीहैं और सारेघरको ढूंढ ढांढमें हैरान कर डा-लतीहैं और जब माता पिता को मालूम होताहै कि यह ल-ड़की गहनेको सम्हालके नहीं रखतीहै और खो २ देतीहै तो देभी गहनाके पहलने में सोच विचार करने लगते हैं तुमको सदा ध्यानरखना चाहिये कि घरकेकामों में कौनकार्य तुम्हारे करने का है निस्संदेह जो छोटे भाई और बहिन रोते और हठकरतेहैं तुम उनको सम्हालसक्तीहो कि वह माको क्लेश न दें मुह धुलाना उनके खाने और पीनेकी खबररखना यहसब काम अगर तुमचाहो तो करसक्ती हो परन्तु अगर तुमअपने भाई बहिनोंसे लड़ो और हठकरो तो तुमआप अपनी इज़्ज़त खोतीहो और माको क्लेश देतीहो वह घरका कामदेखे या तुम्हारे मुक़द्दमे का न्याय कियाकरे रसोई जो घरमें बनती है उसको इसहेतुसे नहीं देखना चाहिये कि कब बनचुकेगी

और कबमिलेगी घरमें जो कुत्ता बिल्ली या दूसरे जीव पलेहैं वह अगर उदरभरने की कांक्षा से भोजन के आसरेपर बैठे रहें तो डरनहीं परन्तु तुमको हरबातमें विचार करना चाहिये तरकारी किसप्रकार भूनीजातीहै नमक किसअंदाजसे डालतेहैं अगर हरएक भोजनको अच्छे विचारसे देखाकरो तो निश्चयहै कि थोड़े दिनोंमें तुम भोजन बनाना सीखजावोगी जो लड़कियां रसोई बनाना नहीं जानतीतो मा बापको वृथा लोगों से बुरा कहलवाती है रोजमर्रे की रसोई के सिवाय अच्छे प्रकार के भोजनों के बनाने की रीति भी तुमको सीख लेनाचाहिये आयेगये की मेहमानीमें सदा भांति भांति की अच्छी रसोई बनानी पड़तीहै पुलाव मीठेचावल, जर्दा, तसमई, कढ़ी, मुरब्बा, चटनी, दहीबड़ा, सब मजेदार खानेहैं हरएक के बनानेकी युक्ति याद रखनी चाहिये ब्योंतना वस्त्रका अलबत्ता बुद्धिकी बातहै मनलगाकर उसको जानलेना वाजिब है हमने बहुतनिर्बुद्धि स्त्रियों को देखाहै कि अपने वस्त्र दूसरी स्त्रियोंके पास ब्योंताने के हेतु लियेलिये फिरा करती हैं और उनको थोड़ीसी बातकेलिये बहुतसी चिरौरीकरनी पड़ती है अंगरखा ब्योंतना कुछ कठिन नहीं है जो तुम अपने भाइयों के अंगरखे ब्योंताकरो तो अंगरखाकी ब्योंत समझमें आजावैगी लड़कियां लज्जा की मारी मुंहसे नकहें परन्तु मन में अवश्य जानतीहैं कि कुआंरपनके थोड़े दिन और हैं आखिर ब्याही जावेंगी ब्याहेपीछे नयेप्रकारकी जिंदगी करनीपड़ेगी जैसा कि तुम माता और नानी और मौसी और कुटुम्ब की सब स्त्रियोंको देखतीहो क्वारपनेका समय तो बहुतथोड़ाहै और उससमयका बहुतबड़ा भाग अज्ञानतामें व्यतीत होजाताहै वह अवस्था पहाड़की नाईं तो आगे आरहीहै जो भांति २ के झगड़े और अनेकप्रकारके बखेड़े से भरीहुईहै और विचार करो कि तुमकोई अनोखीलड़की तो हो नहीं ब्याहेपीछे तुम को कुछ और भागलगजावेगी जो संसार की बहू बेटियों को आगेआतीहै वह तुमकोभी आगेआवेगी पससोचनाचाहिये

कि स्त्रियां किसप्रकार अपनी ज़िंदगी पूरी करती हैं ब्याहे पीछे कैसे उनकी इज्ज़तहोतीहै पुरुषकैसा आदर किसप्रकार उनका सनमान करतेहैं खास लोगों की दशा पर नजर मत करो बाज़ीजगह संयोगसे अधिकमिलापहुआ स्त्री पुरुषपर बलवानहोगी और जहां ज्यादा लड़ाई झगड़ा हुआ स्त्री का मान घटगया यह तो बातही अलग है जगत के दस्तूर और रवाजको देखोतो दस्तूरकेमाफ़िक हमतो स्त्रियोंकी कुछइज़्ज़त नहीं देखते बुद्धिहीन उनको कहते हैं त्रिया हठ और त्रिया चरित्र पुरुषों के जबानपर है स्त्रियों की छल छिद्रमें बहुतसी पुस्तकें लिखीहुई हैं गृहस्थीके बरतावमें देखो तो घरके टहल के सिवायसंसारका कोईअच्छाकार्य्य भी स्त्रियोंसे लियाजाता है या किसी अच्छे २ कामकी सलाह भी उनसे पूछीजातीहै जिनघरों में स्त्रियोंका आदरभाव है वहां भी जब स्त्रियों से पूछाजाताहै तो यहीकि क्योंबीबी आज क्या तरकारीबनैगी लड़केके वास्तेटाटवाफ़ी जूते मंगाओगी या डेढ़ हाथिये की कालियां मानिकचन्दीलेवगी या जहाजी रजाईको हरी गोट लगेगी या सुरमई ऐसीबातोंकेसिवाय कोईस्त्री यहतो बताओ कि कभी पुरुषोंने उनसे बड़ी २ बातोंमें सलाहलियाहै कोई बड़ा काम उनके अख्तियारमें छोड़दियाहै पस ऐ स्त्रियो क्या तुमने ऐसे बुरेहालोंको जानकभी नाखुश नहींआता और क्या तुम्हारा जी नहींचाहता कि पुरुषोंके दानिस्तमें तुम्हारीइज़्ज़त हो तुमने अपने हाथों अपना आदर खो रक्खा है और अपने कारण नज़रोंसेगिरीहुईहो तुमको ढंगहोतो पुरुषोंको कहां तक ख्याल न होगा कठिनतोयहहै कि तरकारी रोटी दाल पकालेने औरफटापुराना सीलेनेको ढंग समझतीहो सोफिर जैसा ढंगहै वैसाहीतुम्हारा आदरभावहै ऐसी दशापर अगर संसारभर की बदनामी तुम पर लगाई जाय तो उचित और दुनियां भर की बुराइयां तुम पर लगाई जांय तो सच है ऐ स्त्रियो तुम पुरुषों के मनका बहलाव उनके जीवन सुखका कारण और आनन्दको विशेष करनेवाली और उनके क्लेशको

भुलाने वालीहो जो तुमसे पुरुषोंको बड़े कामों में सहायता मिले और तुमको बड़े कामोंके बन्दोबस्त करनेका ढंगहोतो पुरुष तुम्हारे पांव धोधोके पियाकरें और तुमको अपना सिर-ताज बनाकर रक्खें तुमसे बेहतर उनका दुःख भुलाने वाला तुमसे अच्छा उनका सलाहकार तुमसे ज्यादा उनका भलाई चाहने वाला और कौन है परंतु बड़े कामों का ढंग तुमको प्राप्त क्योंकरहो घरके चार दीवारीमें तो तुम क़ैदहो किसी से मिलनेकी तुमनहीं किसीसे बातकरनेकी तुमनहीं गुण या ढंग आदमी २ से सीखता है पुरुष लोग पढ़ लिखकर चतुर और गुणीहोजाते हैं और जो लिखेपढ़े नहीं वह भी हजारों प्रकारके लोगों से मिलते दशसे दशप्रकार की बातें सुनते हैं इस परदेसे तो तुमको छुटकारे की आसनहीं हमारे देशके चालचलनने परदेमें रहना स्त्रियोंका अवशकर दियाहै फिर सिवाय पढ़नेलिखनेके और क्यातदबीरहै कि जिससे तुम्हारी बुद्धिको प्रकाशहो बल्कि पुरुषों से स्त्रियोंको पढ़ने लिखने की अधिक आवश्यकता है पुरुष तो बाहर के चलने फिरने वाले ठहरे लोगों से मिलचुल कर बहुत बातें सीखलेंगे तुम घरमें बैठे क्या करोगी क्या सीने की पिटारी से बुद्धि की पुड़ियां निकालोगी या अनाजकी कोठरीसे ढंगकीबातें सीखजावोगी पढ़नासीखो कि परदेमें बैठीहुई तमाम संसारकी सैरकर-लियाकरोविद्या प्राप्तकरो कि अपने घरमें दुनियांभरकीबातें तुमको मालूमहुआकरें और स्त्रियोंको अपने संतानके सिख-लाने के हेतु पढ़ना अति विशेष है लड़कियां तो ब्याह तक और लड़के भी दशवर्ष की अवस्थातक बहुधा घरों में रहते हैं और माओं का स्वभाव उनमें असरकर जाता है पस ए स्त्रियो संतानकी अगली बयस तुम्हारे आधीन है तुमचाहो तो वैसे उनके मनोंमें वहइरादे और ऊंचे ख़यालभरदो कि वह बड़ेहोकर नाम नामूद पैदाकरें और जन्मभर सुखसेरहें और चाहो तो उनका ऐसास्वभाव बिगाड़देव कि ज्योंज्यों बड़ेहों ख़राबीके लक्षण सीखतेजायें और अन्ततक उस अर्थ

का पछताव कियाकरें बालकोंको तो जब बोलना आया तब लिखने पढ़नेका ज्ञान भी होसक्ता है अगर माओं को ढंग हो तो उसी समय से बच्चों को सिखलाती जावें मकतब या मदर्से भेजने के आसरे में लड़कोंके कईवर्ष अकारथ जाते हैं बहुत छोटी अवस्थामें न तो बच्चों को आप से पाठशाला जाने की इच्छा होती है न माता पिताकी प्रीति यह बात चाहतीहै कि नन्हे २ बच्चे जो अभी अपनेकाम आपनहीं करसक्ते गुरू के बन्धन में रक्खे जावें परन्तु माता जो चाहे उसी समय में उनको बहुत कुछ सिखा पढ़ासक्तीहै लड़के पाठशालामें बैठने के पीछे भी बहुतदिनोंतक बेदिलीसे पढ़ाकरते हैं और बहुत दिनोंमें उनकी इस्तादाद बढ़तीहै पर इस सबसमयमें उनको माओंसे बहुतसहायता मिलसक्तीहै पहिले तो माता कीसी प्रीति व स्नेहकहां दूसरे रातदिनका बराबररहना जबआगे देखा झट कोई अक्षर पहचनवा दिया कोई गिनतीही याद करादी कहीं पूर्व पश्चिमकी पहचानबतादी मातातो बातों२ में वह सिखा सक्तीहै जो गुरूवर्षोंके सिखलानेसे नहींसिखला सक्ता और माताको सिखलानेमें यह एक कितना अच्छापन है कि लड़कोंके चित्तको घबराहट नहीं होनेपाती औ संतान की तह जीव उनके पालनेकी तदबीर उनके प्राण की रक्षा माताके आधीन है अगर माता को इस ढंगमें कमी है तो संतानके जीवका संदेहहै ऐसा कौन अभागीहोगा जिसको माताकी प्रीतिसे इन्कारहो परंतु वही प्रीति जो अज्ञानता के साथबरतीजाय तो मुम्किन है कि बजाय लाभ के उलटी हानिहोवे क्याहजारों कुबुद्धि माता ऐसी नहींहैं जोसंतान की हरएकमर्जको नजरगुजर और परछावां और झपेटा और आसेब समुझकर बजायदवाके झाड़फूंक उतारा नहीं करती अयोग्य यत्नका गुणतुम्ही समझलो क्याहोता होगा प्रयोजन यहहै कि सबघरकी दुरुस्ती समझपर और समझकी दुरुस्ती विद्यापर है तुमको एक अच्छी कहानी सुनातेहैं जिससे तुम को मालूमहोगा कि बेइल्मीसे क्या क्लेश पहुंचताहै कहानी

परमेश्वरकी एक कमसमझ लड़कीका व्याह होगया था उसने अपनी अज्ञानतासे बर्ष दो वर्षभी ससुरालमें निबाहन किया व्याहके चौथे पांचवेंमहीने पतिपर तकाज़ाकरना शुरूकिया कि गोहमाराशुजारा तुम्हारेमाबहिनोंमें नहीं होता हमको अलग मकानलेदो उसनेकहा जितने तुम्हारे झगड़े अपनेमा बहिनोंके साथसुनतारहाहूं उनसबमें तुम्हाराअपराधहै टोले महल्लेमेंजो आदमीछोटीजातकेरहतेहैं तुमकोउन्हींलड़कियों कोसहिजबनारक्खाहै रातदिनभोंदूकुंजड़े कीबेटीचुनिया और बखुशगंधी वालेकी लड़की जुलफान और प्रयाग अगरहरीकी बेटी सुखिया तुम्हारेपास घुसी रहाकरतीहैं और तुमकोइस बातका कुछ ध्याननहीं कि येलोग न तुम्हारी बिरादरीहैं न भाईबन्धु, न ऐसी तुम्हारी मुलाक़ात न राहवरस्मव प्रीतिन- मासमहल्लेमें चर्चा होरहीहै कि कैसी बहू आई है जबदेखो ऐसीलड़कियां उसकेपास बैठीरहतीहैं आखिरमहल्लेमें लाला प्रयागलाल और हीरालाल और पण्डित गनेशदत्त यह लोग भी तो रहतेहैं और इनकीबहू बेटीहमारेघरमें आतीजाती हैं तुमकिसीसे बातभी नहींकरती अगर हमारी माताने तु- मकोकमीना और बेइज़्ज़त लड़कियोंसे मिलने को मनाकिया तोक्या बुराकिया उसनासमझ बीबीनेजवाबदिया कि प्रीति सेहदिलके मिलनेपरहै हमारेमैकेके पड़ोसमें एक बाखमनि- हार रहताथा पन्नो उसकी बेटी हमारी सहेलीथी जब हम छोटीथीं उसके संग खेला करती थीं दो गुड़ियों का व्याहभी हमनेपन्नोंके साथ कियाथा पन्नों बिचारी बहुत ग़रीबथी हम अपनीमातासे चुराकर उसकोबहुत बहुदिया करतीथींमाता ने बहुतेरा मनाकिया परन्तु हमने पन्नोंका मिलना न छोड़ा पतिने कहा तुमने झखमारा यह सुनकर वह अज्ञानी बीबी मियांसे बोलीदेखो परमेश्वरकीसौगन्ध मैंने कहदियाहै मुझ से ज़बानसम्हालकर बोलाकरोनहींतो पीट २ कर अपनाखून कर डालोंगी यह कहकर रोनेलगी और माता पिताको को- सनाआरम्भकिया कि अबपरमेश्वर इसमाबापका बुराहोकि

कैसी कम्बख़तीमें मुझको ढकेलदियाहै मुझकोअकेला पाकर सबने सताना शुरूअ कियाहै परमेश्वर मैं मरजाऊं मेरीरघी निकले और क्रोधके मारे पानखानेकी पिटारी जो चारपाई पररक्खी थी लातमारकर गिरादी तमाम कत्थाचूना तोशक पर गिरपड़ा जनीदरेशका लिहाफ़पांयते तहकियारक्खा था चूनेके लगतेही उसकातमामरंग कटगया पिटारीकेगिरनेका धमका सुनकर सामनेके दालानसे सास दौड़ीआई माता को आतेदेख बेटातोदूसरे दरवाज़ेसे चलदियापरन्तु अपनेदिलमें कहताथा कि अन्नास मैंने बर्रोंके छत्तेकोछेड़ा सासनेआकर देखातो चार पैसेका कत्था जोछान पकाकर कुल्हियामें भर दियाथा सबगिरापड़ाहै तोशककत्थेमें लतपतहै लिहाफ़चूनेमें भराहै बहू ज़ारज़ार रोरहीहै आतेही सासने बहूकोगलेसे लगालिया और अपनेबेटेको बहुतकुछ बुराकहा अपने दिलजोईकासहारा उंघतेकोठेलनेका बहानाहुआ अगर्चेसासने मिन्नतकी और समझायापर उसऔरतपर कुछअसर न हुआ आस पास की औरतें रोने पीटनेकी आवाज़ सुनकर इकट्ठा होगईं यहांतक नौबतपहुंची कि प्रयाग अगरहरी की बेटी सुखिया समधियानेको दौड़ीगई और एक २ की चार २ लगाईं परमेश्वरकी कृपासे उनकी माताभी बड़ी उताहिलथीं सुनतेकेसाथ डोलीपर चढ़ आपहुंची बहुत कुछ लड़ी झगड़ीं आख़िर बेटीकोसाथलेगईं कईमहीनेतक दोनोंओरसे आना जाना बन्दरहा। ताकि कहानी अच्छेप्रकारसे बूझमें आयेतुम को नामभी उनलोगों के बतादेने ज़रूरहैं परमेश्वरी इस ना समझ औरत का नाम था परमेश्वरी नासमझ गुणहीन और बदमिज़ाजथी परन्तु इसकी छोटीबहिन सरस्वती बहुत चतुर और बुद्धिमान और नेक मिज़ाजथी छोटीसी अवस्था में इसने हिन्दीभाषामें चन्दकिताबेंपढ़लीथीं घरकाहाल अपनेबापको हर शनिश्चरको लिखभेजा करतीथी और अनेकप्रकारके वस्त्र सींसक्तीथीभांति २ के मज़ेदारभोजनपकाने जानतीथी तमाम महल्लेमें सरस्वतीकी तारीफ़थी माताकेघरका तमाम बन्दो-

बस्त सरस्वतीके हाथों रहा करताथा जब कभी बाप रुखसत लेकर घरआता गृहस्थीके बन्दोबस्तमें सरस्वती से सलाहपूंछता रुपिया पैसा कोठरी और संदूकोंकी कुंजियां और सब कुछ सरस्वतीके अख्तियारमें रहाकरताथा मातापिता अन्तःकरणसेसरस्वतीको चाहतेथे बल्किमहल्लेके सबलोग सरस्वतीको प्यारकियाकरतेथे परमेश्वरी खुदबखुद अपनी छोटीबहिन से नाराज रहा करतीथी बल्कि अकेला पाकर मारभी लिया करतीथी परन्तु सरस्वतीसदा अपनी बड़ीभगनीका अदबकरती और मासे उसकीचुगली न खाती दोनों बहिनोंकी सगनीभीसंयोगसे एकहीघरमेंहुईपरमेश्वरीदत्त और अम्बिकादत्तदोसगे भाईथे परमेश्वरीकाविवाह बड़ेभाई परमेश्वरीदत्त से हुआ और सरस्वतीकीबात अम्बिकादत्तके साथठहरचुकी मगर व्याहनहीं हुआथा परमेश्वरीके बदमिजाजी के कारण नधदीकथा कि सरस्वतीकी संगनी छूटजाय परन्तु इनलड़कियोंकी मौसी परमेश्वरीदत्त के घरके पास रहतीथी सो वह सदा समझाती बुझातीरहती अगर्चि परमेश्वरी लड़झगड़ के चलीगईथी परन्तु मौसीने बहुतकुछ बुराभलाकहा और ऊंच नीच समझाया कईमहीनेपीछे होलीके त्योहारमें भानजीको ससुराल लिवालाई बहुत दिनतक परमेश्वरीदत्त स्त्रीसे नाखुश रहा आखिर मौसियासासने स्त्रीपुरुषकामिलाप करादिया परन्तु जबमिजाजोंमें नामुआफ़िकत होतीहैतो हरएक बात में बिगाड़कासामान होजाताहै परमेश्वरीदत्तने एकदिन अपनीमासेकहा कि आजमैंने एकमित्रकी मेहमानीकीहै शाम के खानेकाज्यादाबन्दोबस्त होनाचाहिये माताने उत्तर दिया परमेश्वर जानताहै कि किसहालसे मैंरोटीपकालेतीहूं तीन दिनसे तीसरेपहरको जूड़ी आतीहै मुझको अपनी खबरतक नहींरहतीहै परमेश्वर परोसिनका भलाकरै कि वहशामको इतनाभी पका देतीहै तुमने मेंहमानी करनेसे पहिले घरमें पूंछलिया होता परमेश्वरीदत्तने अचम्भा करके बीबी की ओरदेखा और कहाकि ये इतनेभी कामकीनहींहै बीबीको

इतनी बरदाश्त कहांथी कि इतनीबात सुनकर चुपरहे सुन-तेही बोली इसीबूढ़ी अम्मासे पूछो कि बेटेका ब्याह किया था लौंड़ी मोललो परमेश्वरीदत्तने सोचा अब अगरमैं जवाब देताहूं तो पहिलेकी तरह रुसवाईहोगी अपनासामुंहले-कर रहगया शामके खानेके वास्ते कुछ बाजारसे मोल लाया गर्ज वह बात टलगई अब परमेश्वरीदत्तको दूसरीबात आगे आईयानी गुड़िया पंचमीके एक हफ़ता आगेसे बीबीके जोड़े की तैयारी शुरूकी हररोजभांति २ के कपड़े रंगबरंगकी चूड़ियांडेढ़ हाशिया व सलमासितारेकी कामदार जूतियां लाताथापरन्तु बीबीकेखातिरतलेकुछ नहींआताथा यहां तक कि गुड़ियापंचमीको एकदिन रहगया लाचार होकर पर-मेश्वरीदत्त अपनी मौसियासासके पासगया उन्होंने शब्दसुन-कर अंदरबुलालिया प्यारसे बैठाया पान लगाकर दिया और पूछाकहो परमेश्वरीतो अच्छीहै परमेश्वरीदत्तने कहासाहब आपकी भानजीतो अजीब औरतहै मेरातो दमनाकमें कर रक्खाहै जोचालहै निरालीहै जोबात है सो टेढ़ीहै मौसिया सासनेकहा बेटाइसका कुछध्यान मतकरो अभीकम उमरहै बालबच्चे होंगे घरका बोझा पड़ेगा मिजाज आपसे आपही दुरुस्तहोजायगा और आखिरअच्छेलोग पड़ोसीकोभीनिबाह देते हैं बेटा परमेश्वर ने तुमको सब प्रकार लायक किया है ऐसी बात न हो कि लोगहसैं तुम्हारी इज्जतहै परमेश्वरीदत्तने कहा कि मैं तो खुद इसी खयालसे बहुत दर गुजर करता रहताहूं आप देखिये कल गुड़ियापंचमीहै इस वक्तक न चुड़ियांपहिनी न कपड़ेबनाये जराआप चलकर समझादी-जिये मैंने बहुत कुछ कहा और माताने भी बहुत मिन्नतेंकी परन्तु नहींमानती मौसियासासनेकहा तुम्हारेमौसियासमुर बाजारसे आलें तो उनसे पूछकर मैं चलतीहूं गरज मौसीने जाकर चुड़िया पहनाई कपड़े ब्योंते जल्दी के मारे सबमिल-करसीनेबैठीं मौसीनेकहाबेटी लहंगेमें गोटतुमलगादो डुपट्टे में गोटामैं टाकतीहूं जब परमेश्वरी गोट लहंगेमेंलगाचुकी

तो उसने इतराकर मौसीसे कहा तुमको अभी आधे दुपट्टे में गोटा लगाना बाकी है और मैं लहंगे में गोट लगा चुकी मौसीने देखा तो गोट उलटी लगाई थी परमेश्वरी की सास के लिहाज़से मुंहपर कुछ न कहा परन्तु चुपके २ दो चार चुटकियां ऐसी लीं कि परमेश्वरी के आंखों में आंसू भर आये और हलके से कहा कि अपना सम्भ देख तू उलटी गोट लगा बैठी परमेश्वरी अपना किया हुआ सब उधेड़ा फिर गोट लगाना आरंभ किया जब लगा चुकी मौसी ने देखा तो सब में झोल है तब तो मौसी से न रहा गया सास की आंख बचा एक सुई परमेश्वरी के हाथ में चुभो दी और गोट फिर उधेड़ कर आप लगाई गरज़ इस प्रकार परमेश्वरी का जोड़ा सीं-कर तैयार हुआ रात ज्यादा गई थी परमेश्वर की मौसी अपने घर को विदा हुई और लोग भी सो सुला रहे बच्चे गुड़ियां पंचिमी के खुशी में सबेरे से जागे किसीने रात की मेहदी खोली किसीने बेसन के लिये गुल मचाया परमेश्वरी दत्त वास्ते नहाने और नित्यनेम के सुबह होते नदी पर चला गया दो चार घड़ी दिन चढ़े लौट आया तो देखा कि बीबी सो रही है परमेश्वरी दत्तने अपनी छोटी बहिन यमुना से कहा कि यमुना जाओ अपनी भाभी को जगा दो पहिले तो यमुना ने जाने में संकोच किया इस कारण कि यमुना परमेश्वरी के मिज़ाज से बहुत डरती थी जब से ब्याह हुआ परमेश्वरी ने एक दिन अपनी छोटी नन्द के साथ प्यार से बात नहीं की थी और न कभी अपने पास उसको आने और ब-ठने दिया था परंतु भाई के कहने से त्योहार की खुशी में यमुना दौड़ी २ चली गई और जाकर कहा भाभी उठो २ भाभी ने उठने के साथ यमुना के एक तमाचा मारा यमुना रोने लगी बाहर से भाई आवाज़ सुनकर दौड़ा उसको रोता देखकर गोद में उठा लिया और पूंछा क्या हुआ यमुना ने रोते २ कहा भाभी ने मारा परमेश्वरी ने कहा देखो आप तो दौड़ने में गिर पड़ी और मेरा नाम लगाती है परमेश्वरी दत्त को क्रोध तो आया परंतु चुप रहना उस समय उचित समझा यमुना को प्यार चुपकार कर चुप-किया और बीबी से कहा खैर उठो नहाओ कपड़े बदलो दिन

ज्यादा चढ़गया मैं बाज़ारको जाताहूं परमेश्वरीने नाकभौं सिकोड़कर कहा ऐसे सबेरे मैं नहीं नहाती ठंढका समयहै तुमबाज़ारको जाओ मैंने क्या मनाकियाहै परमेश्वरीदत्तऐसी बात सुनकर बहुत दुखित हुआ और परमेश्वरी ऐसी अभागिनथी कि सदा अपने स्वामीको नाखुश रखती थी इतने में परमेश्वरीदत्त की माताने पुकारा कि बेटा जाओ बाज़ार से मिठाई दूधलाओ परमेश्वरीदत्तने कहा बहुत अच्छापैसा दीदिये मैं मिठाई ला देताहूं परन्तु जो मेरे लौटने तक इन्होंने कपड़े न बदलेतो सब कपड़े चूल्हे में रखदूंगा परमेश्वरीदत्त तो मिठाई लेने बाज़ारगया माता को मालूम था कि पुत्रका मिज़ाज बिगड़ाहुआ है और स्वभावभी इसका इस प्रकारका है कि पहिलेतो इसको क्रोध नहीं आता और जोकभी आजाताहै तो बुद्धि इसकी ठिकाने नहीं रहती ऐसा न हो कि सचमच नये कपड़े जलादे जल्दीसे बहूके पासगई और कहा बेटी परमेश्वरके लिये बरस २ के दिन तो बदशगुनी मतकरो उठो नहाओ कपड़े बदलो परमेश्वरी ने कहा मैं तो नहीं नहातीपरन्तु सासने चिरौरी विनतीकरके बहू को नहलाया धुलाया कंघी चोटीकर कपड़े पहनाय परमेश्वरीदत्त के आने से पहिले दुलहिन बनाकर बैठा दिया परमेश्वरीदत्त लौटकर देखातो प्रसन्नहुआ फिर दूसरी दफ़ा बाज़ार जाते यमुना से पूंछाकहो तुम्हारे वास्ते बाज़ारसे कौन खिलौनालावैं यमुना ने कहा अच्छी सुघर तख़्ती लिखनेके हेतु ला देना और क़लम दावात के लिये एक नन्ही सी संदूकची और परमेश्वरी बोली हमारे लिये क्यालाओगे परमेश्वरीदत्तने कहाजो तुम कहो लेता आऊं परमेश्वरीने कहा भुट्टे और सिंघाड़े और झरबेरके बेर और मटरकी फलियां और बहुतसी नारंगियां और एक ढोलक और एक जोड़ी मंजीरा यह सुनकर परमेश्वरीदत्त हंसने लगा और कहाकि ढोलक मंजीरा क्या करोगी बीबीने जवाबदिया कि बजायेंगी और क्या करेंगीपरमेश्वरीदत्त समझाकि अभी तक इस मर्ख में बे समझ बच्चोंके

प्रकार खाने और खेलनेके खुयालात मौजूदहैं वस्त्र आभूषण पहननेसे जो आनन्द परमेश्वरीदत्तको हुआथा वह सबखाक धूलमें मिलगया और चित्तमें उदासी छागई उसी उदासीके दशामें बाजारको चलागया इसका जानाथा कि परमेश्वरीने एक और नई बातसासमे कहा कि हमको डोली मंगादो हम अपने माके घरजायेंगी सासने कहा भला यह जानेका कौन समयहै परमेश्वरीने कहा आज मेराजी बहुत घबराताहै दिल उलया चला आताहै मुझको अपने मैकेकी सहेली रामदीन मनिहारकी बेटी प्यारी बहुत याद आती है सासने कहाकि अगर ऐसाही दिलचाहताहैतो उसीकोबुलाभेजो परमेश्वरी ने कहा वाह बड़ीबुलानेवाली ठहरीं ऐसाही बुलाना था तो उसीकोबुलाकर चूड़ियांपहनवाईहोती सासनेकहा भलाबेटी मुझको क्या मालूमथा कि अचानक तुमको आज उसकी याद आजायगी परमेश्वरीनेकहा खैरइसझगड़ेसे क्याप्रयोजनडोली मगवानीहैतो मंगवादो नहीतो मैं सुखियाकेबापसेमगवाभेजतीहूं सासनेकहा बेटोतेरी बुद्धिमारीगईहै मियांसे पूंछानहीं गया आपहीआपचली और मुझको अख़तियारनहींजो लड़के के बेआज्ञाडोली मगवादूं परमेश्वरी बोली कैसे मियां कैसा पूंछना अबकोई अपने मातापितासे त्योहारकेदिनभीन मिला करेइतनाकहकर मौकाकुंजड़से डोलीमगवायह जावह जा अपने मैके पहुंची थोड़ी देर पीछे जब परमेश्वरीदत्त बाजार से लौटा तो घरमें घुसतेही पुकारा लो बीबी अपनी ढोलक और मंजीरा परन्तु जब देखा कि सब चुप हैं माता से पूंछा क्या हुआ यमुनाने कहा भाभी जानचली गईं परमेश्वरीदत्त ने पूंछा क्यों कर गई और कहां गई और क्यों जाने दिया मातानेजवाबदिया किबैठे बिठाये अचानककहनेलगी कि मैं तोअपनेनैहरजाऊंगी मैंने बहुतमनाकियाएक न मानीमौला से डोलीमंगवा चलीगई है रोंकते २ रहगई परमेश्वरीदत्त यह सुनकर क्रोधकेमारे कांपउठा और चाहा कि ससुराल जाकर अभी उस अभागिनीको दण्डदूं यह सोचकर बाहरको चला

माता समझगई जातेज्ञए माताने पुकारा उसने कुछ उत्तर न दिया माने कहा बेटा मैं तुम्हें पुकारती हौं तुम उत्तर नहीं देते कलियुग में यही माओं का आदर रहगया है यह सुनतेही परमेश्वरीदत्त उलटा फिरा माने कहा बेटा तू यह बता कि इस धूपमें कहां जाता है अभी बाज़ारसे आया है और फिर बाहर चला परमेश्वरीदत्तने कहा मैं बाहर कहीं नहीं जाता दरवाज़े पर लाला कन्हैयालाल के बैठके में जाता हूं माताने कहा अरे लड़के हाय मैं आ मैंने क्या धूपमें अपने बाल सफ़ेद किये हैं जो साहब हमसे बातें बनाने चला है लाला कन्हैयालाल के पास जाता है तौ दुपट्टा अंगरखा उतार के रखदे और शौक़से बैठके में जा यह सुनकर परमेश्वरीदत्त मुसकराने लगा माताने हाथ पकड़ कर अपने पास बैठा लिया घुटने पर शिर रखकर जुयें देखने लगी यमुना से कहा बेटी ज़रा भाई के पंखा हांको परमेश्वरीदत्त माताके गोद में शिर रखकर सोगया जागा तो दिन ढलगया और वह क्रोध भी धीमा होगयाथा माताने कहा हाथमुंह धोओ जब हाथ मुंह धो चुका तौ कहा अब ससुराल जावो तुझे मेरी सौगन्ध है कि जो तू वहां कुछ लड़ा और बोला परमेश्वरीदत्तने कहा तो मुझको मत भेजो माने कहा तुझको शामके भोजन के लिये ससुराल से आदमी बुलाने आया था और ससुराल ते तेरी है तुझको न भेजूं तो किसको भेजूं और बज्जत समझा समझाकर गुलियामहरी के साथ परमेश्वरीदत्त को ससुराल रवाना किया जब परमेश्वरीदत्त सासके घरके नज़दीक पज्जंचा तो उससमय घर में परमेश्वरी अपनी सहेलियों को साथ लिये उधम मचा रहीथी और बाहर गलीमें तमाम गुलकी आवाज़ आतीथी सरस्वतीने जब महरीको दूरसे आते देखा बड़ीबहिनसे कहा कि चुपकरो तुम्हारे ससुरालसे महरी आई है इतनेमें परमेश्वरीदत्त भी भीतर घरके पज्जंचा सास को सलाम किया सासने कहा जीते रहो इतने में सरस्वती भी अपनी उढ़नी सम्हाल सम्हल कोठरीसे निकली और झुककर बहनोई को सलाम किया सरस्वती को बहनोईने गोदमें

बठालिया थोड़ी देर पीछे सरस्वती गोदसे उठी और जाकर एक थालीमें बड़े सफ़ाई से अच्छी २ मिठाई रखकर ले आई और एक गिलास पानी भरलाई और बहनोईके सामने रख-दिया सासने कहा बेटाखाओ परमेश्वरीदत्तने कहाकि अभी थोड़ी देरहुई मैंने घरमें खाना खायाहै सासने कहाक्या डर है थोड़ासातो खालोइसपर परमेश्वरीदत्तने थोड़ा २ हरएक मिठाई से खानेलगा और खाकर हाथ मुंह धोकर बैठगया सरस्वती इलायची डाल एकमजेदार पानलगालाई और बह-नोईको दिया उसके उपरान्त सास और दामादसे इधर उ-धरकी बातें होतीरहीं चिराग़जले परमेश्वरीदत्त ने कहामैं बिदाहोताहूं सासनेकहा अबकहां जावोगे यहींसोरहो पर-मेश्वरीदत्तने कहाकि आजत्योहारहै और आयेगयेसे मिल-नाहै दूसरे मैं मातासे रातकेवास्ते कहकर नहीं आया सास ने कहा मिलने मिलानेका तो अब समय नहीं रहा क्योंकि शाम होगई है समधनिका कुछ तुम दूधतो नहीं पीतेकि घर जाये बिन चैन नहीं आख़िर महरी जायगी खबर करदेगी परमेश्वरीदत्तने बहुतकुछबहाना कियापर सासनेएक नमाना परमेश्वरीत्त को जबरदस्ती रहनापड़ा चारघड़ी रातगये जब. खाने पीनेसे सावकाशहुई सरस्वतीने बरतन भांड़ा गिरीपड़ी चीज सब ठिकाने रक्खी बाहरके दरवाज़ेकी जंजीर बंदकी कोठरियों में तालालगा कुंजियां माताके हवाले कीं बाहर के दालान और रसोईके मकानका चिराग़ बुझादिया माता और भगनी और बहनोई सबको पान लगाकर दिया और आरामसे जाकर सोरही अब सासने परमेश्वरीदत्त से कहा क्यों बेटा तुम मियां बीबी में यह क्या प्रतिदिन लड़ाई रहा करती है परमेश्वरी का ऐसा बुरास्वभाव है कि कभी भूल-कर भी ससुराल की बात मुझसे नहीं कहती दुनियां जहान कीं बेटियों का दस्तूर होता है कि ससुराल की ज़रा ज़रा सी बात माओंसे कहाकरतीहैं नहीं मालूम इसको क्या पर-मेश्वर की मार है बहुतेरा पूछ २ अपना मुंह थकाओ परन्तु

क्या जिकिरकि यह कुछ भी बताये परन्तु टोला मुहल्ला की बात कानों कान पहुंच जाती है ऊपरी लोगों से मैं भी घर बैठे २ सुना करती हैं परमेश्वरीदत्त ने सास से यह बात सुनकर थोड़ी देर सोच किया और लज्जा के मारे उत्तर मुंह से न निकलता था परन्तु इसने सोचा कि बहुत काल के पीछे ऐसा समय मिला है और अब इन्होंने छेड़कर पूंछा है सो ऐसे समय में चुप रहना उचित नहीं है बेहतर है कि जन्मभर का ज़हर उगल डालिये कदाचित् आज की बात बीत में आगे के वास्ते कोई बात निकल आये यह सोच विचार कर परमेश्वरीदत्त ने शर्माते २ कहा आपकी लड़की मौजूद है इन्हीं से पूछिये हमारे यहां इनको क्या क्लेश पहुंचा था खातिरदारी में कौनसी कमी हुई या कोई इनसे लड़ा या किसने इनको बुरा कहा इनको मालूम है घर में हम गिनती के आदमी हैं हमारे मा से तो तमाम मुहल्ला वाक़िफ़ है कि ऐसी नेक हैं कि तमाम उमर उनको किसी से लड़ने का संयोग नहीं हुआ अगर उनको कोई दुष बात कड़ी भी कहलावे तो चुप हो जाती हैं अम्बिकादत्त दिनभर लिखने पढ़ने में लगा रहता है सुबह का निकला रात को घर आता है खाया और सो रहा मैंने उसको इनसे कभी बात करते नहीं देखा यमुना इनकी सूरत से डरती है रहा मैं सो मौजूद बैठा हूं जो शिकायत मुझसे हो बेधड़क कहें परमेश्वरीदत्त की सास अब बेटी की तरफ़ देखकर बोली हां भाई जो कुछ तेरे दिल में हो तू भी साफ २ कह दे बात का रहना मन में अच्छा नहीं होता मन में रखने से क्लेश बढ़ता है झगड़ा होता है परमेश्वरी अगर्चि झूठ बोलने पर बहुत ढीठ थी परन्तु उस समय परमेश्वरीदत्त के रूबरू कोई बात कहते न बन पड़ी और जीही जी में डर रही थी कि मैंने बहुत सी झूठी बातें मा से आ के लगाई हैं ऐसा न हो कहीं इस समय खुल जावें यह सोच समझ उसने इस बात ही को टाल दिया और कहा तो यह कहा कि हम तो अलग घर करेंगी परमेश्वरी की माता ने दामाद से कहा क्यों भाई तुमको अलग होकर रहने में क्या उज़र है परमेश्वर की दया

सेतुमआपनौकर हो आपकमातेहो किसी बातमेंमातापिता के मुहताजनहीं अपना खाना अपना पहनना फिर दूसरेका मुहताजहोकररहनाक्या प्रयोजन बेटाबहू कैसीही प्यारीहो फिरभी जो आराम अलगरहनेमें है मा बाप के घरकहां जो चाहासो खाया जोचाहासो पकाया और जरा समझने की बातहै मा बापके संगरहकर खाओकमाओ फिरभी नामनहीं लोग क्याजाने तुम अपनाखातेहो या माता पिताके शिरपड़े हो परमेश्वरीदत्तने कहा सुखकीजो पूछतीहोतो जोसुख कि अब हमकोप्राप्त है अलगहुये पीछे उसकी क़दरमालूमहोगी दोनोंवक्त पकी पकाई खाली और बे फ़िक्रि होकर बैठ रहे अलगहोनेपर आटादाल नमक मसालातरकारी कंडालकड़ी सब का शोच करना पड़ेगा आपही शोचिये कि गृहस्थी में कितनेबखेड़े हैं बे प्रयोजन इनसब बखेड़ों को अपने शिरपर लेना मेरे नजदीक तो बुद्धि की बातनहीं यहबात कि जो चाहा सो खाया और जोचाहा सो पकाया अबभी प्राप्त है इन्हींसेपूछिये किकभीकोई फ़र्मायश कीहै किजोनहींहुईबड़े कुनबोंमें अलबत्ता इसप्रकारका झगड़ा हुआ करता है एकको दिलमीठे चावलोंकोचाहताहै दूसरेकोभूनीखिचड़ीचाहिये तीसरेकोपुलावदरकारहै चौथेकोदहीबड़ेखानामंजूरहैपांचवें को परहेजी खाना वैद्यने बताया दश के वास्ते दश बटलोई रोज के रोज कहां से आयें हमारे यहां कुनबा कौन बहुत बड़ाहै कि ये फ़र्मायश किसी चीजकीकरें और वह पूरी न कीजाय इसकोभी जानेदीजिये अगरइनको फ़र्मायश करनेमें ऐसीही लज्जा आतीहै तो आप खाने पकवाने का बन्दोबस्त कियाकरें खुदहमारीमाभी कईबार इससे कहचुकीहैं इनसे पूछियेकहाहै यानहीं और नामको जो आपने फ़र्माया यह भी मेरेनजदीक बुद्धिकीबात नहीं अपनेसुखसे कामहै लोग जोचाहेंसोअपने दिलोंमेंसमझें और यहभीमानाकिलोगोंने भी समझाकि हममाता पिताके शिरपड़े हैं तो इसमेंहमारी कौन बेइज़्ज़ती है माता पिताने हमकोपाला परवरिशकिया

खिलाया पहनाया पढ़ाया लिखाया शादी ब्याह किया इन सब बातों में बेइज़्ज़ती नहीं हुई अब कौनसा सुरख़ाब का पर हम में लगगया है कि उनके आधीन होना हमारी बेइज़्ज़ती समझी जावे सासने जवाब दिया कि अगर सब लोग तुम्हारे प्रकार समझा करें तो क्यों अलग हों संसार का यही दस्तूर होता चला आया है और होता चला जायगा कि बेटे माता पितासे अलग होजाते हैं और मैं तो जानती हूं कि जगत में कोई बहू ऐसी न होगी कि जिसका स्वामी कमाऊ हो और वह सासनन्दों में रहना अंगीकार करे परमेश्वरीदत्तने कहा यह आपका कहना दुरुस्त है अगर बेटे माता पिता से अलग न हुआ करते तो शहर में इतने घर कहां से आते परन्तु हरएक की दशा जुदी है अलग होकर रहना मेरे नज़दीक उचित नहीं दशरुपये का तो मैं नौकर इतनी आमदनी में अलग घर सम्हालना बहुत कठिन है और फिर इस नौकरी का भी भरोसा नहीं अलग हुये पीछे अगर नौकरी जाती रही तो फिर बाप के घर आना मुझको अतिकठिन गुज़रेगा उससमय अलबत्ता बेइज़्ज़ती होगी लोग कहेंगे कि मियां अलग तो होगये थे फिर झखमारके बापके टुकड़ों पर आपड़े लोगों की रीस इस मामले में ठीक नहीं अपनी दशा पर आप विचार करना चाहिये वह नक़ल आपने सुनी है एक शख़्सने बाज़ार से नमक और रुई मोल ली नमक खच्चर पर लादा और रुई गधे पर चलते चलते राह में एक नदी मिली नदी पैराव थी उस शख़्स ने खच्चर और गधे को लदा लदाया पानी में उतार दिया बीच नदी में पहुंचकर खच्चर ने डुबकी लगाई थोड़ी देर पीछे सिर उघारा तो गधेने पूछा क्यों यार खच्चर यह तुमने क्या किया खच्चरने जवाब दिया कि भाई तुम्हारे तो बड़े भाग हैं तुमपर रुई लदी है इसका बोझ तो बहुत हलका होता है मुझ अभागे पर तो नमक है बोझके मारे मेरी कमर कटकर लोहूलुहान होगई है यह हमारा मालिक ऐसा बेदर्द है कि इसको हमारे दुःख का ध्यान नहीं अनाप शनाप जितना चाहता है लाद लेता है मैंने समझा कि मंज़िल तक पहुं-

चते २ कमर जाती रहेगी आवो डुबकी लगावो नमकपानी में भीजकर कुछतो गलजायगा जिसक़दर हलके हुये बेहतर होगा मालिक बहुत करेगा चार डंडे मारलेगा सो योंही रास्तेभरमें डंडे खाते आताहूं देखो अब मेरा बोझा आधा रहगयाहै गधे बुद्धिहीननेभी खच्चरकी रीसकरके डुबकी लगाईरुई भीगकर और भारी होगई घिरडघारा तो हिला न जाताथा खच्चरहंसा और कहा क्योंभाई गधेक्याहालहै गधे ने कहा यार मैंतो मराजाताहूं खच्चरने कहा अयनासमझ तूने मेरी रीस तो की परन्तु इतना तो समझ लेता कि मेरी पीठपररुईहै नमकतो नहींहैं अस्मानान ऐसा न हो लोगोंकी रीस करने से मेरा हालभी उस गधे कासा हो सासने कहा भाई तुमतो किसी से हारनेवाले नहीं मैंतो सीधीबात यह समझतीहूं कि दशरुपया महीना तुमकमातेहो परमेश्वरकी कृपाहैसस्तासमयहै बालनहीं बच्चानहीं भगवानदयारक्खेतुम दोनोंमियांबीबी अच्छीतरहसे रोटीदालखाओनैनसुखतंजेब पहनो आगेकाशोच तुम्हारीतरह लोगकियाकरें तो संसार का कामबन्दहोजाय नौकरीतो नौकरी जीनेका भरोसानहीं जै दिनजीनाहैहंसीखुशीमें टेरकरदेनाचाहियेपरमेश्वरीदत्त नेकहा यहीतो मैंभी शोचताहूं खुशीअलग होकर रहनेमें है या साथमें सासने कहा हुज्जत दलील से क्या प्रयोजन सीधी बातयही क्यों नहींकहते कि मुझको मासे अलग होनामंजूर नहीं एकबात तुमसे बीबीनेकही उसकेमानने में इतना बड़ा शोचहै और फिरकहतेहो कि हमबीबी की ख़ातिरदारी में कमीनहीं करते आराम सुखवहीहै कि जिसमें बीबीखुशहो इसकेपीछेबातोंमें रंजहोनेलगा परमेश्वरीदत्तनेजवाबदेनाबन्द करदिया जोकि रात अधिकगई थी इसलिये परमेश्वरीदत्त ने मासे कहा अबआप सोइये इसबातको मैं फिरशोचूंगा ये लोग तो सोरहे परन्तु परमेश्वरीदत्त रातभर इसीखयाल के उधेड़बुनमें रहा और मनहीमन में बातें करतारहा सुबह जो उठतोदेखा सरस्वतीझाड़ू देरहीहै बहनोईको देखकर

सरस्वतीने सलामकिया और कहाभाई साहब नहानेकेवास्ते पानी मौजूद है परमेश्वरीदत्त ने नहाया और नित्यनेम से फ़राग़त की सरस्वती चाह बनाकर दो पियालियोंमें लेआई और दो चिमचा और एकतश्तरी में कन्दलाकर सामने परमेश्वरीदत्तके रखदिया परमेश्वरीदत्तने चाहपीतो अच्छे स्वाद और अच्छी बू बासकीथी जिसको पीकरचित्त बहुत प्रसन्न हुआ परमेश्वरी उस वक़्ततक अपने स्वभावके अनुसार पड़ी सोतीथी परमेश्वरीदत्तने सासबे कहा आपभी सुबहउठने की ताकीद कीजिये सासनेकहा बेटायह अपनीनानी की बहुत चहेती है उनकेप्यार दुलारने इनका मिज़ाज और इनका स्वभावसब ख़राबकरदिया जबयहछोटीथी औरमैं किसीबात पर घुड़क बैठतीथी तो कई २ दिनतक मुझसे बोलना छोड़देती और यहतो क्या ताक़तथी कि परमेश्वरी को कोई हाथ लगावे परमेश्वरी बात२ परहठकरती चीज़ोंको तोड़तीफोड़ती परंतु उनकेडरकेमारे कोई कुछकहन सक्ता था इसी बात पर परमेश्वरीके बापसे रोज बिगाड़ रहताथा जब परमेश्वरीदत्त बिदाहोनेलगा चलते चलते सासने कहा कि बेटा रात की बातयादरखना और उसका जरूर कुछबन्दोबास्तकरना रास्ताभरपरमेश्वरीदत्त उसबातको शोचताआया घरमें पहुंचातो माने देखाकि परमेश्वरीदत्त के चेहरेपर उदासी छाई हुईहै माताने समझा कि यह ज़रूर ससुराल में लड़ा है परमेश्वरीदत्तसे कहाकि आख़िरतूने मेराकहना न कियापरमेश्वरीदत्तने कहा कि अम्मा भगवान की सौगन्द लड़ाईभिड़ाई कुछ नहीं हुई माने कहा फिरसुस्त क्यों है परमेश्वरीदत्त ने जवाबदिया कुछभी नहीं सोता उठकर आयाहूं इसकारण शायद आपको मेरा चेहरा उदास मालूमहोता होगामाने कहा लड़केहोघरमें आक्या तुझको सोताउठकर कभीथोड़ाही देखाहै सचबता क्या बातहै परमेश्वरीदत्त ने लाचार होकर रातकी तमाम कहानीमाताको सुनाई सुनतेके साथहीमाता को काटो तो लोहू नहीं था परंतु वह स्त्री बड़ी बुद्धिमान थी

कहनेलगी अगर्चि मेरी इच्छा यहथी कि जबतक मेरे दममें दमहै तुमसबको अपने कलेजे से लगायेरक्खूं और तुम दोनों भाईमिल चुलकररहो परंतु मैं देखतीहूं तो सामान उलटे२ नज़र आते हैं ले आजमैं तुझसे कहतीहूं कि व्याहके दूसरे महीनें से तेरीबीबीका इरादा अलग घर करनेका है तू जो दस रुपये महीने के महीने लाकर मुझको देता है उसको बहुतबुरा मालूम होता है रातदिन मैं बहूके सहेलियों से सुनतीरहती हूं कि बहू मुहल्ला तोपदरवाज़े में मकान लेगी यमुना को साथ लेजायगी जब तक यह सब लड़कियां इकट्ठी बैठीरहतीहैं यही ज़िकिर यहीबातें आपस में रहा करतीहैं मैंने एक बार तुम्हारी मौसियासासके मुंहपरयह बातकहदी थीकिअगरबहूहमारेसाथ रहनानहींचाहती तो अपनाखाना कपड़ा अलगकरले और इसीघरमेंरहे परन्तु तुम्हारी मौसिया सास से मालूम हुआ कि यह बहू को मंजूर नहीं आदमी व्याह खुशी व आराम के लिये करता है रोजकी लड़ाई प्रति दिनका झगड़ा निहायत बुरीबातहै अगर तुम्हारी बीबी को यहीमंजूरहै और अलगरहनेसे उसकोखुशीहै तोमुझको उ-ज़रनहीं जहां रहोखुशव आबादरहो परमेश्वरने एक मासता संतानकीहमारेपीछे लगादी है सोकभीतुम इधरको निकले एक नज़रदेखलिया सबरआगया घरकेकाम धंधासेकभीछुट-कारामिलातोमैंआप चलीगई तुमकोदेखआई यहकहनाथा कि परमेश्वरीदत्तका जीभरआया और बेअख्तियार रोनाशु-रूअकिया और यहसमझाकिआजमातासेजुदाईहोतीहैमाता भी रोई थोड़ीदेर पीछे परमेश्वरीदत्तने कहा कि मैंतो अलग नहीं रहूंगा बीबीरहैयाजाय मानेकहा अरेबेटा यहभी कहा होतीहै अशराफ़ों में कहीं बीबीमियांभी छूटेहैं तुमको अपनी उमर इन्हींके साथ काटनीहै हमारा क्याहै हममरनेके नज़-दीक पहुंच चुकीहैं आज मरे कलदूसरा दिनहै मेरी सलाह मानौ तो जोयह कहेसो करो हमने जिसदिन तुम्हाराव्याह किया उसीदिनसे तुमको अलगसमझा तुम अनोखे बेटे न मैं

अनोखीमा कौनबटा अपनीमाके साथ रहाहै परमेश्वरीदत्त ने अपने मित्रोंसभी सलाह पूंछी सबने यही कहा झगड़ारफ़ा करनाबेहतरहै और साथरहनेपरक्यामात।पितासे अलगरहो परन्तु उनकी खिदमत् और ताबेदारी करो जबसब लोगोंने यही सलाह दी तो परमेश्वरीदत्त ने मनमें सोचा कि अलग रहकरभी देखलो अगर यह स्त्री सम्हलजाय और घरको घर समझे बदमिजाजी बदज़बानी छोड़दे तो अलग रहना ऐब व गुनाह नहीं यही न कि गृहस्थी की फ़िकर करनी पड़गी और तंगी से गुजरेगी सो संसार में रहकर फ़िकरसे किसी सूरत छुटकारानहीं है अबभी कुछचिन्ता नहींहै यहरोजका झगड़ा तो कितना बड़ा क्लेश है और रोजी का अंदेशा भी बेजा है जितनीहोती तकदीरमेंहै बहरहाल पहुंचेगीआदमी का उपाय औ तदबीर को इसमें क्या दखल है यह सोचकर परमेश्वरीदत्तने अलग होजानेका इरादा पक्काकर लिया संयोगसे इसीके मा बापके मकान के पास एक घरभी खाली था एक रुपया माहवारी किरायापर उसको ठहरा लिया बल्कि दरवाजे में कुफ़ल देकर सरखत भी लिखदिया और ससुरालमें कहलाभेजा कि मकान लेलियाहै अबआओ तोनये घरमें चलें और माता पिता सेभी कह दिया कि यही गंधी वाला मकान लेलियाहै मात।ने जितना असबाब बहूकाथा कपड़ोंकी संदूक बरतन बिछौना मसहरीपलंग सबएक अलहदा कोठरीमें रखवादिया शाम को बहूभी आपहुंची सवेरे उठ माताने कोठरी खोल परमेश्वरी दत्तसे कहा कि लोभाई अपनी चीजें तुम दोनों मियां बीबी खूब देखभाल लो परमेश्वरीदत्तने कहा अम्मा तुम यह क्या कहती हो क्या ये चीजें कोई ग़ैरजगहथीं माताने कहा बेटा यहबात नहीं है ऐसा नहो उठाने बैठाने में कोईबस्तु इधरकी उधर होजाय और कहारीसेकहाकि तुमसब येअसबाब गन्धीवाले घरमेंपहुंचा दो इतनेमें परमेश्वरी की सब सहेलियां भी आ पहुंची बात की बात में सब असबाब नये घरमें पहुंच गया परमेश्वरी

बहुत आनन्दसे नयेघरमें आकर बसीतीनदिन तक दोनोंवक्त परमेश्वरी दत्तकी माताने पूरी तरकारी खानेको भेजी चौथे दिन परमेश्वरी दत्तने बीबी से कहाकी साहब अब कुछ खाने का बन्दोबस्त शुरूअ़हो बीबीने जवाबदिया सबअसबाब अभी बेठिकानेपडाहै यह रखजायेतो फराग़त से हंडियां चूल्हेको देखूं अभी तो मुझको सावकाश नहीं गरज सात दिन तक बाजारसे पूरी मिठाई मंगवाते और दोनोंमियां बीबी खालेते परमेश्वरी दत्तने आखिर रोज़ २ तकाजा करके बीबीसे खाना पकवाया बीबीने कभी खाना पकाया न था रोटी पकाई तो अजब सूरत की न गोल न चौखुटी एक कान इधर निकला हुआ और चारकान उधरकिनारे मोटे बीचमें टिकियाकहीं जलीकहीं धुयेंमें काली और दाल जो पकाई तो पानीअलग दाल अलग गरज बीबी ने ऐसा अच्छा खाना पकाती थी कि जिसको देखकर भूख भाग जाय दो एक दिन तो परमेश्वरी दत्तने सबरकिया आखिरको उसने अपनी माके घरका खाना शुरूअ करदिया बीबी ने भी अपने आराम का टिकाना कर लिया दोनोंवक्त बाजारसे कचौरियां पूरी बरफ़ी मलाईमंगा- कर खालियाकरती थी खाना जो पकता भोंदूकुंजड़ेकी बेटी चुनियां और बखुशगन्धीकी लड़की जुल्फ़न वगैरह खालेतीं परंतु दशरुपये महीने में यह चखौतियां क्योंकर होसक्ती हैं चुपके चुपके असबाब बिकने लगा परमेश्वरी दत्त को इसकी खबर भी न हुई एक दिन परमेश्वरीदत्त नौकरी पर गया था बीबी दो पहरको सोगई थी चुनियां कुंजड़िन आआई उसने देखा बहू बेखबर सोरही है उसने अपने भाई पीरूको खबर करदी वह बड़ाचोर और बदमाशथा बहूतो सोतेकी सोती रही पीरू आकर दिन धारे तमाम बरतन चुरा कर लेगया बहू उठी तो देखा घरमें भाडूदी हुई है कोठरी में तालालगा हुआ था उसका असबाब तो बचा बाक़ी जो चीज़ ऊपर थी एक २ करके चोर लेगया था अब पानी पीनेतक को गिलास न रहाथा परमेश्वरीदत्त नौकरीपरसे आया तो सुनकर बहुत

उदास हुआ परंतु अब पछताये क्याहोताहै चिड़या चुनगई खेत बीबीसे खूबलड़ा और खूबपिटापीटा आखिर ते धोकर बैठरहा कर्ज दाम करके हलकी हलकी दो डेगचियां मोल लाया छोटे बरतन मासे मांगलिये परात तवा ताली मास ने भेज दी गरज इसी प्रकार काम चल निकला संयोग से एक कुटनी भी उनदिनों इस शहरमें आई थी और तमाम शहर में उसका गुल था परमेश्वरीदत्त ने भी बीबीसे कह दिया था कि अजनबी स्त्रीको घरमें मत आनेदेना इनदिनों एक कुटनी आईहुईहै कईघरोंको लूटचुकीहै परंतु बीबी निहायत मूर्ख और ना समझ थी उसकी प्रकृतिथी हरएकसे जल्दमिलजाना एकदिन वही कुटनी भगतिनका भेषबनाये उसगलीमें आई यह भगतिन मूर्ख स्त्रियोंके बहलाने के हेतु अनेकप्रकार की वस्तें और बहुतसी दवायें अपने पासरखती थी गलीमें आकर जो इसने अपनी दूकान खोली तो बहुतसी लड़कियां इकट्ठा होगईं परमेश्वरीने भी सुना चुनियां कुंजड़िनसे कहा जबभगतिन गली से उठने लगे तो यहां लिवालाना हम भी उसकी चीजोंको देखेंगी चुनियां जाखड़ीहुई और भगतिनको लिवा लाई परमेश्वरीने बहुत आवभगत से भगतिन को पास बिठलाया और सब वस्तेंदेखीं सुरमा व संगयशबकीतख्ती परमेश्वरी ने पसंदकी भगतिनने परमेश्वरी को बातोंमें टाललिया कि यह स्त्री ढब पर जल्द चढ़ जायगी एक पैसा का बहुत सुरमा तौलदिया और दोआने को संगयशब की तख्ती दी और फीरोजेकी अंगूठी मुफ़्तदी परमेश्वरी रीझगई भगतिन ने समुद्र का हाल द्वारिकापुरी और रामेश्वर और जगन्नाथ की कैफ़ियत और दिल से जोड़कर दो चार बातें ऐसी की कि परमेश्वरी ने बहुत प्रीतिसे सुनी भगतिनने पूछा कि क्यों बी तुम्हारे कोई बालबच्चा नहीं परमेश्वरी ने आह खींचकर कहा कि हमारे ऐसे भाग कहां थे भगतिनने पूछा ब्याहको कितने दिन हुये परमेश्वरी ने कहा कि अभी बर्ष दिन भी नहीं हुआ परमेश्वरी के अज्ञानता था अब तो भगतिन को

निश्चयहुआ और दिलमें कहने लगी इसने संतान का नाम सुनकर ऐसी आह खींची जैसे कोई वर्षों का उम्मेदवार हो भगतिनने कहा ना उम्मेदीकी बात नहीं है तुम्हारे तो इतने बच्चे होंगे कि तुम सम्हाल न सकोगी अलबत्ता इससमय अकेले घरमें जी घबड़ाता होगा फिर भगतिन ने पूछा मियांका क्या हालहै परमेश्वरी ने कहा सदा मुझसे नाराज रहा करते हैं ग़रज पहिलेही मुलाक़ातमें परमेश्वरी नेभगतिनसे ऐसी बेतकल्लुफ़ी की कि हाल बिलकुल उससे कह दिया भगतिन ने बातों २ में तमाम भेद मालूम कर लिया एक पहर भगतिन बैठी रही इसके पीछे बिदा होनेलगी परमेश्वरी ने चिरौरी की और कहा भगतिन अब कब आओगी भगतिन ने कहा कि मेरी भानजी चौकमें एक घरमें ब्याहीहै इनदिनों बहुत क्लेशितहै उसकी बीमारी की ख़बर सुनकर मथुरासे इलाज करनेके हेतु आईहूं उसके दवा दरमनसे मुझको फुरसतकम होतीहै तिसपर भी अगर परमेश्वर ने चाहा तो दूसरेतीसरे आन तुमको देखजायाकरूंगी अगले दिन भगतिन फिर आ मौजूदहुई और एक रेशमी इज़ारबन्द लेतीआई परमेश्वरी दूरसे भगतिन को आतेदेख आनन्द होगई और पूछा इज़ारबंद कैसा है भगतिन ने कहा बिकाऊ है परमेश्वरी ने पूछा कितनेका है भगतिनने कहा चारआनेका चौकमें एक महाजनकी स्त्री रहती है उसका पुरुष मरगया है अकेलीहै और अब गरीबहोगईहै असबाब बेंच२ कर गुज़र करतीहै बहुत चीजें मैं उनकी बेंचवादिया करतीहूं परमेश्वरी इतना सस्ता देखकर लोटहोगई तुरंत पैसे निकाल भगतिनके हाथ दिये और बहुत गिड़गिड़ा कर कहा कि जो अच्छी वस्तु बिकाऊ हुआ करे पहिले मुझको दिखालिया करो भगतिन ने कहा बहुतअच्छा पहिले तुम पीछे और उसके पीछे इधरकी बातें हुआ कीं चलते हुये भगतिन ने एक बटुआ निकाल उसमें एक डबियाथी डबिया के अन्दर काग़ज़ की पुड़िया में थोड़ी लौंगें थीं उनमें से दो लौंग परमेश्वरी को दी और कहा कि

संसार में प्रीति इसी हेतु हुआ करती है कि एकको दूसरे से लाभहोवे लोंगे मैं तुमको देतीहूं एक तो तुम अपनी चोटीमें बांधलो दूसरी बेहतर या कि तुम्हारे खामीके पगड़ीमें रहती तुम्हारे स्वामी कदाचित् संदेहकरें खैरतकियेमें सींदो और उनका प्रभाव आजही से देख लेना परंतु इतनी एहतियात करना कि पाक साफ़ जगह में रहे और अपने डोलके मुवा-फ़िक एक तागा मुझको नापदो मैं तुमको एक गंडा बनवा लादूंगी जबमैं द्वारिकापुरीकोगईथी तो उसजहाज़ पर जिस परमैंचढ़ीथी जैपुर नगरीकी रानीभी सवारथी शायद तुमनें उनका नाम भी सुनाहो गंगारानी उनका नाम था सब कुछ उनको परमेश्वरनेदे रक्खा था धनकी कुछगिनती न थी नौकर चाकर लौंडी गुलाम पालकी नालकी सभी कुछ था एक तो संतान न होनेसे उदास रहा करती थीं दूसरे राजा जी को उनकी कुछप्रीति नथी शायद पुत्र न होनेके कारण कुछप्रीति न करतेहों लेकिन रानी रूपस्वरूपमें चांद सूर्य्य के समान थी और इससुन्दरताई और धनपर मिजाज ऐसा सादा कि हम ऐसे नाचीजोंको बराबर बैठाना और बात पूछना रानीको फ़-कीरोंसे बहुतप्रीति थी एकदफ़ा सुना कि तीन कोसपर उनके घरसे कोई फ़क़ीर आयाहै अपने घरसे उठकर नंगेपांव उसके पास रातको गईं और पहरभर तक हाथजोड़े खड़ीरहीं एक मर्तबा जोशाहजीने आंखउठाकरदेखा कहा जामाई रातको हुक्समिलेगा रातको रानीने सपने में देखा कि कोई कहता है कि द्वारिकापुरी में जाओ वहांसे मुराद मिलेगी सबेरे से उठकर रानी ने द्वारिका जाने की तैयारी शुरूअ की यहां से गरीबों को अपने पाससे खाना और किरायो सवारी का देकर अपने साथ लेगई उनमेंसे एक मैंभीथी हरघड़ीकेपास रहने से रानी मुझपर बहुतदयाकरनेलगी और सहेली कहा करती थी किनारे समुद्रके जब पहुंची जहाज़ किराये किया और सब सवारहोकर द्वारकापुरीमें पहुंचे द्वारकापुरीमें सब मन्दिरों की रानीने सबसमेत दर्शनकिया और बड़ाभण्डारा

किया थोड़े दिन पीछे सुना कि द्वारिकापुरी से दशकोश पर एक ऊंचे टीलेपर एकयोगी रहता है जो गयासुरादि लेकर आया सो रानीभी पांच सहेलियों सहित कि जिसमें से एक मैंभी थी उसटीलेके ओर रवानाहुई जबउस टीलेके नजदीक पहुंची तो देखा कि चारों ओर झाड़ी झंखार है और बहुत अच्छी सुगन्ध उसमेंसे आरही है जब चलते २ टीलेपर पहुंची तो देखा कि योगी अकेले एकगड़हेमें रहतेहैं बहुत अच्छा स्वरूपहै योगीने हमसबको देखकर आशीर्वाद दिया और रानीको बारह लौंगे फूंक कर दीं और मुझसे कहा चलीजा मथुरा आगरेमें लौंगोंका काम बनायाकर बेटीउन बारह लौंगों मेंसे ये दो लौंगेहैं द्वारिकापुरी का तीर्थयात्रा करके रानी रामेश्वरके दर्शनको गई और वहांसेजगन्नाथजी के दर्शनकरके घरकी ओर लौटीं तो राजा या तो रानीकी बात न पूछतेथे या यहनौबत हुई कि एक महीने आगे से आकर प्रयागमें पड़ेथे ज्योंही रानीप्रयाग में पहुंची राजा ने रानीके कदमोंपर शिर रखदिया और रानीसे रो २ कर अपराध क्षमाकराया और घरकोलेगये छःवर्षतक मैंरानीकेपास रही इसबीचमें योगीकेआशीर्वादसे लगातार ऊपर तलेचार बेटे मेरे रहनेतक रानीके होचुकेथे फिर मुझको अपना देश याद आया रानीसे छुट्टी मांगी रानी ने बहुतसा रोका मैंने कहा योगी ने मथुरा आगराके लोगोंकी टहल वो सेवा मेरे सिपुर्द की है इसलिये मुझे वहांजाना अवश्यहै यह सुनकर रानीने लाचार मुझको बिदा किया और चार लौंग दीं यह कहानी सुनकर परमेश्वरी तन मन से भगतिन की मुअतक़िद होगई भगतिन तो लौंगे देकर बिदा हुई परमेश्वरी ने नहाकर कपड़े बदलकर सुगन्धलगा एकलौंग तो परमेश्वर का नामलेकर अपनी चोटीमें बांधी और मियांके पलंग की चादर और तकियोंका ग़िलाफ़बदल एकलौंग किसीतकिये में सींदी परमेश्वरीदत्त जोघरमेंआया तो बीबीकोदेखा साफ़ सुथरेपलंगकी चादर बेकहे बदली है खुशहुआ और प्यारसे

बात करनेलगा बीबीने कहा देखो आजहमने एक चीजमोली है यह कहकर इजारबन्द दिखाया परमेश्वरीदत्तने कहा कितनेका लिया है बीबीने कहा तुम आंको कितनेका है वह इजारबन्द खासलाहौरका बनाहुआथा निहायत अच्छा था कलाबतून के गुच्छे दोनों किनारे लगेहुये थे परमेश्वरीदत्त ने कहा दोरुपये से किसीप्रकार कम नहींहै बीबीनेकहा चार आने को लियाहै परमेश्वरीदने कहा सचकहो बीवी ने कहा तुम्हारे शिरकी सौगन्ध चारही आनेकोलियाहै परमेश्वरी ने कहा एकभगतिन बड़ी नेकहै बहुतदिनोंसे इसगलीमें आया करती थी किसी महाजनकी स्त्रीकाहै वह बेचनेको लाई थी यह कहकर सुरमा व संगयशव की तखुती फीरोजा कीअंगूठी परमेश्वरी ने दिखाई लालच ऐसी बुरी बला है कि बड़ा सयाना आदमी भी इससे धोखा खाजाता है जंगली जानवर मैंना तोता लाल बुलबुल आदमीकी शकलसे भागतेहैं तुरंत दाने केलालच से जालमें फंसजाते हैं और जन्मभर पिंजड़े में कैद रहतेहैं इसीतरह परमेश्वरीदत्तभी अपना लाभ देखकर आनन्दहुआ फिरपरमेश्वरीनेकहाकिवह भगतिन महाजनकी स्त्रीकीसंपूर्णवस्तु जोबिकने निकलेगी मेरे पास लानेका वादा करगईहै परमेश्वरीदत्त ने कहा अवश्य देखना चाहिये परंतु ऐसानहो कि चोरीकामाल हो पीछे खराबी होय और भगतिन कोई ठगनीनहो परमेश्वरी ने कहा कि भगवान २ करो भगतिन ऐसी नहीं है परमेश्वरीदत्त से जो आज ऐसी बातें हुईं उसको बीबी को लोगोंपर विश्वास होगया दूसरे दिन चुनिया कुंजड़िनको भेज भगतिन को बुलवाया आज परमेश्वरी बेटीबेनी और भगतिन को माता बनाया रातके समय परमेश्वरीदत्तसे फिर भगतिन का चर्चा हुआ तब परमेश्वरी दत्तनेकहा कि देखो होशियाररहना इसभेषमें दूतियां और ठगनियां बहुत हुआ करतीहैं परंतु लालचने परमेश्वरी दत्तकी बुद्धिपर ऐसापर्दा डालदियाथा कि इतनी मोटीबात उसनेन समझी कि दोरुपयेका माल चारआने को कोई बेप्रयोजन

देताहै परमेश्वरीदत्तको उचितथा कि उसभगतिनके आनेको मनाकरदेता और सबवस्तु उसकी फिरवादेता परमेश्वरीको तो इतनाज्ञानही नहीं था कि इसबातको समझती कई दिन पीछे परमेश्वरी ने भगतिन से पूंछा क्यों भगतिन आज कलह के ईवस्तु नहींलाती भगतिनने जानलिया कि इसको अच्छी चाटलगगई है कहा तुम्ह ढबकी कोई वस्तु मिलेतो लाऊं कईदिन पीछे झूठेमोतियोंकी एकजोड़ीलाई और कहालो बीबी ये महाजन की स्त्रीके नथके मोतीहैं ननानों हजार की जोड़ीहै या पांचसौकी रामदयाल जौहरीको मैंने दिखाई थी दोसौमेरेरुपये पल्ले बांधे देताथा मैं महाजनकी स्त्रीसे पचास रुपयेपर लाईहूं तुमलेलो फिर ऐसासच्चामाल नमिलेगा परमेश्वरीने कहा पचासरुपये तो मेरेपास नहींहैं भगतिननेकहा क्याहुआ बेटी पहुंचियां बेचकर लेलोनहींतो आजये मोती बिकजांयगे भगतिनने इसढबसेकहा कि परमेश्वरी तुरंतगहने का संदूक उठालाई और पहुंचियां निकाल भगतिन कोदीं भगतिन ने परमेश्वरी का गहना देखकर कहा कि अयहय कैसी बुरी तरह गहना मुलीगाजर के समान डाल रक्खा है बेटी धुकधुकी में डोरा डलवाओ बाली पत्ते मगर मुरकियां बाजूबन्द मैले चीकट होगये हैं मैल सोनेको खाये जाता है इनको उजलवाओ परमेश्वरीने कहाकौनडोरा डलवावै कौन उजला करालाये उनसेकहतीहूं तो कहतेहैं मुझे सावकाश नहीं भगतिनने कहा जईबेटी कौनबड़ा कामहै मोतीगहने दो अभी मैं डोरा डलवालाऊं और जो गहना मैला है मुझे निकालदो मैं अभी उजलवादूं परमेश्वरीने सब गहना सौंपि दिया भगतिनने कहा सुंगियामहरीको भी मेरेसाथ करदो वह सुनारके पास बैठी रहैगी मैं पटुवासे डोरी डलवाऊंगा परमेश्वरीने का अच्छा यह कहकर सुंगिया को आवाजदी वह आईतो भगतिनने कहा मेरे साथचल सुनार की दूकान परबैठी रहियो भगतिनने गहनालिया सुंगिया साथहुई गली से बाहर निकल भगतिनने रूमालखोला और सुंगियासेकहा

लाओ उजलवाने को अलग करके और हीरा डलवाने को अलग गहनेको अलगकरते २ भगतिन बोलीअयेनाककी लौंग कहांहै मुंगियाबोली इसीमें होगी जराभरकी तोचोजहै इस पोटलीमें देखो फिर आपहीआप बोली अय हय पानदान के ढकनेपर रहगईहै अरी मुंगिया दौड़ियो जल्दीसे लेआ मुं-गिया भागी २ आई और दरवाजे में से चिल्लाई बीबी नाक की लौंग पानदान के ढकनेपर रहगई है भगतिन ने मांगी है जल्दीदो भगतिन गलीके नुक्कड़पर मोहनबनिये की दूकानके आगे बैठीहै यहकहना था कि परमेश्वरी का माथा ठनका मुंगियासे कहा बावलीहुईहै कैसी लौंग मेरेपास कभी तूने देखी है अरी जल्दीदौड़ कहीं भगतिन चली न जाय मुंगिया उलटेपाओं दौड़ीगई भगतिनको इधरदेखा उधर देखाकहीं पता नथा परमेश्वरीसेआकरकहा बी भगतिन कातोकहींपता नहींबाजा तक देखआई इतनी देरमें नहीं मालूम कहां गुम होगईयहसुनकर परमेश्वरीकहनेलगीहाय मैंलुटगई हायमैं लुटगईअरेलोगो परमेश्वरकेलिये दौड़ियो चौकतक लोगदौड़े वहांजाकर प्रकटहुआ किकहींसेबहतीबहाती महीनेभरसे कियरायेपर आकर रही चारदिनसे मकानछोड़ चलीगई अब क्या होसक्ताथा परमेश्वरीदत्त ने आकरसुना शिरपीटा और जोडू से कहा अरी तू घरको मटिया मेल करके छोड़ेगी मैं तुझको पहिलेसे जानताहूं जोडूने कहा चल दूरहो अबबात बनाने खड़ा हुआ इजारबंद देखकर तूने आय मुझसे नहीं कहा कि हां महाजन की स्त्रीका सबअसबाब अवश्यदेखना इस विधिसे अच्छे प्रकार की लड़ाई दोनों स्त्री पुरुष में हुई तमाम मुहल्ला इकट्ठाहोगया बात २ पर चली तो प्रकटहुआ कि इसीभगतिन ने कंधारीबाजारसे लालागुलजारीमल की जोडूका तमाम गहना इसबहानेसे ठगलिया कि एक फकीर से टूना करालादूंगी रानी कटरामें जवाहरमल महाजनकी बेटीसे ऐसीप्रीतिबढ़ाई कि उसका गहना संगतीके बहाने से उड़ालेगई गहनातो इस प्रकार पर गया बरतन पहले चोरी

जाचुकेथे हजाररुपये की मोतियोंकी जोड़ीजो लोगोंने देखी सो तीनपैसेकीथी घानामें दूतिका हुई लोगोंने बहुत ढूंढ़ा भगतिनका पता नमिला परमेश्वरीके दहेजमें जो कपड़े मिले थे अब उनका हाल सुनिये जब तक परमेश्वरी सास के साथ रही सास हमसें पंद्रहवें दिन निकालकर धूपदे दिया करती थी शुरूअ् बरसात में परमेश्वरी अलग हो कर रही कपड़ों का संदूक जिस कोठरी में जिस प्रकार रक्खा गया था तमाम बरसात गुजरगई उसी विधि रक्खा रहा जाड़े के शुरूअ् में दुलाईकी जरूरत हुई और संदूक खोला गया बहुतसे कपड़ों को दीमक चाटगईथी चूहोंने काट २ वगारें डालदिये थे कोई कपड़ा साबित नहीं बचनेपाया जोलड़कियां छुटपनमेंलाड़दुला-रसें रहाकरतीहैं और गुनढंग नहीं सीखतीं परमेश्वरीकीतर-हयोंजन्मभरक्लेश और दुखभोगतीहैं परमेश्वरीकाहालजितना तुमनेपढ़ाउससे तुमकोप्रगटहुआ होगा कि परमेश्वरीकीमाता औरनानी के लाड़ने उसको जन्मभर कैसे क्लेशमें रक्खा लड़क पनमें परमेश्वरीने न तो कोई गुणसीखा नकुछ उसके मिजाज की दुरुस्तीहुई जब परमेश्वरीने साससे अलगहोकर घरकिया बरतनभांड़ा वस्त्र आभूषण सबकुछ उसकेपासथा परंतुगृहस्थी करनेका ढंग नहीं जानती थी थोड़े दिनमें तमाम असबाब साल भिट्टीमें मिलादिया और एकहीवर्षमें हाथकान सेनंगी रहगई अगर परमेश्वरीदत्त भी उसकी तरह बुद्धि हीन और बदमिजाज होतातो शायदएकदूसरेसे जुदाईहोजाती परंतु परमेश्वरीदत्त ने नीतिबुद्धि और भलमंसी को बरता॥

सरस्वती का वृत्तान्त॥

अबसरस्वतीका वृत्तान्तसुनो वहपुत्रीउसघरानेमें ऐसीथीजैसे बागमें गुलाबका फूल यामनुष्यके शरीरमें नेत्र हर एकप्रका-रका गुण और ढंग उसकोप्राप्त था बुद्धिगुण धैर्यताज सब बात परमेश्वरने सरस्वती को दीथी लड़कपन से उसकोखेलकूद औरहंसी औरछेड़से नफ़रत थीपढ़ना याघरकाकार्य करना अथवाउसको किसी नेप्रयोजन नकतेया किसीसे लड़ते नहीं

दखा महल्ले कीजितनी स्त्रियांथीं सबइसको पुत्रीकेसमानजानती थीं क्या अच्छेभाग्य उसमाता पिताके थे जिसकीबेटी सरस्वतीथी और क्या अच्छेनसीब उसघरके जिसमें सरस्वती बहुवन करजाने वालीथी अबपरमेश्वर कीकृपा सेसरस्वती कीअवस्था तेरहवर्ष कीहुईबाततो इसकीअम्बिकादत्त सेठहरी ठहराई थीअब चर्चाहोनेलगा किमहीना और दिन ठहर जावें उधर अम्बिकादत्तकी माता परमेश्वरी के ढंगदेख इतना डर गईथी मसलहै किदूधका जलामट्ठाफूंकरपीताहै परमेश्वरीकीसूरतस बदनपर रोगदेखड़ होतेथेइसलिये अम्बिकादत्तकी माताका इरादाथा कि छोटेलड़केकी मंगनीदूसरे घरमेंकरूं परमेश्वरी दत्तको किसीप्रकार यहबात मालूमहुई इसने मातासे कहा अम्मा मैंने सुना है कि तुम अम्बिका दत्त की मंगनी छुड़ाया चाहती हो माता ने कहा क्या बताऊं बेटा बड़े सोच में हूं क्या करूं क्या न करूं तुमसे मेरीआंख सामनेनहीं होती मुझको परमेश्वरने तुम्हारा अपराधी बना दिया देखिये अम्बिका दत्तके भाग्य कैसेहैं परमेश्वरीदत्तने कहा अम्मा परमेश्वर की सौगन्ध सरस्वती हजार लड़कियोंमेंसे एकहै जन्म भर दीवा लेकर ढूढ़ोंगीतो सरस्वती की सी बहू न पाओगी गुण रूप दोनों परमेश्वरने उसको दिये हैं कुछ डर न करके ब्याह कर डालो और उसकी बड़ीबहिनपर ध्यानमतकरो हरएक का स्वभाव और एक की प्रकृति अलग २ होती है ब्याहके बाद तुमको मेरी बातका विश्वास हो जायगा परमेश्वरीदत्त ने जो बहुतसी स्तुति सरस्वतीकी कीतो उसकीमाता राजीहोगई और जो मंगनी पहिले ठहरीथी वहपक्की होगई गरज दोनों समधियानोंके सलाहसे यहबात ठहरी कि फागुणसुदी दशमीको ब्याह होजावे सरस्वती का बाप देवीदत्त कांगड़े के जिलअमें तहसीलदारथा उसकोचिट्ठी भेजीगई चिट्ठीकेपहुंचनेसे वहबहुत आनन्दहुआ क्योंकि सरस्वतीको सब बच्चोंमें बहुत जानताथा परंतु छुट्टीकी अर्जीभेजीतो छुट्टीनहीं मिली छुट्टी न मिलनेसे बहुतउदास हुआ परंतु क्याकरता चुपहोकर

बैठरहा और अपने बड़े बेटे ईश्वरीदत्तको पांचसौरुपये देकर घर बिदाकिया घरपर गहना वस्त्र बरतन सबपहलेसे मौजूद था घरपर पहुंचकर चावलघी गेहूं मसाला नमक और वस्तु ईश्वरीदत्तने मोललो ब्याहकीतैयारी होनेलगी माताका इरादाथा कि सरस्वती की बड़ीबहिनसे वह चढ़कर दहेज मिले जोड़े भी इसकेभारी हों गहनेके अददभी अधिक हों बरतन भी दहेजके गहये २ दियेजांय सरस्वती तो उसीघर में रहती थी जो बातहोती उसकोअवश्य मालूमहोजाती जबसरस्वती ने सुनाकि मुझकोदीदीसे अधिकदहेज मिलनेवालाहै अज्ञानी लड़कीहोती तो प्रसन्नहोती पर सरस्वतीको दुःख हुआ और इसचिन्तामें हुई कि किस प्रकारसे माताको मना करूं अन्त को जयजयवन्ती अपनी मौसेरी बहिनसे खिसियाते २ कहा कि मैंने ऐसा २ सुना है मुझको इसकाबड़ासोच लगाहै कई दिनसे बड़ी चिन्तामें थी कि परमेश्वर क्या करूं अच्छा हुआ तुमआगईं हमजोलीके कारण तुमसे कहती हूं संकोच नहीं कोईअम्माको इतनीबात समझादे कि मुझको दीदीसेअधिक दहेजनदे जयजयवन्तीने सुनकर कहातुमतो कोईतमाशे की स्त्रीहो वही कहावत है गधेको लोनदिया उसने कहा मेरी आंखें दुखती हैं भगवान दिखवाता है तुम क्यों इनकार करो सरस्वतीने कहा तुमदीवानी हो इसमें कईबुराइयांहैं दीदीके स्वभावसे तुमवाकिफहो उनकोजरूर रंजहोगा नाहकमातासे बदमजगी होगी मुझसे भी उनको बदगुमानी होगी जयजयवन्तीनेकहा बुवाइसमें रंजकी क्या बातहै अपना २ भाग्य है और समझनेको तरह२की बातेंहैं बादशाहीके उनको क्या २ नहीं दियागया उसकी कसरइधर समझलें सरस्वती ने कहा सचहै परंतु नामतो दहेजकाहै कि छोटेको अधिक मिलेगा तो बड़ेको रंजहोगा एक महल्लेका रहना रोजका मिलना मिलाना जिसबातसे दिलोंमें फर्कपड़े क्यों होजाय जयजयवन्ती ने कहा बहिननाहक तुमअपनी हानि करतीहो अजी महीने दोमहीनेमें सबभूल बिसरजायगी सरस्वतीने कहा अरीबहिन

भगवान२ करो हानि लाभ कैसा कहीं माता पिताके देनेसे पूरी पड़तीहै या दहेजसे जन्मकटताहै परमेश्वर अपनी कृपासे दे तुम इसबातमें हठमत करो नहीं मैं कुछ दूसरा यत्न करूं मुझको किसी प्रकार मंजूर नहीं है गरज़ कि थोड़े अरसे में सरस्वतीकी माताके कानतक यहबात पहुंचगई और वह भी कुछसोच समझ अपनेइरादे से बाज़ रही और मनमें कहने लगी देनेके सौठवहैं दूसरीजगह समझलूंगी गरजकि फागुन सुदी दशमीको व्याहहोगया ईश्वरीदत्त अकेलेने अच्छे विधि बहिनका व्याहकिया और बराती सबराजी और प्रसन्नरहे जबसरस्वतीके बिदाका समयपहुंचा सबपर सदलाथा माता तो सरस्वतीके वियोगसे बेसुधि होगई थी बिरादरी की बहू बेटियोंको यहदशाथी कि सरस्वतीको गले लगा२ करतीती थीं और सबकेमनसे आशीर्वाद निकलताथा सरस्वतीइनसब आशीर्वादोंका बड़ाभारी दहेजलेकर ससुरालमें पहुंची स-सुरालकी जो रीति वरस्मथी वहससुरालमें हुई आगेचलकर तुमकोमालूम होगा कि सरस्वतीने गृहस्थीको किसविधि से सम्हारकिया क्या मुशकिलें उसके आगेआईं और उसनेअपनी बुद्धिसे क्योंकर उसको दफ़ा किया जरा सरस्वती के बरताव को परमेश्वरीके बरतावसेमिलाना चाहियेकि सरस्वती माता को दूसरी बेटी और सासकी दूसरी बहू थी दोनों ओर की अर्मान परमेश्वरीके व्याह में निकलचुके थे परमेश्वरी सोलह वर्षकी व्याहीगई थी और सरस्वती व्याहके समय पूरे तेरह वर्षकी न थी जब परमेश्वरीका व्याहहुआ उसकादूलह पर-मेश्वरीदत्त दशरुपये का नौकर था और सरस्वती का दूलह अम्बिकादत्त अभीपढ़ताथा अम्बिकादत्त परमेश्वरीदत्त के ब-निस्बत कमदूल्ह कामअक्लथा परमेश्वरीको दो वर्षतक बाल बच्चोंके बखेड़े से छुट्टीरही और सरस्वतीको परमेश्वरने व्याह के दूसरेवर्ष छोटोसी अवस्थामें माताबनादिया पस सरस्वती की दशा परमेश्वरीके सामने अच्छी न थी परन्तु सरस्वती को छुटपन से तालीमहुई थी रोज़ बरोज़ घर में बरकत विशेष

होतीजाती थी यहांतक कि परमेश्वरीका नामभी कोईनहीं जानता और कंधारी बाजारमें सरस्वती का वहमहलखड़ा है कि आकाश से बातें करता है सांधीटोले में वह ऊंचा मन्दिर जिसमें हौज व कुआं है सरस्वती का बनवाया हुआ है प्रयागमें एकधर्मशाला इसीसरस्वतीका बनवायाहुआ है जिसमें दोसौ अभ्यागत संन्यासीको भोजन मिलताहै काशी में एक पाठशाला संस्कृत की बनवाई है जिसमें विद्यार्थियों को भोजन वस्त्र पुस्तक पाटी मिलतीहैं जबईश्वरीदत्त ने अपने बापको इत्तिलाकी कि परमेश्वरकी कृपासे विधिपूर्वकसरस्वतीका बिवाहहोगया तो बापने परमेश्वर का धन्यवादकिया परन्तु बेटी की जुदाईका रंज बहुतदिन तक रहा सरस्वती के ब्याह होने पीछे उसके पिता देवीदत्तने जो चिट्ठी उसको लिखी वह चिट्ठी भी देखने योग्य है॥

चिट्ठी देवीदत्त की॥

स्वस्ति श्रीचिरंजीविनी बेटीसरस्वतीको देवीदत्तका आशीर्वाद तुम्हारेभाई ईश्वरीदत्तकी चिट्ठीसे समाचार तुम्हारेबिदा होनेका मालूमहुआ वर्षों से यह अभिलाषा मेरेहृदयमेंथी कि यह काम मैं अपनेहाथ से करूं परन्तु हाकिम ने छुट्टी नदी इस वजहसे लाचारहुआ यहबात तुमको मालूमहोगी कि सबबच्चों से अधिक मुझको तुमसेप्रीतिहै यह प्रीति इस कारणसे थी कि तुमने अपनीसेवा और टहलसे आपमेरेऔर सबकेजीमें जगह करलीथी आठवर्षके सिनमें तुमने मेरेंघरका कुलबोझा अपनेशिरपर उठारक्खा था मुझको सदा यहबात प्रगटहोती रही कि तुम्हारेसबबसे तुम्हारी माताको बड़ीनिश्चिन्ती और सुखप्राप्त था जबकभी इसअर्सेमें मुझको घरजाने का संयोगहुआ तुम्हारा बन्दोबस्त देखकर सदामेराजी प्रसन्नहुआ अब तुम्हारेबिदा होजानेसे ऐसीहानिहुई किउस का बदला शायद इसजन्म में नहींमिलसका परमेश्वर तुमको इसका अच्छा फल देवे और उस सेवा करने के बदले में तुम पर मेरे आशीर्वादों का प्रभाव प्रगटहो ईश्वरीदत्त की

चिट्ठी से मुझको यह भी मालूम हुआ कि तुमने परमेश्वरी से अधिक दहेज नहीं लेनाचाहा इससे तुम्हारी बड़ी आली हिम्मती साबित होती है मैं उसका बदला भेजता हूं वह यह चिट्ठी है इसको तुम दस्तूरुल्अमल के समान अपने पास रक्खो इन शिक्षों पर साधना करो कि जो इस चिट्ठी में लिखोहैं तो हरएक क्लेश तुम पर सहजहोगा और सदासुख से टेर करोगी समझना चाहिये कि ब्याह क्या चीजहै ब्याह सिर्फ़ यही बात नहीं है कि रंगीन कपड़े पहने और मेह-मान जमाहुये और वस्त्र और भूषण दान दहेज पाया बल्कि ब्याहसे नई सृष्टिहोतीहै नये लोगों से मामिला करना नये घरमें रहना पड़ताहै जिसप्रकार पहले पहल बछड़ों पर जुआ रक्खा जाताहै आदमी के बछड़ों का जुआ ब्याह है ब्याहके पीछे लड़की जोरू बनती लड़का खसम बना इसके यही अर्थ हैं कि दोनोंको पकड़कर संसाररूपी गाड़ीमें जोतदिया अब यह गाड़ी मरने तक इनको खींचनी पड़ेगी पस बेहतर है कि मनको दृढ़करके भारी बोझ को उठावैं और जन्मके दिन जितनेहों इज्जत आबरू बनाव मेलसे काट दियेजांय वरना लड़ाई भिड़ाई झगड़े बखेड़े गुलगपाड़ा से संसारकी मुसीबत और भी अधिक क्लेश देने वाली होती है अब तुमको अय मेरी दुलारी बेटी सोचना चाहिये कि स्त्री पुरुषमें परमेश्वर ने कितना अन्तर रक्खा है स्त्री को परमेश्वर ने अवश्य पुरुषके आनन्द के हेतु उत्पन्न कियाहै स्त्री को चाहिये कि पुरुष को प्रसन्न रखना अफ़सोस है कि संसारमें कैमी कम स्त्रियां इस फर्जको पूरा करती हैं मर्दों का दर्जा परमेश्वर ने स्त्रियों पर ज्यादा किया न सिर्फ़ ज़बानी हुक्म देनेसे बल्कि मर्दों के शरीर में अधिक बल और उनकी बुद्धि में अधिक प्रकाश है संसारका बंदोबस्त पुरुषों के ज्ञानसे होता है पुरुष कमाने वाले और स्त्रियां उनकी कमाईको अच्छे प्रकारसे बर्तनेवाली और उसकी निगहबान है कुनबा समान नौकाके है और पुरुष उसके मल्लाह हैं अगर मल्लाह न होतौ नौका पानीकी

लहरोंमें डूबजायगी या किसी किनारेपर टक्कर खाकर फट पड़े कुनबा में अगर पुरुष वंदोवस्त करनेवाला नहीं तो उसमें अनेक प्रकारकी खराबियां पड़सक्ती हैं कभी नहीं खयाल करना चाहिये कि संसार में सुख और धन सम्पति से प्राप्त होता है अगर्चि इसमें भी संदेह नहीं है कि दौलत अकसर सुखका कारणहोती है परंतु बहुत बड़े ऊंचे घरोंमें भी लड़ाई और झगड़े हम अधिक पाते हैं पस गृहस्थी में सुख केवल हेलमेल से होता है ग़रीब आदमियों को हम देखते हैं जिनकी आमदनी बहुत थोड़ी है दिनको मेहनत मज़दूरी से जीविका पैदा करते हैं रात को सब मिलकर दाल रोटी से अपना २ पेट भरलेते और एक दूसरे के साथ खुश रहते हैं निःसंदेह ये लोग आपस के मेल जोल के कारण दाल रोटी और गाढ़े धोतर में अधिक सुखसे रहते हैं बनिस्बत उन राजों और रानियोंसे जो रात दिनकी लड़ाई झगड़े में क्रोध से रहतेहैं अयमेरीप्यारी बेटी मेलमिलाप को गनीमत जानो अबदेखना चाहिये कि हेलमेल किन बातोंसे पैदा होता है सो न सिर्फ़ इसबात से कि स्त्री अपने पति से प्रेमकरे वल्कि प्रेमकेसिवाय उसको पतिकाअदब भी करना अवश्य है बड़ी नासमझी है जो स्त्रीपतिको अपने समान समझें इस समय में स्त्रियोंने ऐसाबुरा दस्तूर अंगीकारकिया है कि जिसवक्तचन्द सहेलीआपसमें बैठकरबातेंकरतीहैं तोबहुधा यहबात होती है कि फ़लानीकापति उसकेसाथ इसप्रकारका बरतावरखता है एक कहतीहै किमैंने यहांतक उनको दबायाहै कि क्या ताक़तजो मेरी बातको काटैं और उलट कर उत्तर दें दूसरी बड़ाई मारती है जब तक घड़ियों चिरौरी न करें मैं खाना नहीं खाती तीसरी यह कहती हैं दशबार पूछते हैं तब मैं एक उत्तर मुशकिल से देतीहूं चौथी डींगको लेती है वह आप पहरों नीचे बैठे रहें परन्तु बन्दी को पलंग से उतरना सौगन्ध है पांचवीं कहती है की जो मेरी ज़बान से निकलता है उसको पूराकराकर रहती हूं शादी ब्याह में दोने

टाटके भी इसी हेतु से निकाले हैं कि मियां ताबेदार रहें कहीं तो जूतीपरका काजलपारकर मियांके लगाया जाता है इसका प्रयोजन यह है कि जन्मभर जूतियां खाता रहै और चूं न करे कहीं नहातेवक्त अंगूठेके तले बीड़ा रक्खा जाता है और मियांको खिलाया जाता है कि पैरोंपड़ता रहै इनबातों से साफ़ प्रगट है कि स्त्रियां पुरुषों का दर्जा और अखतियार कमकरनेपर रहती हैं लेकिन यह तालीम बहुत बुरी है इसका नतीजा बहुधा अच्छा नहीं होता पुरुषों को परमेश्वर ने सिंह बनादिया है अगर दबाव और ज़बरदस्ती से कोई स्त्री इनको बस किया चाहे तो मुशकिल नहीं बहुत सहज उपाय इनको बसमें करने का खुशामद व ताबेदारी है जो ना समझ स्त्री अपना दबाव डालकर पुरुष को बस करना चाहती हैं वह धोखाखाती है और आदि से बीज बिरोधका बोती हैं और फल उसका अवश्यक्लेश और दुःख होगा गोकि वह इसबात को अभी नहीं समझती सरस्वती मेरीसलाह यह है कि तुम बातचीत उठने बैठनेमें भी अपने पतिका अदब और लिहाज रखना क्या सबब है कि शादी ब्याह इन्हीं चाहोंसे होता है और चार दिन पीछे बहू से सास नन्दों का बिगाड़ शुरूअ होजाता है यह बातभी शोचनेके योग्य है ब्याहके पहले लड़-का मा बापमें रहा और सिर्फ़ उन्हींके साथ उसको वास्ता था मा बापने उसको पाला और यह अभिलाष करते रहे कि बुढ़ा-पेमें हमारे काम आवेगा ब्याहके पीछे बहू डोलीसे उतरते ही शोच करने लगती है कि मियां आजही मा बापको छोड़ दें इसलिये लड़ाई सदा बहुओं के तर्फ़से शुरूअ होती है अगर बहू कुनबे में मिलकर रहे और कभी सासको यह न मालूम हो कि यह बेटेको हमसे छुड़ाना चाहती है तो कदाचित् झगड़ा न पैदा हो यह तो सबकोई जानते हैं कि ब्याहकेपीछे मा बापसे वास्ता थोड़े दिनका है आखिर घर अलग होगा स्त्री पुरुष जुदा होकर रहेंगे संसार में यही होता आया है परन्तु नहीं मालूम कम [illegible] की बेसबरी

होती है कि जोकुछ होनाहो इसीसमय होजाय बहूओंमेंएक
ऐब चुगली का होता है जिससे ज्यादा झगड़ा होता है वो
यह है कि ससुराल की तनिक २ बात आकर मा से कहा
करती हैं और मायें आप खोद २ कर पूंछाकरतीहैं परन्तु
इसकहने और पूंछनेसे सिवाय इसके कि लड़ाइयांपड़ें और
झगड़ेखड़े हों कुछ प्राप्तनहीं होता बाज़ बहू इसप्रकार की
होतीहैं कि ससुराल का कैसाही अच्छाखाना और कैसाही
अच्छाकपड़ा न उनकोमिले पर उनकी आंखतले नहींआता
ऐसी बातों से पतिके चित्तको दुःखहोता है सरस्वती इस से
तुमको बहुतबचाव चाहिये और ससुरालके हरएक वस्तुका
आदर करना चाहिये और तुमको सदा भोजन करके वस्त्र
पहिनकरकेखुशी ज़ाहिर करना चाहिये जिससे मालूम हो
कि तुमने पसन्दकिया ससुरालमें नई दुलहिनको इसबात का
ध्यानरखना चाहिये कि बेदिलीसे वहां न रहै अगर्चि जान
पहचान न होनेके सबबसे अलबत्ता दूसरे लोगों में जी नहीं
लगता है परंतु जीको समझाना चाहिये न यहकि रोती
गई वहां रहीतो रोतीरही जानेमें देरनहींहुईकि मैंकेजाने
का तक़ाज़ाशुरूअ हुआ बातचीतमें दर्जा औसतका खयाल
रखना चाहिये यानी न इतना कि खुद आपहीआप बकती
रहे न इतना कि बिलकुल चुपचाप होजावे बहुत बकने का
अंजाम दुःखहोताहै जब रातदिन हज़ारों प्रकार की चर्चा
होगी नहीं मालूम किसज़िकिर में क्या बात मुंहसे निकल
जाय व इतनी कमगोई भी न चाहिये कि बोलने के वास्ते
लोग खुशामद करें ज़िद व हठ किसी बातपर नहीं चाहिये
जो बात तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ भी हो उसे उठा रक्खो
कि वह दूसरे समय बतौर मुनासिब तै होसक्ती है फ़र्मा-
यश किसी चीज़ की नहीं करना चाहिये फ़र्मायश करने से
आदमी नज़रों से उतर जाताहै और उसकी बात हेठी हो-
जाती है जो काम सास ननदें करतीहैं तुमको अपने हाथों से
करने में आर न करना चाहिये छोटों पर कृपा बड़ों का अदब

हर एक के मनको प्यारे लगने का बड़ा सुघर यत्न है अपना कोई काम दूसरों के सिर नहीं रखना चाहिये और अपनी कोई वस्तु बेखबरी से न पड़ी रखनी चाहिये कि दूसरे उसको उठावेंगे जब दो मनुष्य चुपके २ बातें करें उनसे अलग हो-जाना चाहिये पर इसकी चिन्ताभी मतकरो कि यह आपस में क्या कहते थे और अदबदाय यह भी मतसमझो कि कुछ हमाराही चर्चा था अपना सुआमिला आदमी से अदबलि-हाजके साथ रक्खो जिनलोगों में बहुत ज्यादा मिलाप और ब्यौहार होजाता है उसी प्रकार उसमें रंज भी जल्द होने लगताहै मैं जानताहूं कि तुम दिनरात में बे प्रयोजनभी इस चिट्ठीको कमसेकमएकबेर पढ़लियाकरो कि उसका मतलब याद रहे बाप की चिट्ठी पाकर सरस्वती के जीमें एक ऐसी उमग प्रीतिकी उठी कि बे अखतियार रोनेको जीचाहा प-रन्तु नईव्याहीहुईथी ससुरालमें रो नसकी और बापकी चिट्ठी नेत्रोंसे लगाकर यत्नसे पुस्तक में धरली और नित्य उसचिट्ठी को पढ़ा करती और अर्थ पर चिन्तवन किया करती जबतक सरस्वती बे व्याही हुई रही तो उसकाजी बहुत घबरातताथा इसलिये कि अचानक माताका भवन छोड़नये आश्रम और नये मनुष्यों में रहनापड़ा यह तोकाम काज करने में अति चतुर और बुद्धिमानथी और बे काम काजके इसको एकघड़ी चैन न थी या महीनों कोठरी में चुप चाप बैठना पड़ा माता पिता के घर में जो इत्यादि प्राप्त थे वह बाकी नहीं रहे यहां ससुराल में आतेही इसकी सब बातों को लोग देखने और ताड़ने लगे कोई मुंह देखताहै कोई चोटी कीलम्बान नापता है कोई डील के उठान को ताड़ताहै कोई गहना टटोलता है कोई बस्त्र देखताहै खाती है तो कौर पर नजर है कि कौर कितना बड़ालिया मुंह कितनाखोला क्योंकर चबाया किस-प्रकार निगला उठती है तो देखते हैं कि दुपट्टा किस बिधि ओढ़ा चलती किस प्रकारसे है सोती तो समयपर नजर है किसवक्त सोई और कब उठी अर्थात सब हरकात इसकी न-

जरके सामने थीं ऐसे हालमें सरस्वतीको बहुतक्लेश होताथा परन्तु यह बहुत बुद्धिमान और चतुर थी ऐसी कड़ी परीक्षा मेंभी पूरी निकली और सब बातें इसकी ससुराल वालों को भाईं बातकी तो न इतनी विशेष कि लोगकहें कैसी लड़की है चारदिन की ब्याहीने किस बलाकी बकर लगा रक्खी है न बचन इतने कम कहे कि लोग कहें अहंकार है भोजन किया तो न इतना अधिक कि टोलेमहल्ले में चर्चाहोन ऐसा कम कि सास ननदकोशिर थकाकर बैठरहे सोई तो न इतना सबेरे कि दीपक में बत्ती पड़ी पलंगपर चढ़ी और न इतनी देरतक कि लोग कहें कि पुरुषों कोभी इसने मात कियाहै सदाकी यह रीति है कि नई दुलहिनको महल्ले की लड़कियां घेरे रहाकरती हैं सरस्वतीके पासभी जब देखो दशपांच मौजूद हैं परन्तु सरस्वतीने किससे खुसलियत पैदा न की अगर कोई लड़की दिनभर बैठी रहगई तो यह न कहना कि अपने घरजाओ अगर कोई न आई तो उससे यह न पूंछा कि तुम कहां थी क्योंनहीं आई सरस्वती के इस प्रकार की भेट मिलापसे धीरे२ लड़कियोंका जमघटा होना कमहोगया बहुधा महल्ले की कमीनों की लड़कियां तो चाट की आशनाहुई थीं जब उन्होंने देखा कि न तो पान मिलता है न कुछ सौदे सुलफ़ का ज़िकिर है तो छः सातदिन पीछे उन्हों ने आना जाना छोड़ दिया सरस्वती ने पहिले यमुना अपनी नन्द से प्रीति बढ़ाई यमुना लड़किनी थी थोड़ेही स्नेहमें चेरी होगई दिनभर सरस्वती के ढिग घुसी रहा करती थी बल्कि माता किसी समय कह भी उठती कि इस भावज पर इतनी दयाल क्योंहो बड़ी भावजके तोतुम सायासे भागतीफिरतीथी यमुना इसका उत्तर देती वहतो हमको मारती थी हमारी छोटी भावजहमको प्यारकरती हैं यमुनाके मेलसे सरस्वतीने अपना अच्छे प्रकारसे कार्यनिकाला पहले तो सबघरका हालबल्कि तमामकुनबे और महल्ले का हालयमुनासे पूंछ२ करमालूम किया और जोबात आदिमें लाज और संकोचसे आप नहीं

कहसकीथी यमुनाके वसीले कहाकरती थी सरस्वती ने घरके
काममें सहज२ इसप्रकार दखलदेना आरम्भकिया कि सांझ
समय यमुनासे रुई मंगाकर दीपककी बत्तियां बटदिया क-
रती तरकारी बनालेती यमुना का फटा उधड़ा कपड़ा सीं
देतीसास और स्वामीके लिये पान बना देती धीरे २ रसोई
तक जाती और लक्ष्मी मिश्रायनको छौंक बघारमें सलाह देने
लगी यहां तककि सरस्वतीके रायपर रसोई बननेलगी जब से
सरस्वती ने रसोईं में दखल देना आरम्भ किया घर वालों ने
जानाकि रसोईभी कोई पदार्थहैफिरतो यहहाल होगयाकि
जिसदिन सरस्वती किसीकारण सेलक्ष्मी मिश्रायन कोसलाह
कार न होती तोभोजन मेंस्वाद किसीको मालूमनहींहोता
सास बहुओंकी लड़ाईकुछ मामूली बातहै सरस्वती यों लड़ने
के योग्य न थी तोउसका गुणविरुद्ध काकारण हुआलक्ष्मीमि-
श्रायनइस घरमें अगुआकारथी किसब कार्योंकाभार उसपर
घासौदासुलफ़कपड़ा अनाजजोकुछबाजार सेआतासबलक्ष्मी
मिश्रायन के हाथोंआता गहना तकबनवाकर लाती रुपयाकी
जोज़रूरत होतीतो लक्ष्मी मिश्रायनके आढ़तसे आता गरज
कि लक्ष्मी मिश्रायन पुरुषों के प्रकार इस घर का बन्दोबस्त
करतीथी जब सरस्वती ने रसोईमें दखलदिया लक्ष्मी मिश्रा-
यनका यत्नसे द्रव्यदेना जाहिरहोने लगा एकदिन उरद की
पिट्ठीके बड़े बनरहेथे और सरस्वती रसोईमें बैठीहुई लक्ष्मी
मिश्रायनको बताती जाती थी जब बड़े बनचुके और दहीमें
उसको डालनाचाहा पर जोदही हंडियामें रक्खाथा उसको
सरस्वती ने देखातो वह बिगड़गया था इस कारण कि कई
दिनका बासीथा नीलापानी अलग और दही की फुटकियां
अलग होगईथी सरस्वतीनेकहा अयहययह कैसाबुरा दही
हैयह दही बड़ों में डालनेके योग्यनहीं मिश्रायन बेगजाओ
दोआने का दही बाजारसे लेआओ लक्ष्मीमिश्रायनने कहा
दुल्हिन पावभर पीठीके बड़ोंमें दोआनेका दहीवहीमसल
है कि ऊंटकेमुंहमें जीरा यहदही जो तुमने नापसन्द किया

चारआनेका है सरस्वती बोली कि हमारेघर प्रतिदिन दही केवड़े पकते रहाकरतेथे पावभर पीठीके बड़ोंमें एकआने का दहीपड़ताथा इस लेखेसेतो मेंने एकआनेका अधिकमंगाया लच्छी मिश्रायनने कहा तुम अपनेमहल्ले का हिसाब किताब अलग रहनेदो भलाकहां कंधारीबाज़ार कहां रानी कटरा जो वस्तु रानी कटरेमें एकपैसेको मिलती है वह यहां एक आनेकोभी नहीं मिलती यहखाक धूलमिला मुहल्लातोउजड़ नगरी सूनादेशहै सदा सब वस्तुका तोड़ाहरचीजका काल रहता है जोकि खानेमें देर होती थी सरस्वती यह सुनकर चुपहोरही और मिश्रायनसे कहा अच्छा जितनेको मिलता है जल्दलावो परंतु सरस्वतीऐसीभोली नथी कि मिश्रायनकी बातको सत्य समझती अपने मनमें कहनेलगी अवश्यदालमें कुछ कालाहै दमड़ीछदामका फर्कहो तोहो परंतु यहगज़ब है कि एकनगरके दोमहल्ले में दुगुने चौगुनेका फर्कहो उस समयसे सरस्वती भी ताकमेंहुई दूसरेदिन लच्छी पानलाईतो सरस्वतीने देखकर कहा कि मिश्रायन तुमतो बिलकुल हरे पत्ते उठालाईहो इसमेंनकुछ स्वादमिलताहै न लज्जतमिलती है अनजाड़ेकी अवाई है करारे पक्के २ पान ढूंढ़कर लाया करो मिश्रायन बोली पक्के पान तो पैसे के दो आते हैं और यहां परमेश्वर रक्खे आधी ढोली रोज़ का खर्च है इस वास्ते मैं नये पानलातीहूं इतनेमें सरस्वतीके घरसे रामकली मिश्रायन सरस्वतीकी खबरलेनेको आई सरस्वतीने अपने मैके की मिश्रायन से पूंछा क्यों मिश्रायन आज कल तुमको कैसे पानमिलतेहैं रामकलीने कहा पैसेके सोलह सरस्वतीने संदू-कचा खोल दो पैसे उसकेहाथ दिये और कहा कि इसीमहल्ले के पनवाड़ीसे दो पैसेके पान लेआओ रामकलीमिश्रायनबड़े२ पक्के चालीसपान लेआई सरस्वतीने कहा यहां रानीकटरे के बनिस्वत भी पैसेपीछे चारपान अधिक मिले रामकली मि-श्रायन ने कहा बेटी यह महल्ला शहरका फाटक है अनाज, पान, घी, दही, यहसब वस्तें इस महल्ले में सस्ती मिलती हैं

पुराने पान चालीस मिले अगर नये लेती तो अस्सी मिलते सरस्वतीने कहा। यह लक्ष्मी मिश्रायन तो सब वस्तु में यों हो आग लगाती है रामकली तुम दो चार दिन यहां रहो। मैं अम्मा से कहला भेजूंगी वहां का काम दो चारदिन के लिये और कोई देख भाल लेगा रामकली ने कहा बेटी मैं हाजिर हूं परमेश्वर न करे क्या यहां वहां दो २ घर हैं अर्थात् चारदिन रामकली के हाथों सब प्रकारका सौदा बाजारसे आया हर चीजमें लक्ष्मी मिश्रायन की चोरी साबितहुई परन्तु यहसब बातें इसप्रकारसे हुईं कि सरस्वती की सासको खबरतक न हुई सरस्वतीने जाना या रामकली वा लक्ष्मी ने इसहेत की सरस्वती बहुत सुशील स्वभाव और संकोच की स्त्री थी उसने समझा कि इसबुढ़िया मिश्रायनको बदनाम और रुसवा करनेसे क्या प्रयोजन रातकेसमय भोजनसे सावकाश पा कोठे पर सरस्वती पान खारही थी रामकली मिश्रायन भी पास बैठीहुई थी इतने में लक्ष्मी मिश्रायन आई रामकलीने कहा क्यों लक्ष्मी यह क्या माजराहै चोरीकौन नौकरनहीं करता देखो यह घरवाली मौजूद हैं सातवर्ष तक बराबर इनकी सेवाकी घरकाकारोबार यहसब उठायेहुयेथीं परमेश्वररक्खे अमीरके घर अमीरी खर्च हजारों रुपयेका सौदा इन्हीं हाथों से आयाहकदस्तूरी यह क्योंकर कहूं कि नहींलियाइतनालेन तो हम नौकरों का धर्म है चाहेभगवानबख्शे चाहेमारेपरंतु इससेअधिक पचनहीं सक्ता इससे बढ़कर लेना तो नमकहरामी है लक्ष्मीनेकहा।मेराहाल कौननहीं जानताअबमेरीबला छिपावे हां मैं तो चुराती और लूटती हूं परन्तु न आजसे बल्कि सदामेरा यही कामहै तनिक मेरे हालपरभी तो निगाहकरो कि इसघरमें किस बलाका काम है भीतर बाहर मैं अकेली आदमी चार नौकरों का काममेरे अकेले दमपर पड़ता है फिर बीबी कोई अपनी हड्डियां यों नहीं तोड़ता पण्डिताइन कईबेर मुझको मौकूफभी करचुकीहैं फिर अन्त मुझीको बुलाया समझका फेरहै किसीने यों समझा किसी

ने यों समझा चारके बदले में अकेली हूं चार की तनख्वाह की मुझ अकेली को मिलना चाहिये और वृत्तान्त इस लक्ष्मी मिथ्रायन का इसप्रकारपर है कि यह औरत पच्चीस वर्ष से इसघरमेंहै और सदालूटनेपर उतरूथी एकदिनकी बातहो छिपछिपाजाय नित्य इसका छलछिद्र प्रगटहुआ करताथा कई बार निकालीगई जब मौकूफ़ हुई बनिये बजाज सुनार कुंजड़े जिन २ से इसके मारफ़त उचापत उठतीथी तक़ाज़ा को आ मौजूदहोते थे इसडरके मारे फिर बुलाईजाती थी यों चोरी और सरज़ोरी लक्ष्मी मिथ्रायन के कर्ममें लिखी थी चिताकर लेती और बताकर चुराती और लिखाकर मुकरजाती घरमें आमदनी कमस्वभाव बिगड़ाहुआ खानेमें इस्तियाज़ कपड़े में तकल्लुफ़ सब कारख़ाना उधार परथा और आढ़तलक्ष्मी मिथ्रायनके डौलसेथी खुले ख़ज़ाना कहती थी कि मेरा निकलना कुछ सहज नहीं है घरको नीलाम कराकर निकलोंगी ईंटसे ईंट बजवाकर जाऊंगी सरस्वती ने जो हिसाबकिताबमें रोकटोंक शुरूअकी तौ लक्ष्मी मिथ्रायन सरस्वती की बैरिन होगई और इस यत्न में हुई कि सरस्वती को अम्बिकादत्त और उसकी माता से बुराबनाये परंतु सरस्वती इस भेद से बेख़बर थी बल्कि सरस्वती ने जब देखा कि मिथ्रायन इस घरकी मुख़तार है यह अपने स्वभाव को न छोड़ेगी तो जीमें कहा फिर नाहक की झक २ से क्या प्रयोजन इसलिये रसोईमें जाना और खानेमें दख़ल देनासरस्वतीने छोड़दिया घर वालोंको तो सरस्वतीके हाथकी चाट लगगईथीपहलेही दिनसे मुंह बनानेलगे कोई कहता अयहय तरकारी मुंह में कचर२होतीहै कोईकहता दालमें नमकजहर होगया जबान पर नहीं रक्खी जाती परन्तु सरस्वती से कौन कह सक्ताथा कि तुम रसोई बनाओ लाचार जैसा बुराभला मिथ्रायन भोजन बनाकर रखदेती वहीखाना पड़ताथा एकदिन बरसात के मौसममें बादल घिराहुआ था नन्हीं२ फुहार पड़रहीथीं ठंढीहवाचल रहीथी अम्बिकादत्तने कहा आज तो कढ़ीको

जी चाहता है परंतु इस शर्तसे कि वे पकाने का बंदोबस्तकरें सरस्वती ऊपर कोठके रहा करतीथी उसको खबर नहींकी पतिने कढ़ीकी फ़र्मायश की है घी बेसन दही आदि सामान मियायन लेआई और अम्बिकादत्त से कहा सब सौदा तो मैं ले आई जाऊं बहूजीको बुलालाऊं कोठेपर गई सरस्वती से कढ़ीका कुछ ज़िक्र नहीं किया और उसीतरह उलटे पाओं उतरआई और कहा बहू कहतीहैं कि मेरे शिरमें दर्द है लच्छी मियायनसे मामूली भोजन तो पकानहीं सक्ताथा कढ़ी क्याख़ाक पकाती सब चीज़ोंको सत्यानाश मिलाकर रखदिया किसख़ाहिश से अम्बिका दत्तने फ़र्मायश की थी परन्तु बदमज़ा कढ़ी खाकर बहुत उदासहुआ अटारी परगया तो घरवाली को देखा कि अपना डुपट्टासी रही है जीमें नाखुश हुआ कि ऐं सीने को शिरमें दर्द नहीं और कढ़ी को कहा तो दर्द शिरका बहाना करदिया पहली नाखुशी अम्बिकादत्तको सरस्वती से यही हुई और दस्तूर है कि मियां बीबियोंमें बिगाड़ इसीप्रकार की छोटीछोटी बातोंमें हुआ करता है सो कि छोटी उमरों में ब्याह हो जाता है इस से ज्ञान व बुद्धि न पुरुष में होतीहै न स्त्रीमें अगर ज़रासीबात भी खिलाफ़ मिज़ाजदेखी तो मियां अलगअकड़े बैठे हैं और बीबी अलग मुंह औंधाये लेटीहै जब एक जगहका रहना सहना हुआ तो खिलाफ़ मिज़ाजके छोटी २ बातोंका ज़्यादा होना क्या आश्चर्यहै यही छोटीबातें ख़िलाफ़ मिज़ाज धीरे२ आपस के मेल मिलापमें ख़लल डालती हैं और दोनों तर्फ़से लिहाज़ और पर्दा उठताजाताहै और तमाम उमरजूतियों दालबटती रहतीहै सबसे अच्छा यत्न यह है कि जोरू खसम आदिही से अपना सुआमिला एक दूसरे के साथ साफ़ रक्खें और थोड़े विरुद्ध को भी प्रगट न होने दें क्योंकि यही छोटे२ विरुद्ध जमा होकर बड़े कारण झगड़ा और बिगाड़ के होजाते हैं विरुद्ध के प्रगट न होने देने का यह यत्न है कि जब कोई थोड़ी सी विरुद्ध की बात भी ... जी में न रक्खा

मुंहदरमुंह कहकर साफ़ कर लिया अगर अम्बिकादत्त में बुद्धिहोती और वह इस यत्नको जानता होतातो उस बीबी से बतौर शिकायत पूछता कि क्योंजी ज़रासा काम तुमसे न होसका और दर्द शिरका झूंठ बहाना कर दिया उसी समय दोचार बातोंमें मुआमिला साफ़होजाता और लक्ष्मी मिश्रायनकी चालाकी खुलजाती परंतु अम्बिकादत्त ने मुंह परतो मुहरलगादई और दिलमें शिकायतका दफ़तरखिचला सरस्वतीको अम्बिकादत्तके गुम सुमरहनेसे खटकाहुआ और समझी कि परमेश्वर खैरकरै लड़ाईकी नींवपड़ती नज़रआती है सासकोदेखा तो उनको भी नाराज़ पाया आश्चर्यमें थीकि परमेश्वर यह क्याबातहै अभी यहबात तै नहींहुई कि लक्ष्मी मिश्रायनने एक और वार चलाया याने दिवाली का महीना निकट आया अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायन से कहा कि मकानमें बर्सरोज़ हुआ सफ़ेदी नहींहुई लालाछदामीलालसे से कहोकि जिसप्रकार होसके कहींसे पचास रुपयेदे दिवाली का खर्चाशिरपर चला आताहै मिश्रायन बोली कि छोटीबहू अपने मैके जायंगी मैंने सुना है कि तहसीलदार भी आनेवाले हैं दोनों बेटियोंको बुलावेंगे और मैंने एकजगह यहभी सुना है कि छोटी बहूका इरादाहै कि अपनेबापके साथ पहाड़पर चलीजांय बहू जांयगी तो छोटी साहबजादी भी जांयगीफिर बीबी तुम्हारा अकेला दम है मकान में सफ़ेदी होकर क्या करेगी छदामीलाल कमबख़्त तो ऐसा बशील होगया है कि नित्य उसका ब्राह्मण तक़ाज़े को खड़ा रहता है वह उधार क्योंकर देगा अम्बिकादत्तकी माता यह सुनकर सर्द होगई और सर्द होनेकी बात थी मियांतो जिसदिनसे आगरे गये फिरकरघरकी शकल न देखीछठे महीने बरसवें दिनजीमेंआ-गयातो कुछ भेजदिया वरना कुछ प्रयोजन नहीं परमेश्वरीदत्त मातासेअलगही होचुकाथा सिर्फ़ अम्बिकादत्तकादमघरमेंथा इसकेपीछे घरसूना था अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायनसेपूछा अरी सच बताइयो ज़रूर जायगी मिश्रायनबोली जाने नजाने

की तो परमेश्वर जाने जो सुनाया सो कहदिया अम्बिकादत्त की माताने पूछा अरीकमबख़्त किससेसुना किसबिधि मालूम हुआलक्ष्मी बोली सुननेकी जो पूछोतो रामकली से मैंने दो रुपये उधार मांगे थे उसने कहा मैं देती तो जरूर परंतु पहाड़ पर जाने वाली हूं तब मैंने उससे सब हाल पूछा मालूम हुआ कि सब बात ठीक ठाकहो चुकी है बस इतनीदेर है कि जब तहसीलदार आवें उनके आयेपर चौथे पांचवेंदिन यह सबलोग रवाना होजांय और सुननेपर क्या है परमेश्वर को देखानहीं तो बुद्धिसे पहचाना है बीबी क्या तुमको बहूके रंगोंसे समझनहीं पड़ता देखोपहलेतो बहूघरका कामकाज भी देखती भालती थी अब तो अटारी परसे नीचे उतरना सौगन्ध है चिट्ठी पर चिट्ठी बापके नाम चली जातीहैं सिवाय जाने के ऐसी और कौन सी बात है अम्बिकादत्त की माता यह हाल सुनकर सन्नाटेमें रहगई इसी सोचमें बैठीथी कि अम्बिकादत्त बाहरसे आया उसको पास बुलाकर पूछा कि अम्बिकादत्त मैं एक बात तुझसे पूछती हूं सच २ बतायेगा अम्बिकादत्त ने कहा अम्मा भला ऐसी कौन बात है जो तुमसे छिपाऊंगा अम्बिकादत्त की माताने जो कुछ मिश्रायन से सुनाथा उससे कहा अम्बिकादत्त ने कहा अम्मा परमेश्वर की सौगन्ध मुझको इसकी कुछखबर नहीं न मुझसे इसबात का चर्चा हुआ अम्बिकादत्तकी माता बोली चल झूठे मुझी से बातैं बनाता है इतनी बड़ी बात और तुझको खबर नहीं अम्बिकादत्त ने कहा तुमको बिश्वास नहीं होता तुम्हारे ईश्वर की सौगन्ध मुझे खबरनहीं इतनेमें मिश्रायनभी आ निकली अम्बिकादत्त की माताने कहा क्योंरी लक्ष्मी अम्बिकादत्ततो कहता है मुझको मालूम नहीं मिश्रायन ने कहा लड़के तुम बुरा मानो या भला मानो तुम्हारी बीबी जाने की तैयारियां तो कर रही हैं तुमसे शायद छिपाती हों ये बड़ी बहू न हों कि उसके पेटमें बात नहींसमातीथी यह ऐसीहै किकिसीको अपना भेद न दें अम्बिकादत्तकी माताने पूछा भला अम्बि-

कादत्त जो यह बात सच हो तो तुम्हारा क्या इरादा है अम्बिकादत्त ने कहा भला यह क्योंकर हो सक्ता है कि तुम को अकेला छोड़कर चला जाऊंगा और उनको भी क्या ऐसी जबरदस्ती है कि बेपूंछे गाछेचली जायंगी और मैं आनउनसे पूछोंगा क्योंजी यह कैसी बात अम्बिकादत्तकी माताने कहा कि अभी इस लक्ष्मी के बातका क्याप्रमाण है बहूसे कुछ चर्चा मतकरो जब बात खुल जायगी तब देखाजायगा इसप्रकार की बातोंसे मिश्रायन सरस्वतीको सास और खसम से बुरा बनाने को फ़िकिर में थी और सरस्वती से अगर्चि किसी ने मुंहदरमुंह कुछ कहासुनानहींपरंतुवहभी इनसबकीसूरतसे समझगईथी कि कुछ नाराजगीहै सरस्वती के पासयमुनाबड़ी गोयन्दाथीजरा२सी बात सरस्वतीसेकहती और मिश्रायनकी बदज़ातीसबसरस्वतीपर खुलगईथी परंतु सरस्वती ऐसी बुद्धि-हीनन थी कि तुरन्त बिगड़ बैठती वह इससोचमेंरुईकि इस मुआमिले में कुछ अपनीतरफ़ से कहना सुनना उचित नहीं आख़िर कभीं न कभी यहबात खुलेगी उससमय देखा जा-यगा लक्ष्मी मिश्रायनके शिरपर शामत तो सवार थी तीसरी बार सरस्वती पर उसने और सही किया छदामीलाल की तो आदत थी कि जब कहीं मिश्रायनको अपनेदूकानके सा-मने आतेजाते देखा तो अदबदाकर छेड़ता कि क्यों मिश्रा-यन हमारे हिसाबकिताब कीभी कुछफ़िकिरहै और आठवें सातवेंदिन घरपर तक़ाज़ा कहला भेजता एकदिन मुवाफ़िक मामूलके मिश्रायनसौदेसुलुफ़को बाजारजातीथीछदामीलाल ने टोका मिश्रायन बोली ऐ लाला यह क्यातुमने मुझसेआये दिनकी छेड़खानीलगाई है जबमुझकोदेखतेहोतक़ाज़ा करते हो जिनको देतेहो उनसेमांगो उनपर तक़ाज़ाकरो मैंबेचा-री ग़रीब आदमी टकेकी औक़ात मुझसे और महाजनों के लेनेदेनेसे क्या वास्ता छदामीलालने कहा यहबात तुमनेक्या कही कि मुझसे वास्ता नहीं दूकान से तो तुम लैजाती हो हाथको हाथ पहचानता है हमतो तुमको जानतेहैं और तु-

म्हारी साखपर देतेहैं हम घरवालोंका क्यामाने मिश्रायन ने कहा ऐलाला होयमें आओ ए सेघरके भोले मेरीऐसी क्या हैसियत तुमनेदेखली मेरेपासनधन नदौलत और तुमनेसैकड़ों रुपया आंखबन्दकरके मुझको देदिया और अगर मुझको दिया तो जाओ मुझीसे लेभीलेना मेरे जो महल खड़े होंगे बिचवालेना मिश्रायन की ऐसी उखड़ी२ बातें सुनकरलाला छदामीलाल बहुत तिटपिटाया और मिश्रायनसे मिलावटकी बातें करनेलगा और कहा कि आज तो तुमकिसीसे लड़कर आई मालूम होतीहो बताओतो क्याबात है बीबीसाहब ने कुछ कहा या साहबजादी कुछखफाहुई यहांआओ इधरतो मिश्रायनसे यहकहा उधर दूकानपर जो लड़काबैठाथा एक पैसा उसकेहाथ दिया कि दौड़कर दो गिलौड़िया मसाला डलवाकर बनवाला जब मिश्रायन बैठगईतो छदामीलाल ने हंसकरपूछा तुम आज अवश्य किसी से लड़ीहो मिश्रायन ने कहा परमेश्वरनकरे क्योंलड़नेलगी बातपर बातमैंनेभी कहदी लालासच बातपर क्यों बुरामानतेहो छदामीलालनेकहा यहतो ठीकहै ब्योहारतो मालिकके साथहै पर तुम्हारेहाथों से होताहै यानहीं नतुम्हारे नामरुक्का नचिट्ठी तुमने मालिक के नामसे जोमांगा सो दिया मिश्रायन ने कहा हायों रहो इससे कब मुकरती हूं जो लेगई हूं हजारों में कहदूं और लाखोंमें कहदूं और हमारी बीबीके भी रोयें २ से दुआ निकलतीहै बेचारीकभी तकरार नहींकरती छदामीलालबोला वाह हक़ीक़तमें वहबड़ी अमीरहैं और उनकी क्या बात है फिर छदामीलालने धीरेसे पूंछा छोटीबहू का क्या हाल है और कैसीहैं अपनीबड़ीबहिनके अंदाज़पर है याकिसप्रकार का मिजाजहै मिश्रायननेकहालालाकुछ न पूंछो बेटी तो अमीरघरकीहै पर दिलकीबड़ी तंगहैदमड़ीकासौदाभीजबतक चारबेर फेरनलें पसंदनहीं आता हांपरमेश्वररक्खे गुनवन्ती तो संसारकी बहूबेटियोंसेबढ़चढ़केहैं भोजनअच्छेपकाती हैं सीनेमें दर्जियोंको मातकिया है परंतु लालाअमीरीकी बात

नहीं पहिलेपहिल शुरूपरभी टोकटोककी थी लालातुम तो जानतेहो मेराकाम कैसा बेलागहोता है अन्तको थक कर बैठरही और बड़ीबीबीतो बड़ी नेकहैं उन्होंके दम क़दमकी बरकतसे घर चलताहै हम ग़रीबभी उन्हींका दामन पकड़े हुयेहैं बहुतेरा हमारीबीबीको लोगों ने भड़काया परंतु परमेश्वर उनको सलामतरक्खे उनके दिलपर मैल न आया और किसी प्रकार बात उन्होंने मुंहपर नकहीछदामीलालनेकहा सुनाहै छोटी बहूको बड़ाभारी दहेजमिला मिश्रायन ने छूटतेहीकहा ख़ाकपत्थर बड़ीसे भी उतरताहुआ मिलाछदामीलालने कहा बड़ाआश्चर्य है कि इनकेब्याहके समयतो पण्डित देवीदत्त तहसीलदार थे बड़ीबेटी से अधिक देना उचित था मिश्रायननेकहा अयहय तहसीलदार काकुछ दोषनहींउस बेचारेनेतो बड़ीतैयारियांकी थीं यहीछोटी खोटी सुखबोली थी मातापिता के सुघरभलाई के मारे कहकर सबबस्तें कम कराईं छदामीलालने कहा अगर यहीहालहैतो बड़ी बहिन केप्रकारये भी अलग घर करेंगी मिश्रायन ने कहा अलगघर करनाकैसा यहतो बड़े गुल खिलायेगी बड़ीबहू बदमिजाज थी परंतु मनकीसाफ़ और ये मुंहकी मीठीमनकी खोटी कोई कैसाहीजान मारकरकामकरे इनकेख़ातिर तले नहीं आता बातभीकहेंगीतोतहकीमुंहपरकुछजीमेंकुछनबाबानबाबायह स्त्री एकदिनभी निबाह करनेवाली नहींअबतो पहाड़परबाप के पास जाने की तैयारियां कर रही हैं छदामीलाल ने पूछा आगरेसे इनदिनों कोई चिट्ठीआई है मिश्रायनने कहा नित्य उसतरफ़ ध्यानलगा रहता है नजाने क्या वियोग कोई चिट्ठी नहींआई बीबीख़र्चकी राहदेख रहीहैं दीवाली शिरपर आ रहीहै बल्कि परसोंअतरसों कहतीथीं कि लालाछदामीलाल से पचास रुपये उधार लाना छदामी लाल उधार का नाम सुनकर चौंकपड़ा और कहा पहले रुपये की राहलगावैं तो आगे देनेको क्याइनकारहै अबमेरे साझीनहीं मानते अपनी बीबीसे समझाकर कहदेना कि जहां से बनपड़े रुपया अदा

करें वर्नासुझपर कुछदोषनहीं मिस्रायनने कहा तुम्हारारुपया परमेश्वरही निकलवायेगा तो निकलेगा हमारी बीवी कहां सेदेंगी बाल२ तो कर्जदार होरही हैं सोदीअलग जानखाता है बज़ाजजुदा शुलमचाताहै लाला छदामीलालने कहासुझ को औरोंसे क्या वास्ता हमारे दूकानका हिसाबतो बेबाक करनाही पड़ेगा सुझकोतो तुम्हारे सरकार का बड़ालिहाज़ है परंतुमेरा साझी गुरदयाल नहींमानता वहजोयहहत्तान्त सुनपाये तो आज नालिश करदे मिस्रायन ने कहा यह सब हालबीबीसे कहधरमें दूंगी परंतु घरकाज़रा ज़राहाल सुझ को मालूमहै नालिशकरो या फ़र्यादकरो न रुपयाहै नदेने की गुंजायश रुपयाहोतातो उधार क्यों लियाजाता इतनी बातोंके पीछे मिस्रायन छदामीलालसे विदाहो सौदासुलफ़ लेकर घरमें आईतो अम्बिकादत्तकी माताने पूछा मिस्रायन तू बाज़ारजाती हैतो ऐसी बेफ़िकिर होजाती है कि रसोंई बनानेकी कुछ सुधनहीं रहती देखतो कितना दिन चढ़ा है अब रसोंई किसवक्त बनेगी और कब भोजन मिलेगा मिस्रायनने कहा बीबी मुये छदामीलालके झगड़ेमें इतनीदेर हो गई वह जान हार नित्य मुझको आतेजाते टोका करता है आजमैं जबगई और मैंनेकहा क्यालालातूने मुझसे नित्यकी यह क्या छेड़खानी लगाईहै क्योंमरा जाता है तनिक ढाढस रख आगरे से खर्च आनेदे तो तेरा अगला पिछला हिसाब किताब बेबाकहो जायगा वहसुआतो मेरेशिरहोगया और भरे बाज़ार में मुझको रुसवा करने लगा अम्बिकादत्त की माताने कहा छदामीलालको क्याहोगयाहै वहतो ऐसा नथा आखिर बर्षोंसे हमारा उसका लेनदेन है सबेरेभी दिया है देरकोभी दियाहै कभी उसने तकरार नहींकी मिस्रायन ने कहाबीबी कोई और महाजन दूकानमें साझी हुआ है उस मुयेने जल्दीमचारक्खी है जिसजिस पर लेनाथा सबसे खड़ेर वसूलकरलिया जिसने नहींदिया नालिशकरदी छदामीलाल ने कहा है कि मेरे तर्फ़ से बहुत २ हाथ जोड़कर कह देना

मेरा इसमें कुछ वश नहीं जिस विधि होसके दोचार दिनमें रुपयेकी राह लगादें वर्ना गुरदयाल ज़रूर नालिश करदेगा इस खबरके सुननेसे अम्बिकादत्तकी माताको बहुत रंज हुआ फुलझारी इनकी छोटीबहिन चौकमें रहतीथी और वह कुछ धनवानथी अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायनसे कहाकिआगरे सेतो जवाब चिट्ठीतक का नहींआता खर्चका कौन भरोसा है अगरसचमच छदामीलालने नालिश करदीतो क्याहोगा मेरेपासतो इतना असबाबभी नहीं किबेचकर अदाकरदूंगी और नालिशहोने पर देना भी बेइज़्ज़तीहै सगरेनगरमें रुस-वाई होगी डोली लेआ मैं फुलझारी के पास जाऊं देखूं जा वहांकोई सूरत निकलआवे मिश्रायनबोलीबीबी नालिशतो हुईरक्खीहै जिसने मुंहसे कहा उसे करते क्यादेर लगती है और फुलझारीके पास कहांसे रुपयाआया वहतो इन दिनों खुदहैरान है अम्बिकादत्तकी माताने कहा आख़िर फिरकुछ करना तो पड़ेगा मिश्रायन ने पासजाकर चुपके से कहा कि महीनेभरके लिये बहू अपनेसोनेके कड़े देदेंतो बातरहजाय इस समय तो इनकड़ोंको गिरवी रखकर आधी तिहाई छ-दामीलाल की भुगत जाय महीने भरमें यातो आगरेसे खर्च आजाताया मैं और किसी महाजन से लेआती अम्बिकादत्त की मानेकहा अरीदीवानी हुईहै खबरदार यह मुंहसे मत निकालना अगर रहनेका मकानतकभी बिकजायतोमुझको मंजूरहै परंतुबहूसे कहनेका तो मुंहनहीं मिश्रायनने कहा बीबी मैंतो इसख्यालसे कहा कि बहूहुई बेटीहुई कुछ गैर नहींहोते और क्या परमेश्वर नकरे बेचडालने की नियत हो महीनेभरका वास्ता है चीज़ संदूकमें नपड़ी रही महाजन के पास रक्खीरही जिसमें उसकीखातिर जमारहे अम्बिकादत्त की मानेकहा फिरभी बहूबेटीमें बड़ाअन्तरहोता है और नई ब्याहीहुई है कोई ऐसीबात कहसक्ता है देख खबरदार फिर ज़बानसे ऐसीबात मत निकालियो ऐसा नहो कि यमुना के कान पड़जाय और बहूसे जाय लगाये मिश्रायनने कहा मा-

हवजातीतो अभीखड़ीं हुई सुन रही थी परंतु वह बच्चा है अभी उनको इनबातोंकी समझनहीं अम्बिकादत्तकी माताने कहा डोली लेआओ मैं बहिनके घरतक जाऊंतो सही फिर जैसी सलाह ठहरेगी देखा जायगा अम्बिकादत्त की माता तो सवार हो चौक को सिधारी और यमुना ने सबवृत्तान्त अपनी भावज से जा कहसुनाये सरस्वती को और कुछतो न सूझी तुरंत अपने बड़े भाई ईश्वरीदत्तको यहचिट्ठी लिखी॥

सिद्धिश्रीसर्वोपमा योग्य भाईजी बहुत दिनोंसे मैंने अपना हाल इसलिये नहींलिखा कि जो चिट्ठी अव्वा के नाम भेजती हूं वह आपके देखनेमें भी आती होगी अबएक निजकीबात ऐसी आगेआई है कि उसकोआपही कोलिखना उचितसमझतीहूं वहयह है कि जबसे मैं ससुराल आई किसी प्रकार का सुझकोक्लेश नहीं पहुंचा औरबड़ी बहिनको जिन बातों की शिकायत रहा करती थी आपके आशीर्वाद से वह बात मेरेसाथनहीं सबलोग सुझे प्यारकरतेहैं औरमैं आनन्दसेरहती हूं परन्तु एकलच्छी मिश्रायन के हाथोंसे वहदुःखहै जो किसी बदमिज़ाज सास और बदज़बान नन्दसे भीन होतायह स्त्री इसघर में बहुत कालसे है भीतर बाहरका सबकार्यइसी के हाथोंमेंहै इसस्त्री ने घरकोलूटकर मटिया मेलकरदियाअब इतना उधार होगयाहै कि उसके अदाहोने कासामानदृष्टि में नहीं आता इसप्रकार का बन्दोबस्त घरमें नहींहै मैंनेथोड़े दिन मामूली कामकाज गृहस्थी में दखलदिया थातोसब बस्तु में काटकपट हरबातमें धोखा पायागया मेरेरोंक टोंक सेमिश्रायन मेरीबैरिन होगई और उस दिन से नित्य नये २ उपद्रव खड़े किये रहतीहै अगर्चि अब तक कोई बुराई की बात नहीं हुईपरन्तु इसमिश्रायन कारहनासुझकोबड़ानागवार है और निकलनाभीइसका बहुतकठिन है सारेबाजार का ऋण इसके आढ़तसे है छुड़ाने कानामभी सुन पाये तो कर्जखाहोंसे जाभड़काये फिरऋणकान हिसाब है नकिताब हैज़बानी तुकोंपरसब लेनादेनाहोरहाहैमैंजानतीहूं कि सब

लोगोंका लेखा होकर लिखा पढ़ी होजाय और एकढंग से हरएक की क़िस्त मुक़र्रर करदीजाय और उधार लेने का दस्तूर आगे के लिये मौक़ूफ़ हो और मियायन निकाल दीजावे यक़ीनहै कि अब्बाकेसाथ आपभी बाद दीवालीके आवें मैं चाहतीहूं कि आप अनुग्रह करके आगरा होकर आइये और अब्बाजान को जिसप्रकार बनपड़े कमसेकम पन्द्रहसोलह दिनके लिये अपनेसाथ लिवालाइये आपसबलोगोंके सामने यहसब मुआमिला अच्छीविधि से तै होजायगा मैं इस चिट्ठीको अति घबराहट के समयमें लिखरहीहूं कोईमहाजन नालिश करनेपर उतारू है मियायन ने यह सलाह दीहै कि मेरे कड़ गिरमीरक्खे जावें अम्माजान रुपयेके बिलायन्दके हेतु चौकमें अपनेबहिन के घर गई हैं उधर तो सरस्वती ने भाई को चिट्ठीलिखी इधर अपनी मौसीसे कहला भेजा कि मैं अकेली हूं जयजयवन्ती मेरी मौसेरी बहिन को दोदिन के लिये भेजदीजिये मैंने सुनाहै कि वह ससुरालसे आईहै ग़र्ज़शामो शाम जयजयवन्ती भी आपहुंची डोली से उतरते ही कहा वाह बहिन सरस्वती ऐसाकोई बेमीलनहींहोता मैंनेमौसाजी की चिट्ठी तुमसे मंगवाभेजी थी तुमने न भेजी सरस्वतीने कहा वह कौनमांगने आयाथा जयजयवन्ती बोलीदेखोयही मियायन मौजूद हैं क्यों बी मलिश्वरको तुम हमारे घरगईथी मैंने तुमसे कहदियाथाया नहीं लच्छीमियायन बोली हां बी तुमने कहा था पर मुझ अभागिन को बात याद नहींरहती यहां आनेतक घरके धन्धेमें भूलगई सरस्वतीने हलकेसेकहा तुमको लूटनाऔर घर फोड़ना याद रहताहै जयजयवन्ती से कहा चिट्ठी मौजूदहै और एकनईकिताबभी आईहै बड़ेमज़े की बातें उसमें लिखी हैं वह भी तुम लेते जाना बाद उसके सरस्वती ने मियायनका सारा वृत्तान्त जयजयवन्ती से कहा जयजयवन्ती बड़ी उताहिल थी उसीवक्त जूतीलेकरउठी और मियायन को मारनेचली सरस्वतीने हाथपकड़कर बैठालिया और कहा परमेश्वरके लिये ऐसा कोप मतकरो अभी जल्दी

नहीं सब बात बिगड़जायगी जयजयवन्ती ने कहा तुमयोंही शोच साच करके अपनी गत घाई खोतीहो अगर मैं तुम्हारी जगह पर होती तो भगवान की सौगन्ध इस मिश्रायन को मारे जूतियोंके ऐसा सीधा बनाती कि जन्मभर सुर्त्त रखती सरस्वती ने कहा देखो भगवान ने चाहा तो इस नमक ह-राम पर परमेश्वरकी मार पड़ेगी कोई दिन की देरहै इसके पीछे जयजयवन्ती ने पूछा तुम्हारी सास अपनी बहिनकेयहां किसहेतु से गईहै सरस्वतीने कहा वह बेचारी भी इसी मि-श्रायन के हाथोंने दर बदर मारीफिरती हैं कोई महाजन है उसका कुछ देना है मिश्रायन ने आज आकर कहा था कि वह नालिश करनेवाला है उसीके रुपयेके बिलाबन्द के लिये गईहैं जयजयवन्ती ने पूछा कि कौनसा महाजन नालिश क-रने वाला है सरस्वती ने कहा नाम तो मैं नहींजानती जय जयवन्ती ने मिश्रायन से पूछा कि मिश्रायन कौन महाजनहै मिश्रायन ने कहा छदामीलाल जयजयवन्तीने कहा किवही छदामीलाल जो गन्धीटोलेमें रहताहै मिश्रायन ने कहा हां बी वही छदामीलाल जयजयवन्ती ने कहा कि उससे हमारी ससुरारमें भी तो लेनदेन है भला क्या सुयेकी ताक़त है जो नालिश करे मैं यहां से जाकर तुम्हारे भाई जान से कहूंगी देखो तो कैसा ठीकबनाते हैं दोदिन जयजयवन्ती सरस्वती के पास रही तीसरे दिन बिदाहुई और बिदा होते कहगई कि बहिन तुझको मेरेखिरकी सौगन्ध जब तुम्हारेससुरे आवें और यह सब मुआमिला मुक़द्दमा पेश हो मुझको ज़रूर बुलवाना और मिश्रायन को मुझे सौंपदेना वहां अम्बिकादत्त की मा को उनकी बहिन नेठहरालिया और कहा कि दीदी बहुत दिन बाद तुमआईहो भला सातआठदिन तो रहो परंतु हररोज़ आदमी सरस्वती के कुशलक्षेम को पूछने आता था मिश्रायनने बैठेबैठाये एक और शरारतकीकि इनदिनोंगव-र्नर जनरलकी अवाईथी नगरकी सफ़ाईके हेतु हाकिमके तर्फ़ से बहुत ताकीदहुई सबमहल्ला और गलीमें इश्तिहार लगाये

गयेकि सबलोग अपने२कूंचे और गलियां साफ़करें दरवाजों पर सफ़ेदीकरालें नाबदानसाफ़रक्खें अगर किसीगगहकूड़ा कर्कटमिलेगा तो मकान नीलामहो जावेगा इसी समाचार का एक इश्तिहार इसमहल्ले के फाटक पर लगाया गया था लक्ष्मी मिश्रायन रातकोजाकर महल्ले के फाटकसे वह इश्तिहार उखाड़लाई और चुपके से अपने दरवाजे पर लगादिया और फिर अन्धेरे मुंह चौक में अम्बिकादत्त की माता से खबरकरने दौड़ीगई कि अभीमकानके किवाड़ भी नहीं खुले थे कि इसनेआवजदी अम्बिकादत्तकी माताने बोलीपहचानी और कहा अरी दौड़ियो किवाड़ खोलियो मिश्रायन ऐसी समय क्यों भागतेआईहै मिश्रायन सामनेआई तो पूछामिश्रायनकुशलतो मैहै मिश्रायन बोली बीबी मकान पर इश्तिहार या श्तिहार क्या होताहै लगाहुआ है मालूमहोताहै कि छदामीलालने नालिशकरदी अम्बिकादत्तकी मानेअपनीबहिन से कहाकि बीबी मैंतो जातीहूं जाकर छदामीलालको बुलवाऊंगी और समझाऊंगी परमेश्वर उसके जी में दयादेवे बहिनबोली दीदीमैं बहुतलज्जितहूं किमुझसेरुपयेकाबन्दोबस्त न होसका परन्तु गले को तुलशी मेरीमौजूदहै इसकोले जाओ गिरवींरखनेसेकामनिकलेतो खैरनहींतो बेचडालना अम्बिकादत्तकी मानेकहाकि खैर तुलशीमैं लिये जातीहूं परन्तु उसी का ब्याज बहुतबढ़गयाहै एकतुलशीसे क्या होगा बहिनबोली कि आखिर उन्होंनेभी कहाहै कि मैं किसी दूसरे महाजन से उधारलाऊंगा तुम भगवानका नामलेकर के सवारहोवह आतेहैं तो मैं भी उनको पीछेसे भेजतीहूं ग़र्ज अम्बिकादत्त की माता मकानपर पहुंची दरवाजेपर उतरीतो इश्तिहार लगा देखाउदासीको प्राप्तहोय आकरबैठगई सासका आना सुनकर सरस्वतीभी कोठेपरसे उतरी और प्रणामकिया सास को उदासदेखकर पूंछा आज अम्माजान तुम्हारा चेहरा बहुत उदासहै सासनेकहा हांमहाजनने नालिशकरदीहै रुपये की सूरतकहीं से बन नहीं पड़ती फुलझारी बहिन ने जवाब

दिया अब मकानपर इश्तिहार लगचुका देखियेक्या होताहै सरस्वती ने कहा आप कुछ सोच न करें अगर छदामीलाल ने नालिशकरदीहै तो कुछ हर्जनहीं जयजयवन्तीके ससुराल में उसकालेनदेनहै उसने मुझसे वादाकियाहैकि मैं छदामीलालको समझादूंगी और जो नहीं मानेगातो उसकेरुपये का और यत्नहोजावेगा रंजकरनेसे क्या प्रयोजन सासनेकहा अम्बिकाहोता तो मैं उसको छदामीलाल तक भेजती सरस्वती बोली यों आपको अख्तियारहै परंतु मेरे नज़दीक महाजन से डरना उचितनहीं नहीं तो वह आगे को ढीठहो जायगा और आये दिननालिशका डरावा दिखातारहेगा सबसेबेहतर यह है कि इधरका इशारा न हो और किसी ढबसे कोई दबाव उसपर पड़जायकि वह दावाको खारिजकरादे अम्बिकादत्त की माताने कहा जयजयवन्ती अभी लड़कीहैं कचहरी दरबारकी बातेंवह क्या जानेऐसा न होकि उनकेभरोसे में काम बिगड़जावे कावूहाथसे निकलजाय सरस्वतीने कहा जयजयवन्ती लड़की हैं परंतु मैंने बात पक्कीकरली है और मुझको भरोसाहैयह बातेंहोरही थीं कि दुर्गादत्तने दरवाजे पर आवाज़दी सरस्वतीनेकहाकि दुर्गादत्तआयाहै अवश्यइस मुआमिलेमेंवह कुछ खबरलाया होगा दुर्गादत्तको सरस्वती ने भीतर बुलाया और पूछा क्या खबरलाये दुर्गादत्त ने कहा बहिननेआपकोनमस्कारकहाहै औरमिजाजका हाल पूछाहै और कहाहै छदामीलालको बुलायाथा बहुतकुछडराधमका दिया है और उसने वादा कर लियाहै कि नालिश न होगी यह बात सुनकर अम्बिकादत्त की माता को कुछ धीर्य हुआ परंतु सरस्वती आश्चर्य में थी कि जयजयवन्तीने यह कहलाभेजाहै और छदामीलाल नालिश कर बैठा यह क्या बातहै और इश्तिहारका मुआमिलाभी आश्चर्यका है मैं घरमें बैठी की बैठी रही मुझ को खबर नहीं हाकिम का इश्तिहार होता तो कोई चपरासी पियादा पुकारता दुर्गादत्त बिदा हुआ तो यमुनासे सरस्वती ने कहा दरवाजे पर जो कागज

लगा है उसको चुपके से उखाड़ लाओ यमुना कागज़ उखाड़ लाई सरस्वतीने पढ़ा तो सफ़ाई शहर का हुक्म था नालिश का उसमें कुछचर्चा नथा समुझगईकि यह भी मिश्रायनकी चालाकीहै सास परतो यह हाल जाहिर नहीं किया परंतु उनका इतमीनान अच्छे प्रकार करदिया कि आप निश्चिन्त बैठीरहिये नालिश का कुछडर नहीं सासने कहा तुम्हारे कहने से नालिशके तर्फ़ से दिलजमई हुई परंतु दिवालीका तो त्योहार शिरपर चला आता है इसमें भी खर्च चाहिये आगरेसे चिट्ठी आनाभी बन्दहै इसका शोच तो मेरा लोहू सुखाये डालताहै सरस्वती ने कहा दीवाली को तो अभी एक महीना पड़ा है और दीवाली में क्या ऐसा बहुत खर्च होगा सासने कहा मेरे घर हरसाल दीवाली में पचीस तीस रुपये उठते हैं पूछोयही मिश्रायन खर्च करनेवाली मौजूदहै सरस्वतीने कहा कि खर्च करनेका क्या आश्चर्य है परंतु एक ज़रूरतकेलिये और एक बेज़रूरत सो दीवालीमें इतने रुपये खर्च करनेकी कुछ ज़रूरत नहीं सासनेकहा सालभर का त्यौहार है परजों कोखीलें बताशेदेना फिरि लोगोंके घर भेजना भिजवाना ज़रूरहै कहनेको तो तनिकसी बातहै दशरुपये तक तो अम्बिका और यमुनाके वास्ते खिलौना वग़ैरह चाहिये अम्बिकाका व्याहहोगया तो क्याहै भगवान रक्खे अभीतक उसके मिज़ाज में बचपन की बातें चली जाती हैं जबतक दो रुपये खिलौनेकेहेतु और चाररुपये रोशनीकेवास्ते नलेगामेरी जान खाजायगी और यमुना भी रोरोकर अपना बुरा हाल करेगी सरस्वतीने कहा परजोंकेलिये एकरुपयेकी खीलें और चारआनेके बताशे मिठाई और चारआनेके खिलौने और आठ आने रोशनी के लिये बहुत हैं भेजना भिजवाना तो इधर से आया उधरगया यमुनाभी अब खिलौने और रोशनी के लिये अधिक हठनहीं करेगी मैं उनको समझालूंगी दीवाली का बन्दोबस्त मैं करलूंगी मेरा ज़िम्मा है इसके लिये आप उधार न कीजिये सासमें तोये बातें हुईं परंतु सरस्वती शोचमें थी

कि मियांको किसप्रकार समझाइये आखिर सरस्वती ने इस यत्नसे मियांको समझाया कि बात कहदी और मियांको भी नागवार मालूम न हुआ सरस्वती ने अम्बिकादत्त के सामने यमुना से छेड़ करके पूछा कि क्यों जी तुमने दीवाली के वास्ते क्या फ़िकिर कीहै यमुनाबोली जब भाई अपने वास्ते खिलौने और दिवाली लावेंगे तो तुम्हारे वास्ते लावेंगे अम्बिकादत्त अभीतक जवाब देने नहीं पाया था कि सरस्वतीने कहा कि भाई तोऐसी वाहियात बेज़रूरत चीज़ क्यों लानेलगे यमुना खिलौने मेंक्या मज़ाहोताहै यमुनाने कहाभाई जान खिलौने से खेलेंगे और ताक़चेपर रखकरके तमाशा देखेंगे और दिवालियोंसे साराघर रोशनकरेंगे सरस्वतीने कहा जो दोएक खिलौने पूजाके लिये आवेंगे उनको ताक़चेपर रख देना और चैतन्य लड़की खिलौने से नहीं खेलतीं और न अपने हाथ से रोशनी करतीहैं यमुनाने कहा कि रोशनीहम अपने हाथसे नहींकरेंगी मिश्रायन करेगी जब रोशनी होजायगी तबहम देखेंगी सरस्वतीने कहा जब तुमने रोशनी अपने हाथसेनहीं की तो जो रोशनी महल्ले में होगी उसको देखलेना जोदशबीस चिराग़ घर में बलेंगे उसको तुम अपने हाथ से बालना और सुनो खिलौनों से खेलना बहुत बुराहोताहै हमारेमैके के महल्लेके लड़कोंमें से एक लड़का एक बड़े खिलौने से खेल रहाथा एकबेर खिलौना हाथसे छूटकर पैरपर गिरपड़ा एक महीनेतक वह लड़का उठनसका और एक लड़की सारीरेशमी पहने हुये दीवालीबार रहोथी लौ चिराग़की सारीमें लगगईऐसी आगफैली कि लोगबुझा न सके वह लड़की जलकर मरगई पस ऐसे खेल अच्छे नहीं और तुम अम्माजानका हाल देखतीहो कि उदासहैं यानहीं यमुनाने कहा उदास तो हैं सरस्वती बोली कि फिर तुमने यहभी शोचकिया कि क्यों उदासहैं यमुनाने कहा कि नहीं मालूम सरस्वती बोली वाह इसीपर तुम कहतीहो कि अम्माको मैं बहुत चाहतीहूं यमुनाने पूछा अच्छा भाभीजान अम्मा क्यों उदास हैं सरस्वतीने

कहा खर्चकी तंगीहै महाजन उधार नहीं देता इस सोचमें हैं कि यमुना खिलौनों के लिये हठकरेगी तो कहां से मांग करदूंगी यमुनाने कहा कि अच्छा हमनहीं लेंगी सरस्वतीने कहा तुम बहुत प्यारी बहिनहो और यमुनाको गले से लगाकर प्यारकिया अम्बिकादत्त चुप बैठा हुआ यह बातें सुनता रहा जो किताब माक़ूल थी उसके मनने भी मानलिया और उसी समय नीचे उतर कर माता के पासगया और कहा कि मैंने सुना है कि तुमदीवाली के सोचमें बैठी हो सो मेरेलिये तुम कुछ सोच मतकरो मुझको खिलौने और रोशनीके लिये कुछ न चाहिये और यमुना भी कहती है कि मैं भी नहीं मगाऊंगी खर्चकी एक रक़मतो यों कमहुई और दो रुपयेमें सबसामान सरस्वतीने करलिया और भेजने भिजवाने के हेतु सरस्वतीने आप बन्दोबस्तकिया जब बाहरसे बैना आया घर में ठहरने न दिया आदमी देकर बाहर निकला और इसने महरीसे कहा कि इसको फ़लानीजगह पहुंचादो जिस २ को भेजना था सब नाम बनाम पहुंचगया और दो रुपयेमें अच्छे प्रकार दीवालीहोगई लक्ष्मी सियायन यह बन्दोबस्त देखकर जलगई इस वास्ते कि उसकी बड़ी रक़म मारी गई जितना बाहरसे आता वह सब लेती और जो घरमें होता उसमें से आधी तिहाई निकाललेती और सब हंडियामें भरके महीने तक फांकाकरती दीवालीके बाद सरस्वती के बापकी अवाई हुई दशदिन पीछे दीवालीको देवीदत्त कांगड़े से घर आया सरस्वतीने पहले से अपने बाप की अवाई सुन रक्खी थी और सासु और पतिसे ठहरगया था कि जब तहसीलदार आवेंगे उसीदिन मैं उनसे मिलने जाऊंगी जब सरस्वती ने बाप का आनासुना तुरन्त डोली मंगा जापहुंची बापने गलेसे लगाया और देरतक हालपूछते पाछतेरहे और कहा तुम्हारे लिखने केमुआफ़िक ईश्वरीदत्त आगरेको गयेहैं कलयापरसोंसमधी साहब को लेकर यहां पहुंचेंगे उनकी एक चिट्ठीभी मुझको राह में मिली थी समधी साहब को रुखसत मिलगई है ग़र्ज

रातभर और अगले दिनभर सरस्वती अपने मैकेमें रही और सांझ समय पितासे कहा अगर आज्ञा दीजिये तो आज मैं चलीजाऊं बापने कहा अभी आठ सातदिन और रहो हम समधिन को कहला भेजेंगे सरस्वतीने कहा जैसा आप कहें वैसा मैं करूं परंतु अब्बाजानके आनेसे पहले घरमेंमेराहोना उचित जानपड़ताहै पिताने सोचकर कहा हां यह बात तो ठीक है अर्थात् सरस्वती बापसे बिदाहोकर घर आ पहुंची अगलेदिन ऐनभोजन के समयपर पण्डित शंकरदत्त अम्बिका दत्तके बापअचानक आपहुंचे ये राजाजयसिंह रईस आगरे के सरकार में मुख्तार थे पचास रुपये महीना उनकी तनख़ाह मकान और सवारी रईस के ज़िम्मे था ईश्वरीदत्त सरस्वतीके लिखने से आगरे गया और सरस्वतीकी चिट्ठी शंकरदत्त को दिखलाई शंकरदत्त बहू की चिट्ठी देख कर बहुत आनन्द हुआ और यों शायद छुट्टीभी नलेतापरंतु बहूकेदेखने के शौक़मेंरईससे बहुतकह सुनकर छुट्टीली और ईश्वरीदत्तके साथहुये जो कि सरस्वतीने पहिले कभी ससुरेको नहींदेखाथा लाजके मारे कोठेपर जाबैठी अम्बिकादत्त की माताको यह आश्चर्य था कि ये क्योंकर आगये ग़र्ज़ भोजन के पीछे बातें होनेलगी पण्डित शंकरदत्तने बीबीसे कहा कि सुनों मुझको तो तुम्हारी छोटी बहूने खींचकर बुलायाहै और सब वृत्तान्त चिट्ठी का और ईश्वरीदत्त के जाने का जोरू से बयान करके कहा कि बहूको बुलाओ सास कोठेपर गई बहूको साथ ले आई सरस्वतीने ससुरेको झुककर प्रणामकिया और बैठगई शंकरदत्तने कहा सुनो बेटो हमतो निजतुम्हारे बुलाये आये हैं तुम्हारी चिट्ठी देखतेही हमाराजी बहुतप्रसन्न हुआ परमेश्वर तुम्हारी आयुर्दाय बड़ी करे और सचकरके अबहमारे घरके अच्छे दिन आये जो तुम हमारेघर आई और मुझको भरोसाहुआ कि अब इसघरके कुछदिन फिरे कल जो परमेश्वरने चाहा तो तुम्हारी इच्छा के मुआफिक बन्दोबस्त होगा ग़र्ज़ दोचारदिनके शंकरदत्त ... दिन पीछे आये थे

मिलने मिलाने में रहे फिरदो चारदिन सफ़रके कारण से घर के काम काजकी तर्फ़ कुछ ध्याननकिया एकदिन बहूकोबुलाकर पास बैठाला और लक्ष्मी मिस्रायन को बुलाकरकहाकि मिस्रायन हमारे रहते सबहिसाब कितावकरलो किस २ का लेनादेना है सबलिखादो किसोच समझकर जिसकाजितना उचित होवेदियाजावे औरजोबाक़ीरहे उसकीबाद पातीकरदी जाय मिस्रायनने कहाएकका हिसाब होतोमैंजबानी भीयाद रक्खूं बनिया बजाज कुंजड़ा हलवाई तमोली सब का देनाहै छदामीलालकाहिसाबअलगहैजिसको जितनादेनाहो मुझको दीजिये देआऊं आपके नामजसहो जायगा पण्डित शंकर दत्त सीधेसाधे थे देनेको तैयार होगये सरस्वतीने कहायोंबे हिसाबदेनेसेक्या प्रयोजनपहलेहरएकका कर्ज़ादर्याफ़्तहोतब उसकोसोच समझकर देनाचाहिये मिस्रायन ने कहा भोजन बनाने से छुट्टी पाऊं तो हरएक से पूंछआऊं सरस्वती ने कहा पूंछआने से क्या होगा जिसका लेनाहो यहां आकर हिसाब करजाय मिस्रायन नेकहाकि बीबी आपनेतो एकबात कहदी अबमैं कहां २ बुलातीफिरों और वे लोगअपने काम धन्धे से कबछुट्टी पाते हैं जो मेरे साथ चले आवेंगे सरस्वती बोली मिस्रायन कोई रोज़ २ का आना जानानहीं है एकदिन कीबातहै जाकर बुलालावो शामको रसोईंका बंदोबस्त हो जायगा तुमआजयही कामकरो औरलेने वालेतो देनेकानाम सुनकर दौड़े आयेंगे छदामीलालतोदो नालिश करने कचहरी को गयाथा वहां आते क्या उसके पाउं की मेहदी घिस जायगी औरदूर कौनहैं बनियां हलवाई तमोली सबइसी गलीमें रहतेहैं सिर्फ़ बज़ाज और छदामीलाल दूर है उनको कलपर रक्खो फुटकर हिसाब आज हो जाय मियायन को किसी तरह मर्ज़ीनथी किहिसाबहो परन्तु सरस्वती नेबातों में ऐसा दबाया कि कुछ जवाब देते नबन पड़ा सबसे पहिले हलवाई आया पूछागया कि तुम्हारा क्या पानाचाहियेहलवाईबोला तीसरुपये [illegible]

के हलवाई ने कहा तीस रुपया क्या बहुत हैं पन्द्रह रुपये की मिठाई इसी दिवाली में आई अम्बिकादत्त की माता बोली अरी कैसी मिठाई अब की बेर दिवाली में जो मिठाई हमारे घर आई वह नक़द दाम देकर आई यह सुनकर मिश्रायन का रंग उड़ गया और बोली वह मिठाई तूने इनके हिसाब में क्यों लिखदी वह तो मैं दूसरे घर के वास्ते लेगई थी और तुझ को बत भी दिया था हलवाई ने कहा मुझ से तुमने किसी घर का नाम नहीं लिया इसी घर के नाम से तुम लाई हो और मुझे क्या फ़ायदा था कि दूसरे की चीज़ इनके नाम लिखता और मुझसे और किसी सरकार से उचापत भी नहीं है ग़र्ज़ शंकरदत्त ने कहा मिठाई की रक़म रहनेदो और चीज़ें बताओ ग़रज़ इसी प्रकार और चीज़ें उसने बताईं जो जन्मभर नहीं आई थीं सिर्फ़ दो रुपये सच निकले बाक़ी सब झूठ शंकरदत्त का जी जलगया और बहुतसा उनको क्रोध आया और कहा क्यों जी मिश्रायन ऐसा ही तुमने दुनियांभर का ऋण इस घर पर कर रक्खा है हलवाई हो चुका तो कुंजड़ा आया उसने कहा पण्डितजी मेरा तो सीधा हिसाब है दो आने रोज़ की तरकारी अम्बिकादत्त की मा बोली अरे सेर भर तरकारी मेरे घर आती है दो आने की हुई कुंजड़ा बोला कि मेरी दूकान से मिश्रायन तीन सेर लाती है मिश्रायन बोली हां तीन सेर लाती हूं सेर भर तुम्हारे नाम से सेरभर अपनी बेटी के वास्ते सेरभर दूसरे घर के वास्ते मैं क्या मुकती हूं यह मुआ सब तुम्हारे नाम बताता है कुंजड़े ने कहा अय बुढ़िया बेईमान सदा तू इसी घर के नाम से लाती रही और जो रुपया मिला इसी घर से मिला तेली तमोली का हिसाब हुआ तो उसमें भी बहुत ग़लत निकला ज़ाहिर हुआ कि मिश्रायन इसी घर के सौदे में अपनी बेटी और दोतीन पड़ोसियों के घर पूरे करती है इसी घर के नाम से सौदा लाती है और दूसरे घर बेच डालती ग़रज़ शाम तक फुटकर हिसाब भुगत गया अब अकेले बज़ाज़ और छदामीलाल का हिसाब रहा अम्बिकादत्त ने

नेचुपके सरस्वतीसे कहा ऐसा नहो कि मित्रायन भागजाय सरस्वतीने कहा घरबार लड़के बच्चे छोड़कर कहां भाग जायगी हां शायद शरतदार होती कुछ खाले परंतु ऐसी शरतदार होती तो क्यों ऐसा काम करती लेकिन तौभी इतनी चौकसी इसको अवश्य है कि बाहर आते जाते कोई आदमी देखता रहे शंकरदत्तने अपने एक नौकरको गुसाय आयाथा चुपके से कह दिया कि मित्रायनको आतेजाते देखतेरहो जनखाने से छुट्टी मिली और मित्रायन चुपके से उठकर बाहर निकली तो भोला नौकर शंकरदत्त का पीछे २ हुआ मित्रायन पहलेतो अपने घरगई और वहां से कुछ बगल में दबा सीधा बजाज के मकान पर जा उसको आवाज दी बजाज घबरा कर बाहर निकला और कहा मित्रायन तुम इस समय कहां आई मित्रायन ने कहा कि पण्डितजी आये हुये हैं जिस २ का देनाहै सबका हिसाब होताहै कलतुम भी बुलाये जावोगे ऐसी बात मत करना कि मेरी रुसवाई हो बजाज ने कहा हिसाब में तुम्हारी रुसवाई की क्या बातहै मित्रायन बोली अयलाला तुम जानतेहो लालच बहुत बुरीहोती है सरकार के हिसाब में में अपनेलिये भी तुम्हारे दूकानसे कभी २ लट्ठा नैनसुख दरेसखेगई बजाजनेकहा क्यामालूम तुमअपने वास्ते क्या लेगई हो मित्रायनने कहा तुमकोतो इस समय हिसाब करने की सुध नहीं परंतु दोचारथान दरेसलट्ठा नैनसुखमेरे हिसाब में निकलेंगे मेरे हाथकी चार चूड़िया सोलह रुपये कीहैं घिसघिसाकर एकरुपया कम होगयाहोगा पन्द्रह रुपये मेरे नामसे कमकर देना और दोचाररुपया जो मेरेनामका निकलेगा देने को मौजूदहूं बजाजने कहा चूड़ियां तुमदेती होमैं लेताहूं परंतु रातका समयहै बहीखाता दूकान परहै बेदेखे क्या मालूम होक्यागयाहै और क्या पानाहै मित्रायनने कहा इस समय मेरी इज्जत तुम्हारे हाथहै जिसप्रकार होसके बचाओ फिर बजाज से विदा हो सीधी हुदासिंजान के घर पहुंची वह भी आश्चर्य में होकर कहने लगा कि इस समय

मिश्रायन तुम कहां आई मिश्रायन उसके पांवपर गिर पड़ी और कहनेलगीकिमुझसे एकअपराध हुआहै छदामीलालने कहा वह क्या हुआ मिश्रायन बोली कि तुम बचन दो किमैं चमाकरदूंगा तो मैं कहूं छदामीलालने कहा बाततो कहो मिश्रायनने कहाचारमहीने हुये पण्डितजीनेआगरेसेसौरुपये तुमको भेजेथे वहमेरेपाससे खर्चहोगये सरकारमें डरकेमारे मैंने जाहिर नहींकिया अब पण्डित जी आये हुये हैं तुमको हिसाब के वास्ते बुलावेंगे मैं इसरुपयेका ठिकाना लगादूंगी तुमयह मतकहना कि मैंने यह रुपया नहीं पाया छदामी लाल ने कहा दोचार रुपये की बात होती तो मैं छिपा भी देता इकट्ठे सौरुपये तो मेरेकिये छिपनहीं सक्ते मिश्रायन ने कहा क्यालाला सौरुपये का भी मेरा भरोसा नहीं छदामी लाल ने कहा साफ़ बात तो यहहै कि तुम्हारा एक कौड़ी का भी भरोसानहीं जिसघरमें तुमने जन्म भर परवरिश पाई और उन्हीं के साथ यह सलूक किया तो दूसरे के साथ तुम चूकनेवालीहो मिश्रायनने कहा हांलालाजब बुरासमय आता है तो अपनेघर के बैरी बनजाते हैं खैर जो तुमको मुझपर भरोसा नहीं तो लो यह मेरीबेटीकी पहुंची और जोशन रखलो छदामीलाल ने कहा यह मुआमिलाकी बातहै दिन हो तो मालपरखाजाय और मालूमहोकि कितनेकाहैपरंतु अटकल से यह माल पचासका होगा मिश्रायन ने कहा अरे लाला ऐसा अन्धेर मत करो अभी चारमहीने हुये दोनों चीजें नई बनवाईथीं सौ सवासैके लागत कीहैं छदामीलाल ने कहा इसमें बुरा मानने की क्या बातहै तुम्हारीचीज सौ की है या दोसौकी है कोई लिये थोड़ाहीलेताहै तौलानेसे जितने की ठहरेगी मालूम होजायगी यहसबबन्दोबस्त कर- के मिश्रायन लौटआई और पण्डितजी के नौकर ने पांव दा- बने में यहसब हाल पण्डितजी से बयान किया अम्बिकादत्त की माताके मुखसे सरस्वतीको भी मालूमहुआ भोरहुआतो बजाज और छदामीलालबुलवायेगये हिसाबमें कुछ तकरार

होनेलगी मिश्रायन बढ़ चढ़कर बोलती थी बजाज ने कहा तू बुढ़िया क्या बड़ २ करती है उठाओ अपनी चूड़ियां तू तो पन्द्रह रुपये की बताती थी बाजार में नौ रुपये को आंकते हैं फिर छदामीलाल ने पहुंचियां और जोशन निकाल सामने रखदिये और मिश्रायन से कहा यह माल पचास का आंकता है और हमारे काम का नहीं शंकरदत्त ने बजाज और छदामीलाल से पूछा क्यों भाई यह कैसी चीज़ें हैं तब दोनों ने रातकी कहानी बयान की उस समय मिश्रायन के मुंह पर मानों लाखोंजूतियां पड़रहीथीं जब हिसाबहोगया तो शंकरदत्त ने देनेको रुपया निकाला तो जितना वाजिबी था आधा २ रुपया सब को देदिया और कहा कि मैंने आगरे से रुपया मंगाया है दश पांच दिनमें आ जायगा तो बाक़ी भी दियाजायगा सबलोगों ने पूछा कि जो मिश्रायन के तर्फ़ निकला वह किससे लें शंकरदत्त ने कहा कि मिश्रायनसे हिसाब की खबर सुनकर जयजयवन्ती डोली पर चढ़कर आ पहुंची और सरस्वतीसे गिलाकिया कि क्योंजी तुमनेमुझको खबर न की सरस्वती ने कहा अभी तो हिसाबहोताथा जब यह हिसाब होचुकता तोमैं तुमको खबरकरती गर्ज़हिसाब होजानेके पीछे शंकरदत्त ने मिश्रायन से कहा अजीइनका रुपया अदाकीजिये मिश्रायन ने नीचे आंखें कर कहा मेरे पास बेटीका गहनाहै उसमें यह अपना २ समझबूझलें बेटी का तमाम गहना तो कुंजड़े हलवाई बनिये बजाज तमोली के हिसाब में आधेदामोंपर निकगया छदामीलाल के सौ रुपयेके वास्ते रहनेका झोपड़ा गिरवी करनापड़ा लिखा पढ़ी पक्के कागजपर होकर चार भले आदमियों की गवाही होगई शंकरदत्त ने मिश्रायन से कहा बस अब आप यहांसे पधारिये तुमऐसी निमकहरामबेईमान काहमारे घरमें कुछकाम नहीं सरस्वती ने कहा इनमें नमकहरामी के सिवाय एक गुण और भीथा वह यह कि घरमें बिरुद्ध डलवानेकी यत्न में रहती थी क्यों मिश्रायन वह कढी कीबात यादहै कि तुमने

कहा कि बहू कहती है कि मेरे शिर में दर्द है बोल तो सही कब तूने मुझसे कहा था और कब मैंने दर्द शिर का बहाना किया था मिश्रायन ने कहा दुलहिन तुम अटारी पर पाठ कर रही थी मैं कोठेपर गई तुमको पढ़ते देख उलटी फिर आई सरस्वती ने कहा दर्द शिर की बात अपने मन से बनाई मिश्रायनने कहा मैंने सोचा कि सबेरे से अबतक तुम पढ़ रही हो अब कहा चूल्हे में शिर खपाओगी सरस्वती ने कहा भला पहाड़ जानेकी बात तूने किस प्रयोजनसे कही थी मैंने तुझसे सलाह की थी या तूने मुझको कहते सुनाथा इसका कुछ उ-त्तर मिश्रायनको न आया फिर सरस्वतीने इश्तिहार निकाल पण्डित शंकरदत्त के सामने डालदिया और कहा देखिये यह मिश्रायन आपतो महल्ले के फाटक से इश्तिहार उखाड़कर लाई और मकानपर लगाया और आपही अम्माजानसे दौड़ी कहने गई कि महाजनने नालिश की सरस्वती ये बातें कहती जातीथी और शंकरदत्तका चेहरा क्रोधसे लाल होता जाताथा उधर जयजयवन्ती दांतपीसरही थी शंकरदत्तनेकहा मिश्रा-यन तुझको निकालदेना काफ़ीनहीं है तू बड़ी बदजात स्त्री है यह कहकर अपने नौकरको आवाजदी और कहाकि ग-णेश इसपापिनको थानेमें लेजाओ और पर्चे में हम इसकासब हाललिखे देते हैं सरस्वतीने शंकरदत्तसे कहा बस अब जाने दीजिये और मिश्रायन से कहाकि चलदे अर्थात् इस विधि अपने कौतुकोंकेकारण मिश्रायन निकालीगई जबमिश्रायनघर पहुंचीतो बेटी बोली क्यों मैं न कहतीथी कि अम्माऐसी लूट तू मतमचा सौ दिन चोरकेतो एकदिन साहका ऐसा न हो किसी दिन पकड़ीजावे तुम किसकी मानतीथी अच्छाहुआ जैसाकिया वैसापाया अब ससुराल में मुझको बदनाम मत करो जहां तुमको तुम्हारा परमेश्वर लेजाय चली जाओ मेरे घरमें तुम्हारा कामनहीं है गहनेको मैंने संतोषकिया प्रारब्ध में होगा तो फिर मिलरहेगा इसप्रकार से परमेश्वर २ करके अपने बैरिनको सरस्वतीने निकालपाया जबमिश्रायन इस घर

से निकलगई तो सरस्वतीने बापके पास जानेको फिर आज्ञा चाही और आनन्द पूर्वक बिदा हो माताके घर आई और सात दिनतक बराबर माताके घर रही जिस२ बातसे बापसे सलाहलेनी थी सबली बापने पूछा मिश्रायन निकल गई सर-स्वतीनेकहा आपकी कृपासे यह सबकाम सिद्धहुआ न बड़े भाई आगरे जाते न अब्बाजान आते न यह वर्षोंकालेखा ते होता न मिश्रायन निकलती बापनेपूछा अबबन्दोबस्त घरका किस तौरहोगा सरस्वतीने कहाकि मिश्रायनके निकलते मैं इधरचली आई परंतु अब बन्दोबस्तक्या कठिनहै इसीमिश्रा-यनकी खराबीथी अबमैं सब देखभाललूंगी देवीदत्त ने पूछा और कहा क्या २ बातें घरमें तुमने नई जारीकीं सरस्वतीनेकहा अभी मैंने कुछ देखा भालानहीं आदिहीसे मिश्रायनका झ-गड़ाहोगया अब इरादा है कि हर एक बातको सोचों और बन्दोबस्तकरूं और आपको चिट्ठीकेद्वारा खबरकरतीरहूंगी देवीदत्तने ब्याह पीछे से सरस्वती का दश रुपया महीना मुकर्रकर दियाथा सरस्वतीसे पूछा अगरतुमको खर्चकीतक-लीफ़रहतीहो तो मैं कुछ रुपया तुमको देताजाऊं सरस्वती ने कहा वही दशरुपये मेरी जरूरतसे अधिकहैं बल्कि आज तकके सबरुपयामेरे पासजमाहैं अधिकलेकर मैं क्याकरूंगी और जब प्रयोजनलगेगा तबआपसे मांगलूंगी गर्ज बापसेबिदा हो सरस्वतीने ससुरालमें आकरदेखा कि सासचूल्हा झोंक रहीहै सरस्वतीने आश्चर्यसे पूंछाकि अयअबतककोई मिश्रा-यननहीं रक्खीगई सास बोली आनेकोतो कईआईं पर तन-खाहसुनकर हियाव नहीं पड़ताकि किसी को नौकर रखिये लक्ष्मीबुरीथीमगरआठआनेमहीनेपरउसनेपच्चीसवर्षनौकरी की अब जो मिश्रायन आतीहै खानाऔर दो रुपयेसे कमका नाम नहीं लेतीमैंने तुम्हारेआनेपर रक्खाथा सरस्वतीने कहा मिश्रायन तो एकमेरे नजरमें बैठीहै परंतु दश माहा, वह भी अधिकमांगतीहै रामकलीकी छोटीबहिन गुलनारा पकाना सीनासब जानतीहै एक बार रामकलीने मुझसे कहाथा कि

कोई अच्छा ठिकाना होते। गुलबासा नौकरी करनेको मौजूद है अम्बिकादत्तकी माताने पूछा वह क्या दरमाहा लेगी सरस्वती ने कहा वह तो अपने मुंहसे तीनरुपया रोटी मांगती है परंतु समझायेसे दोरुपये महीनेपर शायद राजी होजाय अम्बिका दत्तकी माताने कहा कि दोरुपया खानादेना होतो हरभानदत्त मिश्रकी जोरू अनन्दी चिरौंगी करती है उसीको न रक्खें सरस्वती ने कहा उसको तो मैं चार आने महीने परभी न रक्खों अम्बिकादत्त की माताने कहा कि बेटी क्यों सरस्वती ने कहा पड़ोसका रहनेवाला आदमी बुरा आंखवची और जो चीजचाही घरमें जाकर रख आई जब घरसे घर मिला है तो हरघड़ी हरभानदत्तकी घरवाली अपने घर जायगी और क्या आश्चर्य है कि रातकोभी अपनेघर रहे अम्बिकादत्तकी माताने कहा शालिकराम मिश्र की स्त्रीने अपनी बेटी रामकुअंरि के लिये मुझसे कई बार कहा और रामकुअंरि तो गोलदरवाजे में रहती है सरस्वतीनेपूछा वही रामकुअंरि जो अच्छे भांति बनीठनी रहती है अम्बिकादत्त की माताने कहा बनीठनी क्या रहती है नई ब्याही हुई है कपड़े पहिनने का जरा शौक है सरस्वती कहा ऐसा आदमी नहीं रखना चाहिये अम्बिका दत्तकी माताने कहा शालिकरामकी जोरू नौकरी करनेको राजीहै सरस्वतीने कहा उसके साथ एक दुमछल्ला छोटी बेटी का लगा है वहएकदम मांको नहीं छोड़ती यशनाम तो एक का होगा और भोजन करने को दो २ होंगे अम्बिकादत्त की माने कहा फिर और कोई तो मेरे चित्त नहीं चढ़ती सरस्वती ने कहा देखो उसी गुलबासाको बुलाऊंगी अम्बिकादत्त की माताने कहा तनखाह क्या होगी सरस्वतीनेकहा कि ईमानदार आदमी तो कमदरमाहे पर मिलना कठिन है इनलोगोंको दो की जगह तीनदेने गौं हैं परंतु लक्ष्मी ऐसीको आठआना देकर घर लुटवाना मंजूर नहीं है उससमय तो सासु बहुओं ने मिलजुलके रसोई बनाली भोजनके पीछे सरस्वती यमुना अपनी ननदको ले अटारीपर चलीगई जमतकपण्डित शंकरदत्त

घरके सरस्वतीने कोठे परसे उतरना बहुत कम कर दिया था। सिर्फ़ सुबह शामनीचे उतरतीथी बल्कि यमुनाको भी मना कर दिया था। कि हर घड़ी नीचे मत जाया करो यमुना तो लड़की थी उसनेपूंछा अच्छी भाभीजान क्यों न जावें सरस्वती ने कहा बड़ोंके सामनेहर घड़ी नहीं चलते फिरते खानेकेपीछे घरकेहिसाब किताब में शङ्करदत्त के और घरवालोंसे लड़ाई होनेलगी बीबीकी यह शिकायतथी कि तुमखर्च बहुत थोड़ा देतेहैं यहां शादीब्याह बिरादरीका लेना देना आनाजाना सब मुझको करनापड़ता है शङ्करदत्तकहते थे कि बीसरुपया महीना थोड़ानहीं है तुमको घरगृहस्थी करनेका ढंग नहीं है इतनेमें शङ्करदत्तने यमुना को पुकारा यमुना आई कहा अपनीभाभी को बुलालाओ सरस्वतीने बुलाने की खबरसुनी तो आश्चर्यमें हुई कि इससमय क्यों बुलाया यमुना से पूछा क्याहोरहा है यमुनाने कहा लड़ाई होरही है सरस्वती गई तो शंकरदत्तने कहा क्योंबेटी अबघरका बन्दोबस्त कौनकरे गा सरस्वतीने कहा अम्माजान करेंगी जिसप्रकार अब तक करतीथीं शङ्करदत्तने कहा इनके बन्दोबस्तको देखलिया बीस रुपया महीना जिसघरमें आताहो उसघरकी यही सूरत है कि न अच्छाकोई बर्तनहै न इज्ज़तकी कोई चीज जो किसी समय एक चिमचा शरबत दरकार होतो परमेश्वरने चाहा उसका सामान भी घरमें न निकले सरस्वती ने कहा अम्मा जानका इसमें क्या दोष है लच्छी मिश्रायन ने घरको सत्या नाशकिया पण्डितशङ्करदत्तबोले इनमेंगृहस्थीके करनेकीबुद्धि होतीतो मिश्रायन का क्या दावा था। मिश्रायन नौकरथी या घरकी मालिकनथी सरस्वती ने कहा पच्चीस वर्ष का जब पु- राना नौकर लूटनेपर कमरबांधेतो उसके धोखेको कौनजान सक्ता है ऐसे पुराने आदमीपर तो शुबहा भी नहीं हो सक्ता शंकरदत्त बोले तुमको आखिर शुबहा हुआ या न हुआ सरस्वतीने कहा मुझको क्या शुबहाहुआ उसकी शामत और बुरे दिनथे कि उसने मुझको छोड़के अपने ऊपर खराबी ली

इतनेमें सासबोली पचासमें तो तुम अपने अकेले दमके वास्ते तीसरुपया रक्खो और यहां कुनबेके लिये बीस रुपया शंकर दत्तने कहा घरकाखर्च बाहरका खर्चकहीं बराबर हो सक्ता है तुमने तो मुझको अकेला समझ लिया और खिदमतगार सवारी मकान कपड़ा लत्ता भी तो इसीमें है ओढ़ने कहा कि सवारी और मकान तो सरकार से मिलता है शंकरदत्त ने कहा घोड़ा मिला दाना घास तो अपने गिरहसे खिलाना पड़ता है चार रुपयेका साईस और मकान की मरम्मत फिर सरकार दरबारके मुआफ़िक़ हैसियत देनालेना हजारबखेड़े हैं नहीं मालूम मैं किसप्रकार निर्बाह करताहूं सरस्वती ने साससे कहा अम्मा जान बीस रुपये में तकरार करनेसे क्या फ़ायदा जितना मिलता है परमेश्वर का शुक्रकरो यह बीस हमारे नज़दीक हजारोंके बराबरहैं सासने कहा बेटीमुझसे तो इस बीसमें घर नहीं चलता यह सुनकर सरस्वती ने सास को रोका और शंकरदत्त से कहा आप चाहिये दो रुपये और कमदीजिये परंतु जोकुछ दीजिये महीने २ मिला करे जिससमय पैसा नहींहोतातो उधारलेनापड़ताहै और उधार से घरकी रहीसही बरकत भी उड़जातीहै शंकरदत्तने कहा- हिंदुस्तानी सरकारों में तलब मिलनेका दस्तूर बहुत बुराहै कभी छठेमहीने कभी बरसवेंदिन तलब मिलतीहै इस कारण खर्चका बंधेज नहीं हो सक्ता परंतु छदामीलाल से मैं कह जाऊंगा कि महीने के महीने बीस रुपया तुमको दे दिया करेगा सरस्वतीने पूछा कि महाजन बनाजाइयेगा तो बस आप से सूदमांगेगा शंकरदत्त ने कहा नहीं सूद क्या लेगा हमारे सरकारमेंभी इसका लेनदेनहै वहांसे उसका आजायगा सरस्वतीने कहातो बहुत उत्तमहै इसप्रकार बीसरुपये तना ख़ाह ठहरी परंतु अम्बिकादत्तकी माता को बुरा लगा और और अलग जाकर सरस्वतीसे गिलाकिया सरस्वती ने कहा कि घरतो बीस रुपयेमें मैंचलादूंगी इसका आपकुछ शोच न कीजिये और पण्डितजीतो तीसरुपये से कममें अपनी हैसि-

यत इतनानहीं रखपाके मुख्तारी की नौकरीमें पहिले तो
ऊपरसे आमदनी नहीं और जो हुई भी तो पण्डितजी क्यों
लेलेंगे अगरवह आप लौटालेंदें और दोचार रुपयाघरसे
अधिक भी आये तो उचित नहीं यहबात सुनकर सासचुपहो
रही सरस्वतीने गुलबासा मिश्रायन को बुलाभेजा और कह
सुनकर दो रुपया खानेपर राजी करलिया और जता दिया
कि गुलबासा कोई ऐसीबात नहोकि तुम्हारे भरोसेमें फ़रक
पड़े जिसप्रकार तुम्हारी बड़ीबहिन हमारे मैके में रहती है
उसी प्रकार तुम रहना गुलबासा ने कहा बेटी भगवान उस
घड़ी मौत देवै कि पराये मालपर नज़र करूं ज़रूरत हो तो
तुमसे मांगकर खाऊं पर बेहुक्म नोनतक चखना दोष सम-
झतीहूं दूसरे दिन शंकरदत्त आगरेको सिधारे और ज़रूरत,
को सबवस्तु सरस्वतीने इकट्ठीमंगवाली और सदायहदस्तूर
रक्खा कि सभी समय पर हर एक चीज़ ले रखती थी मिर्च,
धनियां अनाज, दाल, चावल, खांड़, लकड़ी, कण्डा, आलू,
अरुई, मेथी, शलजम, सोयेकासाग, हरचीज़ वक्तपर मोलली
जातीथी मिश्रायन मिलाकर घरमें छः आदमी थे दोनों जून
दालरोटी चावल और दो भांति की तरकारी मिश्रायन बना-
लेती थी और सातवें दिन सादा पुलाव और मीठे चांवलों
के पकने का मामूल था घरमें दोतीन प्रकार की चटनी कोई
चाशनी दार कोई अर्क नाना की कोई सिर्का की दो चार
प्रकार का मुरब्बा बना रक्खा इसके शिवाय शर्बत अनार
नीबू शर्बत, शिकंजबीन शर्बत, बनफ़शा शर्बत, नीलोफ़र
शर्बत,फालसाको एकर बोतल बनाली और हरतरहका ज-
रूरी सामान घरमें मौजूदरहा करता था बावजूद इससामान
के पन्द्रह से अधिक खर्च नहीं होताथा पांच रुपया जोबचते
थे उससे बड़े २ बर्तन और एक बर्तन चाह बनाने का मोल
लिया दोसंदूक बनाये गये दो अलमारियां असबाबकी को-
ठरीमें बैठने की चौकी पुरानी होगई थी वह दुरुस्तहुई दोप-
लंग तैयारहुये खुलासा यह कि सरस्वती ने इक्कीस रुपये में

घरकी बड़ी रौनकहोगई हर वस्तु में बन्दोबस्त और हरचीज़ में किफायतको दख़लदिया लक्ष्मी सिआयनके समय में यमुनाके वास्ते दोचार पैसेका नित्यसौदा बाज़ारसे आताथा इसवास्ते कि रसोई में कुछनहीं बचताथा अब सवेरे की रसोई जो कुछ बचजाता था वह तीसरे पहर यमुनाके खानेकेलिये रखदिया जाताथा कभी यमुना को वह खाना दिया गया कभी नमक पारा बनादिये गये और जो आठवें दसवेंदिन यमुना काजी चाहा तो बाज़ारसे कुछ मंगवादिया गया इस घरसे जन्मभर भिक्षुक को एक दिन चुटकी आटा या किसी अपाहिज को आधी रोटी नहीं मिलती थी अब दोनों समय दो२ रोटियां फ़कीरोंको भीदी जातीहैं घरमें जो असबाब बेढंगी से साग मूलीकी तरह से पड़ा रहता था अब सब वस्तु ठिकाने लगी कपड़ों की गठरियोंमें तो कपड़े अच्छेप्रकार तह किये हुये बंधेहैं अनाज पानी की कोठरी में हर एकचीज़ एहतियात सेरक्खीहुईहैबर्तन साफ़ सुथरेअपनीजगहरक्खे हैं फूलकेअलग और पीतलकासकुटके अलगगोया घरएककलथीजिसकीकील पुर्जेसबदुरुस्त और उसकलकी कुंजी सरस्वतीके हाथमेंथी जब कूकदियाकलअपने मामूलसेचलनेलगी जबसेसरस्वतीने घरका बन्दोबस्त अपने हाथमें लियाऽधारलेना सौगन्धहोगया सरस्वती घरका सबहिसाब एककिताब में लिखा करती थी जब कोई वस्तु होचुकी फिर आई और गुलबासा ने ख़बर की कि बीबी दोदिनकाघी औरहै सरस्वतीनेअपनी किताब निकाल करदेखा किकिसदिन कितनाघी आयाथा और कितनेरोज़के हिसाबसे ख़र्चहुआ गुलबासा ऐसी ईमानदार नौकर थी कि मुमकिन नहीं था कि कोई चीज़ फ़जूलखर्च होया बेहिसाब उठजाय पिसाई वालोंकी पिसाइयां और धोबिनकी धुवाइयां तकसरस्वतीकी किताबमें लिखीजातीथी जबहर एकचीज़का बन्धेज होगया तो सरस्वतीने दूसरे कार्यों को देखना आरम्भ कियाअम्बिकादत्त पढ़ता लिखतातोथा परन्तु उस बेतदबीरी और बेपरवाही से जिस तरह आज़ादखुद मुख्तार लड़के पढ़ा

करते हैं बाप तो इसके बाहर रहते थे बड़े भाई में सिर्फ़ अढ़ाई
वर्ष की छुटाई थी इसलिये अम्बिकादत्त पर बड़े भाई का दबाव
कम था सुबह शाम अम्बिकादत्त सबक़ पढ़ लेता था और फिर
अपने हम जोलियों में गंजीफ़ा शतरंज चौसर खेला करता था
बाज़ दफ़ा खेल में ऐसा मसरूफ़ होता कि पहर रात गये घर आता
सरस्वती को यह हाल तो मालूम था परंतु मौक़ा ढूंढ़ती थी कि
ऐसे ढब से कहना चाहिये कि बुरा मालूम न हो एक दिन बहुत
रात गये अम्बिकादत्त आया और शायद बाज़ी जीत कर आया
था इससे खुश था आते ही साथ भोजन मांगा गुलबासा मिश्रायन
खाना गर्म करने दौड़ी गई अम्बिकादत्त समझा अभी मिश्रायन
पका रही है पूछा मिश्रायन अभी तक तुम्हारी डेगची चूल्हे से नहीं
उतरी सरस्वती ने कहा कई बेर उतर कर चढ़ चुकी है ऐसे समय
तुम भोजन किया करते हो कि रसोई ठंढी होकर मिट्टी हो जाती
है तुम ऐसा उपाय क्यों नहीं करते कि सबेरे भोजन कर लिया
करो तुम्हारे इन्तिज़ार में अम्मा जान को भी नित क्लेश होता
है अम्बिकादत्त ने कहा अये तुम लोग मेरे आसरे बैठे रहते
हो मैं तो जानता था कि तुम भोजन कर लिया करते होगे सर-
स्वती ने कहा पुरुषों के पहले स्त्रियों को खाना कब उचित है
अम्बिकादत्त ने कहा दो चार दिन की बात हो तो कट सकी है
इसमें हठ की क्या बात है तुम भोजन कर लिया करो सरस्वती
तो उस समय चुप हो रही परन्तु कोठे पर अम्बिकादत्त ने फिर
आप छेड़ कर इसी बात को कहा सरस्वती ने कहा आश्चर्य की
बात है तुम अपने दस्तूर के खिलाफ़ नहीं कर सक्ते और हम
लोगों से चाहते हो कि हम अपने दस्तूर के खिलाफ़ करें तुम्हीं
सबेरे चले आया करो अम्बिकादत्त ने कहा भोजन पाने के पीछे
मेरा बाहर निकलने को जी नहीं चाहता और मुझको नींद
देर को आती है घर में बेकाम कार्य पड़े २ जी घबराता है इस-
लिये मैं देर करके आता हूं कि भोजन के पीछे सो रहूं सरस्वती
ने कहा कि काम कार्य तो अपने आधीन है अगर आदमी अ-
पने वक़्तों का बन्दोबस्त करे तो [illegible] एक पढ़ने का

शग़ल क्या कम है मैं अपने बड़े भाईको देखाकरती थी कि आधीरात तक किताब देखते और जिसदिन संयोग से सो जातेतो बड़ा पछतावकियाकरतेथे तुमपढ़नेमें कममनलगाते हो इसकारण बेशग़लीसे तुम्हारा जीघबराताहै अम्बिकादत्तने कहा और क्यामनलगाऊं दोनोंवक्त सबकापढ़लेताहूंयादकर- लेताहूंसरस्वतीनेकहा नहीं मालूम तुमकैसापढ़नापढ़ते हो जिसदिनमियांयनकाहिसाबकिताबहोताथा औरअम्माजान तुमसे हिसाब पूछतीथीं तो तुम बतानहीं सक्तेथे मुझकोशर्म आतीथी अम्बिकादत्तने कहा हिसाब दूसरी चीज़हैमैंअरबी फ़ारसीपढ़ताहूं उससे और हिसाबसे क्या तअल्लुक़ सरस्वती ने कहा पढ़ना लिखना इसी वास्ते होताहै कि अपना कोई काम अटका नरहे बड़े भाई अरबी फ़ारसी बहुत पढ़गये हैं परन्तु नौकरी नहीं मिलती अब्बा कहा करतेहैं कि जबतक हिसाब किताब और कचहरीका काम न सीखोगे नौकरी का ध्यान मतकरो छोटाभाई रामदत्त मदर्सेमें पढ़ताहै और हिसाब किताबमें बड़ेभाईसे जियादा होशियार है और अब्बा उससे बहुत खुशहैं और कहतेहैं कि चार वर्ष मदर्सेमेंऔर पढ़ो तो तुमको कहीं नौकर करादेंगे अम्बिकादत्त ने कहा मदर्सेमें कमउमरआदमीको भरतीकरतेहैं मेरी उमरअधिक है सरस्वतीने कहा मदर्सेमें जाने पर क्या है यों शहर में क्या सिखानेवाले नहीं है जितना समय तुम खेलकूदमें गंवातेहो पढ़ने लिखनेमें लगाओ अम्बिकादत्तने कहा खेलक्या मैं दिन रात खेलताहूं कभी घड़ी कभी दो घड़ीको बैठगयासरस्वती ने कहा खेलना अफ़यून कीभी चाटहै थोड़ेसे शुरूअ होकर बढ़तीजातीहै इहांतक कि लत परजातीहै फिर छूटनाकठिन होताहै पहलेतो ये खेल दोषहैं दूसरे मनुष्योंको पढ़ने और कामकी बातें हासिल करनेसे रोकतेहैं कामकार्य के मनुष्य ऐसे खेल नहीं खेलते निकम्मे लोग अलबत्ता इसप्रकार दिन काटतेहैं इनखेलोंमें जैसा दांवजीतनेसे मनप्रसन्नहोताहै हा- रनेसे दुःखभी बहुत प्राप्तहोताहै और जिसप्रकार उस आनन्द

की कुछ जड़ नहीं होती उसप्रकार यह दुःख भी नाहक का होताहै और बहुधा खेलते २ आपसमें मुफ़्तकी तकरार भी होजातीहै मेरी सलाहमानो तो इन खेलोंको बिलकुल छोड़ दो लोगतुम्हारे मुंहपरतो कुछनहीं कहते परन्तु पीछे हंसते हैं परसोंकी बातहै कि तुमको कोई आदमी बुलानेआया था सिपाहनने अन्दरसे जवाबदिया कि बाहर गयेहैं उस पुरुषने अपने साथवालेसे कहाकि मियां इसाफ़रख़ूश रं कीके मकान पर चलोवहां शतरंजके जमघटमें मिलेंगे अब्व जानकाशहर में बडानामहै ऐसीजगह जाने से नाम बदहोताहै और मैंने अब्बाजानको अफ़सोसकरते सुनाकि हाय हमारे भाग दो लड़कों में कोई ऐसा न हुआ कि उसको देखकर जी प्रसन्न होता परमेश्वरीदत्तको कुछ लिखाया पढ़ाया था वह अपनी नौकरीके पीछे ऐसा पड़ाहै कि लिखना पढ़ना सब भूलगया है ये छोटे साहबहैं इनको खेलकूदसे छुट्टी नहीं बल्कि हमारे अब्बाकोभी किसीने इसकी खबर करदी मुझसे पूछते थे मैंने कहा सब झूठहै अगर ऐसी बात होती तो मुझको मालूम होता सरस्वती की नसीहत ने अम्बिकादत्त पर बहुत असर किया और उसने खेलना बिलकुल छोड़दिया अब पहिले के बनिस्बत अरबी फ़ारसीपर ज्यादह मेहनत करनेलगा और एक दस्तूरसे मदर्सेके बाहर हिसाब किताब वग़ैरहभी सीखना आरम्भ करदिया परमेश्वर ये समयमें बड़ी बर्कत दीहै उसको बंदोबस्त के साथ बरतने से अम्बिकादत्त की इस्तादाद अरबी और फ़ारसी की बहुत दुरुस्त होगई और हिसाब रयाज़ी कीभी कई किताबें निकल गईं अम्बिकादत्त तोइधर मसरूफ़ रहा सरस्वतीने एक और कारखाना इसी बीचमें जारी किया इस महल्ले में पण्डित ईश्वरी प्रसाद बड़े नामी गिरामी आदमी थे ईश्वरी प्रसाद तो सरकार महाराजा बलिरामपुरमें दीवान थे परन्तु घरबार लड़के बच्चे सब इसी महल्लेमें रहतेथे मकान बाग़ नौकर चाकर बड़ा कारखाना था पण्डित ईश्वरीप्रसादके छोटे भाई अयोध्याप्रसादमहाराजा

कपूरथला के सरकार में मुद्दत तक मुख़्तार कुल रहे जब उस सरकारमें दीवान रामयशके बड़ा अख़्तियार हुआ मसलहतवक़्त समझकर नौकरी छोड़कर घरचलेआये परन्तु लाखों रुपया घरमेंथा नौकरी की कुछ परवाह न थी हजारों रुपये की रियासत शहर में खरीद करली थी सैकड़ों रुपये माहवारी किराया चला आताथा बड़े शान से रहतेथे ड्योढीपर सिपाहियों का गारद अंदर बाहर तीस चालीस आदमी नौकर घोड़ा हाथी पालकीबग्घी सवारीको मौजूद अयोध्या प्रसाद कीदो बेटियां थीं गुलाब कुंअरि और महताब कुंअरि गुलाबकुंवरि पण्डितचंडीदत्तके बेटेसेब्याहीगईथी परन्तुब्याहके पीछेसे नामवाफ़क़त कि ससुरालमें आना जाना बन्दहोगया महताबकुंवरि की मंगनी पण्डित रामप्रसाद दीवान महाराजा रीवांसे ठहरी हुईथी इन लड़कियोंकी मौसी गुलबास कुंअरि उस महल्लेमें रहतीथी जिसमें सरस्वतीका मैकाथा उस महल्लेमें तो सरस्वती की लियाक़त का शुहराथा गुलबास कुंअरि सरस्वतीके हालसे खूब वाक़िफ़थी कई मर्तबह उसको देखाथा गुलबास कुंअरि अपनी छोटी बहिन महताब कुंअरि की मातासे मिलनेको आई संसारका दस्तूरहै कि कोई आदमी दुःखसे खाली नहीं और यह बात कुछ परमेश्वर की तरफ से है जो हरतरफ से आनन्द होतो आदमी परमेश्वरको भूलकरकेभी याद न करे और न अपनी तईं परमेश्वरका दास समझे गुलबास कुंअरिकी छोटी बहिन फूल कुंवरि को संसार के सब आनन्द प्राप्तथे परन्तु लड़कियों के तर्फ़से दुखी रहा करती थी उधर गुलाबकुंवरिब्याह बरात होने के पीछे घर आकर बैठी थी इधर महताब कुंअरि के मिजाज की बुनियाद ऐसी बुरी पड़ी थी कि घर में सब से बिगाड़था न माताका लिहाज न बहिन का दबाव न पिता का डर नौकरहैं सो आप चिल्ला रहेहैं चेरियां हैं सो पनाह मांगतीहैं ग़र्ज कि महताब कुंअरि सब घरको सिरपर उठाये रहती थी गुलबास कुंअरि के आने से चाहे कि बड़ी मौसी

समझकर महताब कुंअरि घड़ी दो घड़ी को चुप होकर बैठ जाती क्या जिकिर गुलबासकुंअरि को पालकीसे उतरते देर नहीं हुई थी कि लगातार दोतीनफ़र्यादें आईं बसंती रोते हुये आई कि देखिये छोटीसाहबज़ादी ने मेरा नया दुपट्टा फार २ कर डाला लल्ली ने शोर मचाया कि महताब कुंअरि ने मेरे गलेमें चकत्ता भरलिया मेहरिया बलबलाउठी कि मेरा कान नोच लिया दाई चिल्लाई कि देखिये मेरी लड़की के ऐसे जोर से लकड़ी मारी कि बाजूमें बद्धी पड़गई रसोई से मिश्रायन ने दुहाईदी कि देखिये पतीलियोंमें मुट्ठीभर २ कर राख झोंक रहीहै गुलबासकुंअरिनेपुकारा किमहताबोयहांआवोमौसी की बोली पहिचान कर महताबकुंअरि चली तो आई परंतु सलाम न प्रणाम हाथों में राखपावों में कीचड़ इसी प्रकार दौड़ मौसी से चिमट गई मौसीने कहा महातावो तुम बड़ी शोखी करनेलगी महताबकुंअरिने कहा इसीलल्ली चुड़यलने फ़र्याद की होगी यह कह कर मौसी के गोद से निकल लपझपकर लल्लीका शिर नोचखसोट लिया बहुतेरी मौसी, ऐं २ करती रही एक न सुनी तब गुलबासकुंअरि अपनी बहिन से बोली कि फूलकुंअरि इस लड़की को परमेश्वर के लिये तो दुरुस्त करो यह बेपढ़े दुरुस्त नहीं होगी फूलकुंअरिने कहा मैंमहीनों से एकस्त्री कीतलाशमेंहूं जोपढ़ना लिखना सिखलावे परनहींमिलती गुलबासकुंअरिनेकहाकितुम्हारे महल्ले में पंडित शंकरदत्त की छोटी बहू लाखलियों में पढ़ी लिखी एक स्त्री है फूलकुंअरि ने कहामुझको आजतक खबरनहीं देखो मैं अभी आदमी भेजती हूं यह कहकर अपने घर की मिश्रायन को बुलाया और पूछा कि कोई पंडित शंकरदत्त इसमहल्ले में रहतेहैं बहिन कहतीहै कि उनकी छोटी बहू बहुत पढ़ीलिखीहै उनको लिवालाओ अगर नौकरी करें तो खाना कपड़ा दशरुपयेमहीना देनेको हमहाजिरहै और जब लड़की पढ़लिख जायगी और अदब क़ायदा सीखजायगी तो दमाहेके अलावा हम उनको खुश करदेंगी मिश्रायनने शंकर

दत्त के घरमें आई और अम्बिकादत्तकी माता से पूछने लगी कि शंकरदत्तकी स्त्री तुम्हीहो गुलबासा मिश्रायनने कहा हां वहीहैं आवोबैठो कहांसेआईं मिश्रायनने कहातुम्हारीछोटी बहू कहांहैं अम्बिकादत्तकीमाताने कहा कोठेपरहैं मिश्रा-यनने पूछा मैं उनकेपास ऊपरजाऊं गुलबासा ने कहा आप अपना पता निशान बताइये बहू यहां आजांयगीं मिश्रायनने कहा मैं पंडितअयोध्या प्रसाद के घरसे आईहूं अम्बिकादत्त की माताने सबछोटे बड़ोंकी खैरसल्लाहपूछी और मिश्रायन सेकहा बहूसे क्याकामहै मिश्रायनने कहाबहूआवैं तो कहूं जोकि सरस्वतीके नीचे उतरनेका समयभी आगयाथा थोड़ी देर पीछे सरस्वती नीचे उतरआई सरस्वतीको मिश्रायन ने देखाऔरबात चीतको तोनौकरोंकेवास्ते कहतेहुये संकोच किया परन्तु बातों२मेंयहकहा कि फूलकुंअरिको अपनी छोटी लड़कीका पढ़ाना मंजूरहै उनको बड़ीबहिनगुलबासकुंअरि ने आप का जिकिर किया तो फूलकुंअरि ने मुझ को भेजा सरस्वतीने कहा दोनों बीबियोंको मेरीतर्फ़से प्रणाम कहना और यहकहना जो कुछ भला बुरा मुझको आता है उसके सिखाने पढ़ाने में किसी प्रकार संकोच नहीं इसवास्ते कि आदमी इसीलिये पढ़ताहै किदूसरेको फ़ायदा पहुंचावै और गुलबासकुंअरि को तो मालूम होगाकिमैं अपनेमैकेमें कितनी लड़कियों को पढ़ातीथी और मेरा जी बहुत चाहता है कि फूलकुंअरिकी लड़कीको पढ़ाऊं परंतु क्याकरूं नतो फूलकुंअरि लड़कीको यहांभेजैंगी और नमेराजाना होसक्ताहै मिश्रायन ने दमीहेकातो साफ़नामनलिया परन्तुदबी जबानसे कहाकि फूलकुंअरि सब प्रकारकेखर्च पातकी जिम्मेदारी भी करनेको मौजूदहैं सरस्वतीनेकहा यह उनकीकृपाहै और उनकीरि-यायतपर यहीबात शोभितहै परन्तुउनके पड़ोसमें हमग़रीब भीपड़ेहैं परमेश्वरमंगा भूखानहींरखताहै बेदामोंकी चेरीबन करसेवा करनेको मैंहाजिरहूं और दमीड़ादार पढ़ानेवाले दरकार हें तो शहरमें बहुत मिलेंगे इसकेपीछे मिश्रायन ने

सरस्वतीका हालपूछा और जब यह सुना कियह तहसील-दारकीबेटी है और पंडितशंकरदत्तभी पचास रुपये महीनेके नौकरहैं तो मिस्रायनको बहुतलज्जाहुई नौकरी का इशारा नाहक किया परन्तु सरस्वती की बातचीत सुनकर मिस्रायन लट्टू होगई हरचंदअमीरी घरकेकार खाने देखेहुये थे परंतु सरस्वतीकेसाफ़ और मीठे बचन सुनकर मोहित होगई और मअज़िरतकी कि बीबी मुझको माफ़करना सरस्वतीने कहा क्यों तुममुझको कांटोंमें घसीटतीहो पहिले तो नौकरी कुछ गालीनहीं ऐब नहीं दूसरे अनजानमें जो तुमने पूछा क्याडर हैग़र्ज़ मिस्रायन बिदा हुई और घरमें आकर कहा कि बीबी शंकरदत्तकी बहू लाख पढ़ी हुई स्त्रियोंमें एक स्त्रीहै जिसकी सूरत देखने से आदमी बनजाय पास बैठे मनुष्यता प्राप्त हो छांह पड़जानेसे गुण सीखे और हवा लगजानेसे अदब पकड़े नौकरी करनेवाली नहीं तहसीलदारकी बेटीहै रईस आगरे के मुख़्तार की बहू घरमें मिस्रायन और टहलुई नौकर हैं दालानमें चांदनी बिछीहै सोज़नीगाव तकिया लगीहै अच्छे बिधिसे जीवनकर रहीहैं भला उनको नौकरीकी क्यापरवाह है गुलबास कुंअरिबोली सचहै फूलकुंअरि तुमने मिस्रायनको भेजातोथा परंतु मुझको भरोसा न था किवे नौकरी करेंगी मिस्रायनने कहा परंतु वे तो ऐसीअच्छी आदमीहैं किसेंतही पढ़ानेसे राज़ीहैं फूलकुंअरिने पूछा कियहां आकर पढ़ायेंगी मिस्रायनने कहाभलाजो नौकरीकी आसनहीं रखता वहयहां क्यों आनेलगा-फूलकुंअरि ने कहा फिर लड़की वहां जाया करेगी गुलबासकुंअरिने कहाइसमें क्याडरहै दोक़दमपर तो घर है और शंकरदत्त को क्या तुमने ऐसा बेइज़्ज़त समझा है हमारे भाईके ससुरेके चचेरे भाइयोंसे हैं फूलकुंवरिने कहा फिर तो हमारे जात पांत की हैं गुलबासकुंवरिने कहा तो परमेश्वर न करे कुछ ऐसीवैसी नहीं पहिले इनकाकाम खूब बनाहुआ था जबसे रईसबिगड़ा बिचारे ग़रीब होगये फिर भीदोएक आदमी सदा घरमें नौकर रहते हैं फूलकुंवरि ने

कहा अच्छा महताबकुंवरि वहीं चली जाया करेगी अगले दिन गुलबास कुंवरि और फूलकुंवरि दोनों बहिन महताब-कुंवरि को लेकर सरस्वतीके घर आईं गोकि सरस्वतीके यहां ग़रीबी सामान था परंतु उसके इन्तिज़ाम और बन्दोबस्त के ढंगसे उन दो स्त्रियोंका वह आदरभाव हुआ कि सबप्रकार की वस्तु बैठे२ प्राप्तहोगईं दो चार प्रकारका इतर, चौघड़ा, इलाइची, चिकनी डली, बातकी बातमें सबआगया अच्छे २ मज़े की गिलौरियां तैयारहोगईं दोनों बहिनों ने खाईं और सरस्वती से कहा कि कृपा करके इस लड़की को मनसे पढ़ा दीजिये सरस्वतीने कहा पहिले तो आप मुझको क्या आता है परंतु दो चार अक्षर बड़ोंकी कृपासे आतेहैं उसकेबतानेमें अपनी शक्तिभर उठा न रक्खोंगी चलते हुये फूलकुंवरि एक अशर्फ़ी सरस्वती को देनेलगी सरस्वतीने कहा कि इसकीकुछ ज़रूरत नहीं भला यह क्योंकर हो सक्ता है कि मैं पढ़वाई आपसे लूं फूलकुंवरि ने कहा भगवान २ करो पढ़वाई देने के वास्ते हमारा क्या मुंहहै आज महताबकुंवरि विद्याआ-रम्भ करेगी इसकी मिठाई मंगाकर बच्चोंको बांटदीजिये सर-स्वती ने अशर्फ़ी फेरदीकहा एकअशर्फ़ीकी मिठाई क्याहोगी सेर आधसेर मिठाई बांटनेको बहुतहै यह कहकर गुलबासा मिश्रायन की तर्फ़ इशाराकिया वह कोठरीमें से एक थाली भरकर बताशे निकाल लाई सरस्वती ने गणेश का पूजन करके थोड़े२ बताशा गुलबास कुंअरि और फूलकुंअरि को दिये और फिर भरीहुई थाली गुलबासा को उठादी किबच्चों को बांटदो फूलकुंअरिने कहा अच्छा तुमने मुझको शर्मिन्दा किया सरस्वती ने कहा कि हम बिचारी ग़रीब किस लायक़ हैं परन्तु यहां जो कुछहै वहभी आपहीका है अलबत्ता मेरा देना वही है कि महताब कुंअरि को पढ़ादूं भगवान वह दिन करे कि मैं आपसे सुर्ख़रू हूं ग़र्ज़ लल्लोपत्तो की बातें हो हुआकर गुलबासकुंअरि और फूलकुंअरि चली गईं और महताब कुंअरिको सरस्वतीको सौंपगईं सरस्वतीनेजिस

ढंगपर महतावकुंअरि का पढ़ाया जो वह विस्तार पूर्वक लिखा जाय तो एक अलग पोथी बनजाय परंतु संक्षेप हाल इस जगह लिखा जाता है कि महातावकुंअरि के बैठते ही महल्लेका महल्ला टूटपड़ा जिसको देखो अपनी लड़की को लियेचलाआताहै परंतुसरस्वतीने भले आदमीकीलड़कियोंको चुनलिया और कमीनों की लड़कियों को इसबहाने से टाल दियाकिमैं आयदिन अपनी माताकेघरजाती रहतीहूं पढ़ना पढ़ाना जब तक जमकार न हो बेफ़ायदा है फिर भी बीस लड़कियां पढ़नेबैठीथीं परंतुसरस्वतीको किसी लड़की से लेने लिवाने की सौगन्ध थी एक दो रुपिया इनका लड़कियों पर खर्चहोजाता था सवेरेसे दोपहर तक पढ़ना होता था और फिर भोजन के लिये चार घड़ी की छुट्टी इसके पीछे लिखना छः घड़ी दिनरहेसे सीना सीने पिरोने का काम गुंजाथी था इसकारण कि न सिर्फ़सीना सिखलायाजाताथा बल्कि अनेक प्रकार की जाली काढ़ी जाती थी अनेक भांति की सिलाई होतीथी मसाला बनाना और टांकना जाली काढ़ना पहले तो सरस्वतीको सब सामग्रीके इकट्ठाकरने में दशरुपया खर्च हुआ परन्तु फिर तो उसीकामसे बचतहोने लगी जो काम लड़कियां बनाती गुलवासा उसको चुपके से बाजार में बेंच-लाती इसप्रकार धीरे २ पाठशालाकी एक रक़म जमाहोगई जो लड़की गरीबकंगालहोती उसीरक़मसे उसके वस्त्रबनाये जाते पुस्तकें मोललेदी जातीं लड़कियोंके पानी पिलाने और पंखाझलनेके लिये एकखवासी नौकरथी और मदर्सेकी रक़म से उसकी तलब मिलती थी लड़कियों का यह हाल था कि और स्त्री पढ़ानेवाली के पास लड़कियों का जाते हुये प्राण निकलताथा परन्तु सरस्वतीकी विद्यार्थिनी उसपर मोहित थीं अभी बहुत सोके नहीं उठी आपसे आप आने शुरूअ हुईं और पहर रातगये तक जमअ्रहती थीं और घरको बे मन जातीथीं इसकारणकि सरस्वती सबके साथ मनसे प्यारकरती थीं और पढ़ानेका क़ायदह ऐसा अच्छारक्खाथा कि बातों २ में

तालीमहोती थी न यहकि सवेरे ईं ईं का चर्खाचला तो दिन छिपेतकबन्दनहीं होता जिसप्रकार सरस्वतीको उसके बापने पढ़ाया था उसीप्रकार सरस्वती अपने विद्यार्थिनियों को पढ़ातीथी पस ये लड़कियां शागिर्द की शागिर्द और सहेलीकी सहेलीथीं जबकिसी लड़कीका व्याहहुआ मदर्से की रक़मसे उसको थोड़ा बहुत गहनादियाजाताथा अगर सरस्वती अपने पाठशालाको बढ़ाना चाहती तो सारे शहर की लड़कियों के पाठशाला उजाड़ होजाते सैकड़ों स्त्रियां अपने लड़कियोंके हेतुचिरौरी और बिनतीकरतीथीं और आप लड़कियां दौड़ २ आतीथीं इसकारण कि और पाठशालोंमेंदिन भरकी क़ैद पढ़ानेवालियोंकी हुक़ीपढ़ना कममारखाना और कामकरना बहुत दिन भरपढ़ें तो सिर्फ़ दो अक्षर सबेरे से संध्यातक मामूली मार और जहां चुपकी और पढ़ानेवाली की नज़र पड़ गई आफ़तआई और कामको पूंछो तो तड़के आने के साथ घरमें झाड़ूदी बिछौना तहकिये और चार २ पांचने मिलकर कब्बल भारी बोझल चारपाइयां उठाईं और फिर उस जगह बिछौना बिछाकर पढ़ने बैठीं जिससमय मुंह से आवाज निकली पढ़ानेवाली औरतने बनैठी फेंकनीआरम्भ करदी और दो चार जो किछ अच्छी का मुंह देखकर उठीथीं कामधंधे में लगगईं किसी ने पढ़ानेवाली औरत का लड़का गोद में लिया बोझके मारे कूला टूटाजाता है परंतु मार के डरसे गर्दन पर बलासवार है और समय टालती फिरती हैं बैठीहुई लड़कियोंकी आवाज़ कानमें चलीआतीहै दिलहैकि अन्दरही अन्दरसहमाजाताहै मारके आवाजसे यह मुसीबत भली मालूमहोतीहै किसी ने रातके जूठे बर्तन माजने शुरूअ किये कि घट्टे पड़ पड़गयेहैं और राख्ने रह रहजाते हैं परंतु छोटी बहिन पिटरही है और चिल्लारही है कि अच्छी बी मैं मरगई अच्छीबी परमेश्वरके लियेछोड़ दोहाय री २ जय अम्मा जय बाबा अच्छीमैं तुमपर वारीगई और दीदी हैकि झांय झांय जल्दी २ बर्तन माजरहीहैं इनकामों से फ़ुरसत हुई तो

मसाला पीसने आटा गूंधने आग सुलगाने का समय आया
फिर दो पहर को पंडितायन हैं कि सो रहीं हैं और मालूम
नहीं पंखाझल रहीं हैं और दिलमें इआसांग रही हैं कि पर-
मेश्वर ऐसी सोयें कि फिर न उठें गर्ज़ और मदरसोंमें यह सुती-
बत रहती है सरस्वती के यहां नबार न धाड़ बड़ा डर यह था
कि सुनो तुम अपना सबक़ याद नहीं करती तो तुम्हारे सबब
से हमारी पाठशाले का नाम बद होता है मैं तुम्हारी माता को
बुलाकर कहदूंगी बी तुम्हारी लड़की यहां नहीं पढ़ती तुम
किसी दूसरी पाठशाले में पढ़वाओ इतना कहना था कि ल-
ड़कीका दम निकला फिर सबक़ है कि जबान पर याद है या
जिसने सबक़ याद नहीं किया उस से कहा कि आज तुमने
सबक़ याद नहीं किया और लड़कियां दोपहर के बाद सियेंगी
और तुम पढ़ना यह कहना था कि उसने जल्दी २ सबक़ याद कर
लिया न यहां पाठशाला में झाड़ू देनी है न बिछौने उठाने हैं
न चारपाइयां ढोनी हैं न बर्तन मांजने न किसी की सेवा करनी
है बल्कि इन वाहियात कामोंपर एक टहलुई नौकर है इस पाठशाले
में पढ़ना लिखना सीना तीन काम लड़कियों को सिखलाये
जाते हैं इन्द्रकुंअरि एक बीबी महल्ले में रहती थी चांदकुंअरि
उसकी बेटी कोई दसवर्ष की होगी उसचांदकुंअरि को पढ़ने
और लिखने और सीने पिरोने का बड़ा शौक था इन्द्रकुंअरि यह
चाहती कि चांदकुंअरि सारे घर में झाड़ू दे बिछौने बर्तन मांजे
ऐसे कामोंमें चांदकुंअरि का जी न लगता माता के कहने सुनने
से करती देती मगर बे मनसे इन्द्रकुंअरि जो एक दिन चांद
कुंअरि से नाराज़ हुई तो साथ लेजाकर सरस्वती की पाठशाला
में बैठा आई और कहा बीबी यह लड़की बड़ी निकम्मी है जिस
कार्य को कहती हूं टकासा जवाब दे देती है इसको ऐसा
अदब सिखावो कि घर के कामकाज पर इसका जीलगे सरस्वतीने
जो देखा तो चांदकुंअरि को अपने ढबका पाया उधर चांद-
कुंअरि को पढ़ाने वाली अपनी मर्ज़ी के अनुसार मिली नूर के
तड़के आती तो दो पहर को भोजन करने जाती भोजन खाया

और भागी पानी पाठशालामें आकर पीती और तीसरे पहर की आई२ कहीं चारघड़ी रातगये जाती कभी२ इन्द्रकुंअर इसकी सुधलेने पाठशालेमें आती तो कईबार उसकोलड़कियों के साथगुड़ियां खेलते देखा दो चार बार छिंडकुलिया पकाते एकदिन चार घड़ी रातगई होगी चांदकुंअरि कोजानेमें देर हुई इन्द्रकुंअरि उसको लेनेआई तो क्या देखतीहै कि यमुना कहानियां कहरहीहै और पाठशालेकी सब लड़कियां आस पासबैठी और सरस्वती भी लड़कियों में बैठी हुई कहानियां सुन रहीहै तबतो इन्द्रकुंअरि का जी जलकर खाकहोगया और बोली वाह बीबी अच्छा तुमने लड़कियों को नाश कर रक्खाहै जब कभी मैं चांदकुंअरिको देखने आई कभी इसको मैंने पढ़ते न पाया पाठशाला क्याहै यह तो अच्छा खेलघर है तभी तो लड़कियाँ दौड़२ आतीहैं सरस्वतीने कहा किबीबी जो तुम्हारी मर्जीके अनुसार तुम्हारी लड़कीकी तालीमनहीं होती तो तुमको अख्तियारहै अपनी लड़कीको उठालेजाओ परंतु पाठ शालेमें वे अर्थका दोष मतलगाओ भला मैं तुमसे पूंछती हों कि चांदकुंअरिने बाईजी की पाठशाला में कितने दिन पढ़ा इन्द्रकुंअरिने कहा तीनमहीने सरस्वतीने पूंछाबा-ईजीके यहां चांदकुंअरिने क्यापढ़ा इन्द्रकुंअरिने कहाअक्षर अभ्यास सरस्वतीने कहा तीन महीने में अक्षर अभ्यास पढ़ा और यहां चारमहीनेसे तुम्हारी लड़की पढ़तीहै चौथाईभाग विष्णु सहस्त्र नाम और दो पुस्तक नागरी यहां पढ़ चुकी है बाई जी की पाठशाले से कितना अधिक होता है और जब चांदकुंअरि यहांआईथी तो कालीलकीर तक इसकोखींचनी नहीं आती थी अब नाम और थोड़ी बहुत चिट्ठी लिख लेती है कि साथ बमूजिब अक्षरको बूझनहीं होते बीस तक पूरी गिनतीनहीं जानतीथी अब पन्द्रहका पहाड़ा यादकरती है सीना कुछनहीं आता था अब इसके हाथ का बखिया देखो लाइयो चांदकुंअरि वह कुरती जिसमें तूने बखियाकिया है बेग अपनी माताको दिखला चांदकुंअरि ने जिसमें बखिया

कियाथा और टोपियां जिसमें चमेलीका जालकिया था और कामदानी आदि जो काढ़ीथीं दौड़ी२ उठालाई और अपनी माताको दिखाया इन्द्रकुंअरि एक२बातके दुसर२ उत्तर पाकर हक्का बक्कासी रहगई सरस्वतीने कहा जो बी कुछ न्यावभीहै चार महीनेमें तुम्हारी लड़की और क्या सीखलेगी इन्द्रकुंअरि ऐसी खिसियानी हुई कि बड़ों पानी पड़गया अब सरस्वती के सामने आंख नहीं मिलासक्ती थी इन्द्रकुंअरि के आजाने से यमुना की कहानी तो रहगई और सबलड़कियां इसके ओर घूर२कर देखनेलगीं इन्द्रकुंअरि ने कहा बीबी मुझको इसकी क्या खबर थी चांदकुंअरि दिनभर तो यहां रहती है रातको ऐसी देरकर जातीहै कि भोजन खाया और सोरही मुझको इससे पूछना गाछना कभी पड़ानहीं दो चार फेरजो मैं इधर को आनिकली तो कभी गुड़िया खेलते पाया कभी छिड़कुलिया पकाते कभी कहानियांसुनते इससे मुझकोख्यालहुआ कि यह अपना समय खेल कूदमें खोती है अबतो मेरे मुंह से एक बात निकलगई क्षमाकीजिये सरस्वतीनेकहा तुम्हारा संदेह भी अनुचित नहीं था परन्तु मैं इन्हीं खेलकी बातोंमें इन को कामकी बातें सिखाती हूं छिड़कुलियोंमें लड़कियां अनेक प्रकारके भोजन बनानेकी युक्ति सीखतीहैं मसाले का अन्दाज नमक की अटकल स्वाद की पहिचान इनकोआती है क्यों चांदकुंअरि परसों तुम लड़कियोंने मिलाकर कितना जर्दा पकाया था उसकी युक्ति और सबहिसाब कितना हो तो हमको सुना दो चांदकुंअरिने कहा हिसाब तो यमुना ने अपनी पुस्तकमें लिखरक्खाहै परन्तु युक्तितो आपकीआज्ञानुसार मैंने खूब ध्यान लगाकर देखली है और अच्छे प्रकार मेरे समझ में आगई है सेर भर चावल घे पहिले उनकोएक तसले पानीमें भिगादिया धेलेकी हरसिंवारकी डंडियां मंगवाईं तीन पैसेभर मिलीथीं उनको कोई डेढ़सेर पानीमें जोश किया जब उबाल आगया और रंगत कट गई तो छानकर अरक में चावल भिगोकर डालदिया चावल जब अधकचड़े

होगये और एक कनी रहगई तो चावलोंको कपड़ेपर फैला दिया कि पानीभर निकल जाय फिर आध पावघी डेगचीमें लौंगों का बघार देकर कड़ कड़ाया और चावलछोड़ दिये ऊपरसे चावलोंके बराबर शक्करडालदी औरअटकलसे इतना पानी डालदिया कि चावलों की एक कनी जो रहगई थी गलजाय फिर एक छटांक किश्मिश घीमें कड़कड़ा जबफूलगई चावलों में छोड़ दीं और ऊपर तले अंगारे रखकर दम दे दिया सरस्वतीने चांदकुंअरिसे कहा युक्तितो दुरस्तहै परन्तु चावलों को जो मैंने देखाथा तो बैठगयेथे मालूमहोताहै कि तुमने कपड़े पर फैलाकर ठंढे पानीसे उनको धोया नहींथा फिर सरस्वती इन्द्रकुंअरिकी ओर देखकर बोलीकि क्योंजी जर्दातोतुम्हारी लड़कीनेठीकपकाया यहसबहिंडकुलियाका कारणहै फिर यमुनासे कहा तुम अपने जर्देका हिसाब तो सुनाओ यमुनाजो हिसाबकी बहीउठालाई कहाभाभीजान छःसेरी चावल सेरभर पौनेतीनआनेके और एकपैसेकी हर सिंघारकीडंडियाँ और लौंगेंदोसेरकाघीहै पौनपाव मंगाया आधपाव बघारनेवक्त डाला और छटांक भरकिशमिश कड़-कड़ाकर दमदेतेवक्त डेढ़आनेका घीहुआऔर चौसेरी शक्कर सेरभर चारआनेकी एक पैसेकी किशमिश कुलपौनेग्यारह आनेपैसे खर्चहुये दसलड़कियोंकासाझाथा पौने दोआने तो मेरेथे और एक२आना और लड़कियों का सरस्वती ने कहा तुमने हिसाबमें धोखाखायायमुना सोचीतो कहा भाभीजी चावलोंमेंकौड़ियां बचीं बनिये ने हजमकीं अय हय डंडियां और लौंगेंउसमेंआजातीं तो एकपैसाबचता गुलबासोमिआ-यन जा तू बनिये से कौड़ियां लेआ सरस्वती ने कहा अय हय क्या करती हो कौड़ियों का सुआ मिला परसों की बात अब कुछ न कह तुम्हारे भूलकी सजा है अब सरस्वती मह-ताबकुंअरि से बोली जर्दे की युक्ति और लागत तो मालूम हुई भला सेरभर जर्दा तुम सबने क्या किया महताबकुंअरि ने जवाब दिया लखोले दो थाले भरकर परमेश्वर के नाम दे

दिये फिर छः तश्तरियां भरी गईं दश लड़कियों में से दो२ ने एक२ तश्तरी ली और छठी तश्तरी में मैं अकेली थी सरस्वती ने पूछा क्या तुमने दोहरा भाग लिया महताबकुंअरि बोली नहीं मेरी तश्तरी आधी थी सबसे पूछ लीजिये सरस्वतीने कहा फिर तुम बिरादरी से अलग क्यों रहीं महताबकुंअरि तो चुप हुई चांदकुंअरि ने कहा इनको सबके साथ खाते घिन आती है महताबकुंअरिने कहा घिनकी बात नहीं है मैं सबसे पीछे आई इससे अकेली रहगई आप यमुना से पूछ लीजिये चांदकुंअरि ने कहा तुम तो अभी थोड़ी देर हुई मेरा जूठा पानी पीने पर लड़चुकी हो महताबकुंअरि ने कहा मैं लड़ीथी या इतनी बात कही थी कि जितनी प्यास हुआकरै उतना पानी लिया करो गिलास में जूठा पानी छोड़ देना ऐब की बात है फिर सरस्वती ने यमुना से पूछा कि वह पुस्तक जिसमें भोजन बनाने की युक्तें लिखीहुई हैं और जो तुमको मैंने दी है उसमें की सब भोजन बनाने की युक्तें तुम देखचुकी या अभी नहीं यमुना ने थोड़ी देर सोच कर कहा मैं अपनी समझ में वह सब भोजन बनवा चुकी हों बल्कि कई२ बेर नौबत पकवाने की आचुकी है और जितनी बड़ी२ लड़कियां हैं मामूली खानों की युक्ति सबको मालूम है इसके सिवाय पुलाव जर्दी मुतन्जन समोसे मीठे सलोने कसली बड़े दहीबड़े सुहाल सेव घीकी तलीदाल मोठ चौकड़ियां पापड़ बूंदानी तसमई हलवा सोहन पपड़ी नर्म अन्दसे की गोलियां वग़ैरह सब चीजैं बहुत बेर पक चुकी हैं और सब लड़कियों ने पकते देखी हैं बल्कि अपने हाथों पकाई हैं और महताबकुंअरिको तो चटनी और मुरब्बा से तो बड़ा शौक़ है ये चीजें जैसी वह बनाती है वैसा और लड़कियां कम जानती हैं इसके पीछे सरस्वती ने इंदरकुंअरि से कहा कि बीबी अब तुमको यहां के हिंडकुलियों का फायदा तो मालूम होगया होगा रात ज्यादह गई बाज़ लड़कियों के घर दूर हैं अगर कल आओ तो गुड़ियों की सैर भी तुमको दिखायें और शाम तक

रहे तो कहानियां भी सुनवायें सब लोग बिदा हुये अगले दिन जो इन्दरकुंअरि आई तो लड़कियों के कसीदे और लड़कियों के बिनेहुये गोटे लड़कियोंके मोड़ हुये गुलुबन्द लड़कियों की बनाई हुई टोपियां और यमुना लड़कियों के ब्योंत कियेहुये और सिये हुये मर्दाने जनाने कपड़े सरस्वतीने सब दिखाये जिसके देखने से इन्दरकुंअरि को बड़ा अचंभा हुआ इसके पीछे लड़कियों के गुड़ियों के घर दिखाये इन घरों में गृहस्थी का सब समान फर्श फरूश गाउतकिया उगालदान चिलमची आफताबा पिटारी पर्दा चिलमन छत गीरी पंखा मसेहरी पलंग हरप्रकार के बर्तन हरप्रकारका सामान आरा यश अपने ठिकाने से रक्खाहुआ था गुड़ियां ऐसीसजी हुईथीं कि आन मान जैसे ब्याह के घरमें पाहुन जमा है जब गुड़ियों के घरोंको देखचुकी तो सरस्वतीने इन्दरकुंअरि से कहा कि लड़कियों के सब खेलों में मुझको गुड़ियों का खेल बहुतप्रिय है इसके वसीले से लड़कियां सीना पिरोना कपड़ों की ब्योंत और गृहस्थी का बन्दोबस्त हर त्योहारोंके दस्तूर छठी खीर चटाई दूध चढ़ाई ब्याह बरात वग़ैरह की रीति रस्मों से वकफियत हासिल करती हैं तुम्हारी लड़की अभी थोड़े दिनोंसे आई हैं जो लड़कियां मेरी पाठशाला में बहुतदिनोंसे पढ़ीहैं जैसे मेरीनन्द यमुनाऔर महताबकुंअरिहैमैंसौगन्धखाकरकहती हूंजो इनकोइसीसमयकिसी बड़ेभरेपुरेघरका बन्दोबस्तसौंप दियाजाय तो परमेश्वर रक्खे ऐसाकरेंगी जैसे कोईबड़ीसयानी पढ़ीलिखी स्त्री करतीहै मैं तो पढ़नेपर ताकीद नहीं करती बल्कि इनको संसारके कामबतातीहूं जो थोड़ेदिनपीछे इनके शिरपर पड़ेगा यह कहकर सरस्वतीने महताबकुंअरि को बुलाया और कहा कि बुआ तुम्हारी गुड़ियोंका घर तो अच्छेप्रकार आरास्ता है परएककसरहैकि तुम्हारी गुड़ियों केपास रंगीनजोड़ेनहीमालूम होते शायदतुमको रंगनानहीं आता महताबकुंअरिने कहा रंग तो यमुनाने मुझको बहुत सखादिये हैं योंही नहीरंगे सरस्वती ने कहा भला बतओ-

सहीतो महताब कुंअरि बोली बसंत के रंग सुर्ख नारंजी, गुलनार, गुले,शफ़तालू; सर्दई, धानी ज़र्दा और जाड़ेके गेंदई कोयिय, उन्नाबी, काही, तेलिया, काकरेजी,सियाह, नीला गुलाबी, जाफ़रानी, कोकई, करंजी, और गर्मी के पियाजी, आबी, चम्पई, कपासी बदामी, काफूरी, दूधिया, खुशखाशी, फालसई सिंदूरिया, रंगतो और बहुतहैंमगर मैंने वहीबयान किये जोअकसरपहनेजातेहैं सरस्वतीने पूछा रंगोंके नामतो तुमने बहुतसे गिनवादिये भलायहतो बताओ यहसबरंगतुम को रंगनेआतेहैं महताब कुंअरिनेकहा मैंने उन्हींरंगों का नामलिय जो मुझको रंगनेआतेहैं सरस्वतीने कहाभलाबता- ओ सर्दई क्योंकर रंगतेहैंमहताबकुंअरिने कहा काहीकंद अच्छे गहरेरंगकीआधगजसंगवाइये और पानीखूबजोशकरके फिटकिरीडालदे ऊपरसे कंदका टुकड़ा डालकर हिला दिया फिटकिरीकीतासीरसे कंदकारंगकटजायगा पसउनमेंकपड़ा रंगलिया सरस्वतीने कहा भला और जो कंद न मिले मह ताबकुंअरि ने कहा तो टेसूकेफूलों को जोशकरके फिटकिरी पीसकरमिलादो सर्दईहोजायगी परंतु हलका कपासीअच्छा सर्दई वे कंदके रंगानहींजाता अगर कंदकीजगह बानातका रंग काटाजाय तो बहुत अच्छा रंग आताहै परंतु इनदिनों मजीठन ऐसाचलाहै कि सब रंगोंको मातकियाहै कपड़े तो कपड़े मिठाई खाने का गोटा मजीठन में बहुत अच्छा रंगा जाता है बड़ी बहिन ने मजीठन के रंगका जर्दा बनाया था ज़ाफ़रान से अच्छा रंगथा सरस्वती ने घबड़ाकर पूछामह- ताबकुंअरि कहीं तुमने तो मजीठन के रंगेहुये चांवल नहीं खाये महताबकुंअरि ने कहा मैंनेखाये तो नहीं परंतुखाने से क्याबुरी बात है सरस्वती ने कहा अयहय मजीठन में संखिया पड़तीहै ख़बरदार कोई चीज मजीठन की रंगी हुई जबानपरमतरखनामहताबकुंअरिने कहामैंनेतो मजीठनका रंगाहुआ गोटा बहुतखाया है सरस्वती ने कहा क्या हुआ थोड़े मजीठनमें तो बहुतसा गोटा रंगाजाता है इसकारणसे

तुमको कुछ नुकसान नहीं किया परंतु याद रक्खो कि इसमें जहर है महताबकुंअरिने कहा सजीटनकी रंगीहुई मिठाई लोगमहीनोंखाते हैं सरस्वतीने उत्तरदिया बहुत बुरा करते हैं जहर जब मियाद पर पहुंच जायगा जरूर असर करेगा मालूमहुई तो लड़कियां अपनेकसीदे और पुस्तकें रखरखा मासूल बमूजिब खेलने और खाने और पहेलियां कहने सुनने को आबैठीं सरस्वतीने इंदरकुंअरिसे कहा कि हां चुचु चिड़ियां की कहानियां नहीं होती हैं कहानियों की एक बहुत अच्छी पुस्तक है जिसमें बड़ी अच्छी कहानियां हैं हर एक कहानी से एक नसीहत की बात निकाली है इस पुस्तक की जबान भी बहुत मीठी है अब यह लड़कियां उसी पुस्तक की कहानियों से जो बहला येंगी कहानियां कहने से इनकी बात चीत साफ़ होती है मतलबकी बातकी खूबसूरतीसे बयान करने की ताक़त बढ़ती जाती है जब कभी मुझको अवकाश होता है तो मैं कहानियों के बीचमें इनसे उलझती जाती हूं और जैसी इनकी समझ है मेरी बातका जबाब देती हैं अगर नादुरस्त होता है मैं बतादेती हूं पहेलियों के बूझनेसे इनकी बुद्धि बढ़ती है और इनके जिहन को तेजी होती है तुम इनमें बैठकर सैर देखो मुझको आज अलपकुंअरि की माता ने बुलाभेजा है उनके बच्चे का जी अच्छा नहीं है बहुत २ विरौरी बिनती कहला भेजी है न जाऊंगी तो बुरामानेगी और आप मेराजी भी नहीं मानता इन्दरकुंअरि बोली हां मैंने भी सुना है कि उनके लड़के ने कई दिनसे दूध नहीं पिया अय हय परमेश्वर करे जीतारहे दशबर्ष पीछे भगवान ने वह बच्चादिया है इस के पीछे इन्दरकुंअरि ने कहा बीबी तुमको उन्होंने इलाज के हेतु बुलाया होगा सरस्वतीने कहा इलाज वलाजतो मुझको कुछ भी नहीं आता एकबार पहिले इस लड़के को प्यासहो गई थी मैंने जहरमुहरा, बंसलोचन, गुलाबकाजीरा, छोटी इलायची, जीरेकीगरी, कबाबचीनी, खुरमा, इसप्रकार चार पांच दवाइयां बतादीथीं परमेश्वरकी कृपासे लड़का अच्छा हो

गया इन्दरकुंअरिने कहा तुमबीबी सब गुणों में पूरी हौ सर-स्वती बोली इसमें गुणकी क्या बात है हमारे मैकेमें दवादर्मन होती रहती है जबमैंछोटीथीजो दवाआतीमहींउसको छानती बनाती और ध्यानरखती इस प्रकार पर सुनी सुनाई दो चार दवायादहैं जिसको जरूरतहुई बतादी और बच्चोंका इलाज तो स्त्रियां कर करालेती हैं जब ऐसी मुशकिल आ पड़ती है तब बैद डाकतर के पास ले जाती हैं इन्दरकुंअरि ने कहा बीबी तुमने क्रपा करिके मुझको अपनी पाठशाला का बन्दोबस्त तो दिखाया परन्तु परमेश्वर के लिये तनिक क्षण भर ठहर जाओ तो मैं देखूं कि लड़कियां किस प्रकार कहानियां कहती हैं और कहानी में तुम किस प्रकार सिखाती हौ सरस्वती ने कहा मुझको देर होती है पर खैर तुम्हारी खातिर है अच्छा लड़कियो आज किसकी बारी है यमुना ने कहा बारी तो इन्दर रानी की है परन्तु चांदकुंअरि से कहलाइये सरस्वती ने कहा अच्छा चांदकुंअरिकोई छोटी सी कहानी कहो चांदकुंअरि ने कहानी आरम्भ की एक बादशाह था सरस्वती ने पूछा बादशाह किसीको कहते हैं चांदकुंअरि बोली जैसे लखनऊ में वाजिदअली शाहथे सरस्वती, यह तुमने ऐसी बात कही जो लखनऊ और वाजिद अली शाह को जानता हो वही समझे चांदकुंअरिने कहा बादशाह हाकिम को कहते हैं सरस्वती, तो कोतवाल और थानेदार भी बादशाह है, चांदकुंअरि, नहीं कोतवाल थानेदार तो बादशाह नहीं हैं ये तो बादशाह के नौकर हैं सरस्वती, क्या कोतवाल हाकिमनहीं है चांदकुंअरि हाकिमतो है परंतु बादशाह सब से बड़ा हाकिम होता है और सब पर हुक्म चलाता है सरस्वती हमारा बादशाह कौन है चांदकुंअरि जब से अंगरेजों ने वाजिद अली शाह से तख़त छीनलिया और वाजिदअली शाह कलकत्ते चले गये तब से तो कोई बादशाह नहीं यह सुन कर सब लड़कियां हंस पड़ीं सरस्वती ने कहा चांदकुंअरि तुम बड़ी ना समझ हो

तुमने आप कहा जो सब से बड़ा हाकिम हो और सब पर हुक्म चलावे वही बादशाह होता है और यह भी जानती हो कि वाजिदअली शाह से अंगरेजों ने तख़्त छीन लिया तो अंगरेज बादशाह हुये या न हुये चांदकुंअरि, हां हुये तो सही सरस्वती, अच्छा अब बताओ हमारा कौन बादशाह है चांदकुंअरि, अंगरेज, सरस्वती, क्या अंगरेज किसी एक पुरुष का नाम है चांदकुंअरि, नहीं सैकड़ों हज़ारों अंगरेज हैं सरस्वती, क्या सब अंगरेज बादशाह हैं चांदकुंअरि, और क्या यह सुनकर फिर लड़कियां हंसी सरस्वती ने महताबकुंअरि की ओर देखकर कहा कि तुम जवाब दो महताबकुंअरि ने कहा हमारा बादशाह मलका विक्टोरिया है सरस्वती ने कहा पुरुष हैं या स्त्री महताब कुंअरि, स्त्री हैं सरस्वती, कहां रहती हैं महताबकुंअरि, लंदन में सरस्वती, लंदन कहां है महताबकुंअरि, अंगरेजों की वलायत में एक बहुत बड़ा शहर है सरस्वती, कितनी दूर होगा महताबकुंअरि, मैंने एक पुस्तक में पांचहज़ार कोस लिखा देखा है सरस्वती, कोस कितना लम्बा होता है महताब कुंअरि, कम्बारीबाज़ार से गुसाईंगंज को सातकोस कहते हैं यह सुनकर यमुना हंसी और कहा १७६० सत्तरहसौ साठ गज़ का मील और दो मील का कोस होता है सरस्वती ने यमुना से पूछा कि पारसाल जो मैं नीमषारण्य के मेला में गई थीं तुमभी मेरे साथ गईं थीं तुमनेभी देखा था थोड़े २ दूर सड़कपर पत्थर गड़े थे और पत्थरों पर कुछ लिखा हुआ था वह पत्थर कैसे थे यमुना, मैंने अटकल से यही समझा था कि कोसों के पत्थर हैं परंतु गाड़ी ऐसी तेज जाती थी कि पत्थरोंपर निगाह नहीं जमती थी मैं खूब नहीं पढ़ सकी कि उनपर क्या लिखा था सरस्वती, वह कोसों के पत्थर नहीं थे मीलों के पत्थर थे आधे कोस का मील होता है और हर मीलपर पत्थर गड़ा है उसमें यही लिखा होता है कि यहां से लखनऊ इतने मील है और नीमषार इतने मील है सरस्वती ने फिर महताबकुंअरि की ओर

देखा और पूछा कि हां लन्दन किस दिशा में है महताबकुंअरि,
उत्तर में है सरस्वती, वह मुल्क गर्म है या ठंढा महताबकुं-
अरि, यह तो मैं नहीं जानती यमुना, बड़ा ठंढा है जितना
उत्तर को जाओ गर्मी कम है और जितना दक्खिन को चलो
गर्मी अधिक होती जाती है इन्द्रकुंअरि, अच्छी बीबी बाद
शाह है सरस्वती, इसमें आश्चर्य की क्या बात है इन्द्रकुंअरि,
आश्चर्य की बात क्यों नहीं है स्त्री बात क्या करती होगी सर-
स्वती, जैसे पुरुष राज्य करते हैं वैसे ही स्त्री करती हैं मुल्क
का बन्दोबस्त रैयत का पालना इन्द्रकुंअरि, स्त्री तो क्या
करती होगी करते सब कुछ अंगरेज़ होंगे बराय नाम स्त्री को
बादशाह बना रक्खा होगा सरस्वती, यह सब अंगरेज़ मलि-
का के नौकर हैं हर एक का काम अलग है हर एक का
अधिकार जुदा है अपने २ काम पर सब मुस्तैद रहते हैं और
आख़िर जब पुरुष बादशाह होते हैं तबभी सभी नौकर
चाकर सब काम किया करते हैं इन्द्रकुंअरि, मेरा जी तो
अंगीकार नहीं करता कि स्त्री जात राज्य करसके सरस्वती,
भूपाल की बेगम का नाम तुमने सुना है इन्द्रकुंअरि, सुना
क्यों नहीं ख़ुद मेरे ससुरे भूपाल ताल में नौकर हैं सरस्वती,
इस प्रकार समझलो भूपाल थोड़ासा मुल्क है और मलिका
विक्टोरिया के पास बड़ा राज्य है जिस प्रकार भूपाल की
बेगम अपने छोटे राज्य का बन्दोबस्त करती है मलिका वि-
क्टोरिया अपने बड़े राज्य का बन्दोबस्त करती है भूपाल
छोटी सरकार है नौकर चाकर कम हैं थोड़ी तलब पाते हैं
मलिका विक्टोरिया की बड़ी सरकार है बड़े कारख़ाने हैं
लाखों नौकर तनख़्वाहें भी अधिक हैं इन्द्रकुंअरि, अच्छी बी
मलिका का कोई मियां है सरस्वती, हां मगर मौत पर किसी
का कुछ बस नहीं चलता चांद को भी परमेश्वर ने दाग़ लगा
दिया है कई वर्ष हुये मलिका रांड़ होगई इन्द्रकुंअरि
मलिका के सन्तान हैं सरस्वती हां परमेश्वर रक्खे बेटे पोते,

तुमने आप कहा जो सब से बड़ा हाकिम हो और सब पर हुक्म चलावे वही बादशाह होता है और यह भी जानती हो कि वाजिदअली शाह से अंगरेजों ने तख़्त छीन लिया तो अंगरेज बादशाह हुये या न हुये चांदकुंअरि, हां हुये तो सही सरस्वती, अच्छा अब बताओ हमारा कौन बादशाह है चांदकुंअरि, अंगरेज, सरस्वती, क्या अंगरेज किसी एक पुरुष का नाम है चांदकुंअरि, नहीं सैकड़ों हज़ारों अंगरेज हैं सरस्वती, क्या सब अंगरेज बादशाह हैं चांदकुंअरि, और क्या यह सुनकर फिर लड़कियां हंसी सरस्वती ने महताबकुंअरि की ओर देखकर कहा कि तुम जवाब दो महताबकुंअरि ने कहा हमारा बादशाह मलका विक्टोरिया है सरस्वती ने कहा पुरुष हैं या स्त्री महताबकुंअरि, स्त्री हैं सरस्वती, कहां रहती हैं महताबकुंअरि, लंदन में सरस्वती, लंदन कहां है महताबकुंअरि, अंगरेजों की वलायत में एक बहुत बड़ा शहर है सरस्वती, कितनी दूर होगा महताबकुंअरि, मैंने एक पुस्तक में पांच हज़ार कोस लिखा देखा है सरस्वती, कोस कितना लम्बा होता है महताबकुंअरि, कन्धारीबाज़ार से गुसाईंगंज को सात कोस कहते हैं यह सुनकर यमुना हंसी और कहा १७६० सत्तरहसौ साठ गज़ का मील और दो मील का कोस होता है सरस्वती ने यमुना से पूछा कि पारसाल जो मैं नीमषारण्य के मेले में गई थी तुमभी मेरे साथ गई थीं तुमनेभी देखा था थोड़े २ दूर सड़क पर पत्थर गड़े थे और पत्थरों पर कुछ लिखा हुआ था वह पत्थर कैसे थे यमुना, मैंने अटकल से यही समझा था कि कोसों के पत्थर हैं परंतु गाड़ी ऐसी तेज जाती थी कि पत्थरों पर निगाह नहीं जमती थी मैं खूब नहीं पढ़ सकी कि उनपर क्या लिखा था सरस्वती, वह कोसों के पत्थर नहीं थे मीलों के पत्थर थे आधे कोस का मील होता है और हर मील पर पत्थर गड़ा है उसमें यही लिखा होता है कि यहां से लखनऊ इतने मील है और नीमषार इतने मील है सरस्वती ने फिर महताबकुंअरि की ओर

देखा और पूछा कि हां लन्दन किस दिशा में है महताबकुंअरि, उत्तर में है सरस्वती, वह मुल्क गर्म है या ठंढा महताबकुंअरि, यह तो मैं नहीं जानती यमुना, बड़ा ठंढा है जितना उत्तरको जाओ गर्मी कम है और जितना दक्षिण को चलो गर्मी अधिक होतीजाती है इन्दरकुंअरि, अच्छी बीबी बादशाह है सरस्वती, इसमें आश्चर्य की क्याबात है इन्दरकुंअरि, आश्चर्य की बात क्यों नहीं है स्त्री जात क्याकरती होगी सरस्वती, जैसे पुरुष राज्य करते हैं वैसेही स्त्री करती है मुल्क का बन्दोबस्त रैयत का पालना इन्दरकुंअरि, स्त्री तो क्या करती होगी करते सब कुछ अंगरेज होंगे बरायनाम स्त्रीको बादशाह बना रक्खा होगा सरस्वती, यह सब अंगरेज मलिका के नौकर हैं हर एक का काम अलग है हर एक का अधिकार जुदा है अपनेर काम पर सब मुस्तैद रहते हैं और आखिर जब पुरुष बादशाह होते हैं तबभी ऐसी नौकर चाकर सब काम किया करते हैं इन्दरकुंअरि, मेरा जी तो अंगीकार नहीं करता कि स्त्री जात राज्य करसके सरस्वती, भूपाल की बेगम का नाम तुमने सुना है इन्दरकुंअरि, सुना क्यों नहीं खुद मेरे ससुरे भूपाल ताल में नौकर हैं सरस्वती, इस प्रकार समझलो भूपाल थोड़ासा मुल्क है और मलिका विक्टोरिया के पास बड़ा राज्य है जिस प्रकार भूपाल की बेगम अपने छोटे राज्य का बन्दोबस्त करती है मलिका विक्टोरिया अपने बड़े राज्य का बन्दोबस्त करती है भूपाल छोटी सरकार है नौकर चाकर कम हैं थोड़ी तलब पाते हैं मलिका विक्टोरिया की बड़ी सरकार है बड़े कारखाने हैं लाखों नौकर तनख़ाहें भी अधिक हैं इन्दरकुंअरि, अच्छी बी मलिका काकोई मियां है सरस्वती, हां मगर मौत पर किसी का कुछ बस नहीं चलता चांद को भी परमेश्वर ने दाग़लगा दिया है कई वर्ष हुये मलिका रांड़ होगई इन्दरकुंअरि मलिकाके सन्तान है सरस्वती हां परमेश्वर रक्खे बेटे पोते,

में क्यों नहीं आती सरस्वती, वहां भी बड़ा राज्य है वहां के कामों से छुट्टी नहीं मिलती इन्द्रकुंअरि, अच्छी मलिकाको हजारोंकोस दूर बैठे यहां की क्या खबर होती होगी सर. स्वती, क्यों नहीं तनिक२ सी खबर होती है डाक और तार बिजली पर रात दिन खबरआती जाती है हजारों अखबार वलायत जाते हैं इन्द्रकुंअरि, मलिका को किस प्रकार देखें सरस्वती, क्योंकर बताऊं परंतु उनकी तसबीर अलबत्ता देख सक्ती हो इन्द्रकुंअरि, खैर तसबीरही देख लेती सरस्वती बोली बीबी तुम भी अजब तमाशे की औरत हो क्या तुमने रुपया नहीं देखा इन्द्रकुंअरि, क्यों नहीं देखा सरस्वती जी का चेहरा जो बना है वह मलिका को तसवीर है चिट्ठियों की टिकट पर मलिका की तसवीर है बल्कि मेरे पास मलिका की एक बड़ी अच्छी तसबीर और है यमुना मेरा संदूकचा तो उठा ला तो यमुना दौड़ी गई और उठा लाई संदूकचे में से सरस्वती ने मलिका की तसवीर निकाल कर दिखलाई और सब लड़कियोंने अतिप्रेमसे मलिका की तसवीर को देखा इन्द्रकुंअरि, क्या अच्छी तसवीर है अयन मयन मलिका खड़ी है सरस्वती बोली यह तसवीर हू बहू मलिकाकी है रुपयेके चेहरेसे मिलाकर देखो कितना फ़र्क़ है यह तसवीर हाथकी बनाईहुई नहींहै एक आयनाहोता है उसको कुछ मसाला लगाकर सामने रखदेतेहैं खुद बखुद जैसीकी तैसी सूरत उतर आतीहै इन्द्रकुंअरि, महताबकुं-अरि ने लंदनको पांचहजार कोस दूरबताया तो कहीं बर्षों में यहांसे वहां आते जाते होंगे सरस्वती, नहीं समुद्र२ एक महीने में अच्छे प्रकार से पहुंच जातेहैं इन्द्रकुंअरि, अय हय समुद्रहोकर जाना पड़ताहै अंगरेजोंके भी कैसे मन हैं इनको समुद्र से डरनहीं लगता मेरेतो समुद्र के नामसुननेसे रोंगटे खड़े होतेहैं सरस्वती, समुद्र से डरने की क्या बात है आनन्द से जहाज पर बैठ लिया अच्छा खासा चलता हुआ घर मिलगया इन्द्रकुंअरि, [illegible] कितना बड़ा

इसको छःपांच सालकी बातहै कि गुलजारीमल महाजनकुनबे समेत द्वारका को गया था और मेरी मौसिया सास भी उन यात्रियोंके साथगई थी जहाज पर चढ़नाथा कि एक दो दिन पीछे जहाज डुबगया घर लौटना नसीब न हुआ सरस्वती, हां संयोगकी बातहै जहाज कभी कभी डूबभी जातेहैं परंतु परमेश्वर न करे आय दिन डूबाकरते तो दरियाके यात्राका कोई नाम भी न लेता अब तो दरिया का रस्ता खुशकी के सड़कों से ज्यादा आबाद हो रहा है हज़ारों लाखों जहाज निस दिन आते जाते रहतेहैं अंगरेज और उनके बीबीबच्चे और कुल अंगरेजी असबाब सब जहाज़के ऊपर यहां आता है सुन्दरकुंअरि, अंगरेजोंकी स्त्रियोंका क्या जि़किर वह तो कुछ औरही प्रकारकी स्त्रियांहैं उनकी क्या रीस वह तो बाहर फिरतीहैं सुनतीहैं नन्हे २ बच्चोंको वलायत भेजदेतीहैं और उनका मन नहीं कुढ़ता नहीं मालूम किसतरह की मायेंहैं और किसप्रकार उनके मनको संतोष आताहै फिर बाहरकी फिरनेवालियां और पत्थरके दिल उनको एक समुद्र क्या पवनपर उड़नाभी कुछ कठिननहीं सरस्वती, बाहरकी फिरनेकी तुमने जो कही तो उनके देशमें परदेका चालनहीं बलवेके दिनोंमें हम लोग एक गांवमें भागकर गये थे वहां भी पर्देकी चाल चलन न था सबकी बहू बेटियां बाहर निकलतीथीं मैं तो चारमहीने वहांरही बाहरके फिरनेवालियों में वह लाज और शरम देखी कि परमेश्वर सब पर्दे वालियों को देवे और बच्चोंको वलायत भेजदेनेसे तुमने क्योंकरसमझा कि उनको प्रीति नहीं कि सन्तान को पढ़ने से रोकें गुण न प्राप्तकरने दें नामकोतो प्रीति और हक़ीक़तमें सन्तानकेहक़ में कांटे बोतीहैं और बच्चोंको मूर्खअज्ञान रखतीं और प्रीति का नाम बदनाम करती हैं यहां पहुंचकर सब चुपहुईं तो चांदकुंअरिने अपनी कहानी आरंभकी और उस बादशाह के कोई बेटा न था बादशाह ने यह समझकर कि मेरे पीछे यही लड़की वारिसराज्यकी होगी उस लड़कीको खूबपढ़ाया

लिखवाया और राजनीति की विधि अच्छे प्रकार सिखाई और अपने जीतेजी उसको राज पाट सौंपदिया चांदकुंअरि यहां तक पहुंचीथी कि सरस्वतीने कहा तुम ऊपर२ कहानी कहती जातीहो और मेरे जीमें पूछनेको हजारों बातें भरी हैं पर क्या करूं दिनहो चुकनेपर आया और मुझको अलप कुंअरिके घर जाना अवश्यहै संध्याके समय किसीके घरखुबर का जानाभीवर्जितहै मैंतो अब ठहरनहीं सक्ती तुमलड़कियां आपसमें कहो सुनो इन्दरकुंअरिने कहा सोबआमें तो जातीहूं तुम्हारा जी चाहे तो बैठीरहोया कल्ह फिर आ जाना यहांतो रोजयही हुआ करताहै सरस्वती यह कहकर अलप कुंअरिके घर सिधारी और इन्दरकुंअरि ऐसीरीझीकि पहर रात तक लड़कियों में बैठीरह गई सरस्वती के पीछे यमुना और महताबकुंअरि ने मजे२ की बातें कहानी में निकालीं सरस्वती महताबकुंअरि को बहुत चाहती थी और उससे अधिक अपनी नन्द यमुना को सरस्वती ने महताबकुंअरि को इस तरहपर पढ़ाया कि दोवर्ष में हिंदी भाषा की बड़ी२ पुस्तकें पढ़ने लगी और चिट्ठी और हिसाब लिखलेती थी वह बदमिजाजी महताबकुंअरि की बाकी रहीन वह चिड़ चिड़ा पन बड़ी सीधी साधी लिखीपढ़ी गुणवंती प्यारी लड़की बन गई गुलाबकुंअरि का जिस प्रकार पर उजड़ा हुआ घर सरस्वती ने बसाया अगर उसका ब्योरा लिखाजावे तो दूसरी पुस्तक बन जाय अर्थात् यह कि पण्डित अयोध्या प्रसाद का सब घर छोटे बड़े सरस्वतीके चरण धो धो पीते थे मह-ताबकुंअरि की माने लाख २ यत्न की कि सरस्वती कुछ ले पर उसने कुछ नहीं लिया जब कि महताबकुंअरि का ब्याह होने लगा तब पण्डित अयोध्याप्रसाद ने पण्डित शंकरदत्त का दबाउ डालकर सरस्वती को हजार रुपये के जड़ाऊ कड़े दिये और कहा सुनो तुम मेरी पोती और निवासी के बरा-बर हो मैं तुमको पढ़वाई नहीं देता बल्कि अपना बच्चा सम-झकर देताहूं उधर शंकरदत्त ने समझाया तो सरस्वती ने

कड़े के लिये इधर तो सरस्वती अपनी पाठशाला के बंदोबस्त में थी उधर अम्बिकादत्त बेरोजगारी से घबड़ाता था एकदिन सरस्वती से कहनेलगा कि अब मेरा जी बहुत घबड़ाता है अगर तुम्हारी सलाह हो तोमैं तहसीलदार साहब के पास पहाड़पर चलाजाऊं और उनके वसीलेसे नौकरीकी तलाशकरूं सरस्वतीने थोड़ीदेर सोचकरके कहा कि नौकरी करनी तो बहुत अवश्य है इस कारण कि तुम देखते हो कि कैसा तंगी से घर में गुजर होती है अब्बा जान अब बूढ़े हुये उचित यह है कि वह घर में बैठें और तुम कमाकर उनकी सेवा करो सिवाय इसके यमुना बड़ी होती जाती है मैं उसकी लगनी के चिंता में हूं और मनो कामना यह है कि बहुत ऊंचे जगह इसका व्याह हो और मैं यत्न कररही हूं परमेश्वर ने चाहा तो इसी साल में इस की बात चीत ठहरी जाती है परन्तु इसकेलिये बड़ा सामान दरकारहोगा और इससमय तक किसी प्रकार की कोई वस्तु घरमें मौजूद नहीं है भाईजान पहिले तो अलग हैं फिर ऐसी थोड़ीनौकरी में उनसे अपना निबाह नहीं हो सक्ता वह दूसरे को कहां से देसक्ते हैं फिर सिवाय इसके कि तुम नौकरी करो कोई सूरत नहीं परन्तु पहाड़ पर जाने की मेरी सलाहनहीं अब्बा तो तुम्हारे वास्ते कोशिश करेंगे और निश्चय है कि जल्दतर तुमको नौकरी मिल जाय परन्तु किसी का सहारा पकड़ कर नौकरी करना कुछ ठीक बात नहीं बला से थोड़ी हो पर अपने पराक्रम से हो जाना अब्बा कोई ग़ैर नहीं है रिश्ते में भी तुमसे बड़े हैं उनसे लेना क्या बल्कि मांगना भी ऐब नहीं फिर भी परमेश्वर किसी का इहसानमन्द न करे सदा की आंख झपक जाती है उन्हों ने मुंह पर न रक्खा तो कुनबे में परमेश्वर रक्खे सौ आदमी हैं मुंहदर मुंह न कहेंग तो पीठ पीछे अवश्य कहेंगे कि देखो ससुरे के सहारे से नौकरी हुई अम्बिकादत्त ने कहा फिर क्या करूं आगरा चला जाऊं सरस्वती ने कहा आगरे में क्या है रईसकी सरकारतो

आप तबाह है नहीं मालूम अब्बाजानको पहले का लिहाज व मुरौवत मानकर पचास रुपया वह किस तरह देता है नये आदमियों की गुंजायश उसके सरकारमें कहां, अम्बिकादत्त ने कहा और बहुत सरकारें हैं सरस्वती ने कहा जब से अंगरेजी हुई सब रईस ऐसेही तबाह हैं और पिछलेनाम नमूद को सब निबाहते हैं दूसरे दस पांच सूरतें उनकेयहां लगी लिपटीरहती हैं सोभी क्या खाक, बर्सों तनख्वाहनहीं मिलती अम्बिकादत्त ने कहा फिर क्या इलाज, सरस्वती ने कहा अंगरेजी नौकरी तलाश करो अम्बिकादत्त ने कहा अंगरेजी नौकरी तो बे सई सिफ़ारश नहीं मिलती हजारों लाखों आदमी मुझसे बेहतर २ मारे २ फिरते हैं कोई नहीं पूछता सरस्वतीने कहा हांयह सचहै परंतुजब आदमी किसी बातकी इच्छा करे तो परमेश्वर पर भरोसा करके निरास नहो मैंने माना कि हजारों नौकरी के तलाश में फिरते हैं परंतु जो नौकर हैं वह भी तुम्ही ऐसे आदमी हैं और सौबात की कि एक बात तो यहहै कि नौकरी भाग्य से मिलती है बड़े आदमी देखते रहजाते हैं और अगर परमेश्वर को देना मंजूर होता है तो न वसीला है न लियाक़त छप्पर फाड़कर देताहै घरसे बुलाकर नौकर रखलेतेहैं अम्बिकादत्त ने कहा तो गरज यह है कि घर बैठा रहूं सरस्वतीने कहा यह हर्गिज मेरा मतलब नहीं है जहां तक अपने से होसके यत्न करना चाहिये अम्बिकादत्त ने कहा यही तो कठिन है क्या यत्न करूं सरस्वती ने कहा जो लोग नौकरी पेशा हैं उनसे मुलाकात पैदा करो उनसे हित और प्रेम बढ़ाओ उनके वसीले से तुमको नौकरी की खबरलगती रहेगी उन्हीं के वसीले से तुम किसी हाकिम तक पहुंच जाओगे अम्बिकादत्त ने यही किया कि नौकरी वालों से मुलाक़ात करना शुरूअ की यहांतक कि सरिश्तेदार तहसीलदार ऐसे लोगों में आने जाने लगा रोज़के आने जाने से सबको मालूम हुआ कि यह भी नौकरीके तलाशमें है यहांतक लाला रुद्रप्रसाद

ने जो कचहरी में रोज़कार नवीस थे अम्बिकादत्त से कहा कि अगर नौकरी की तलाश है तो मेरे साथ कचहरी चला करो थोड़े दिन उम्मैदवारी करो सरिश्ते के कामसे वाक़फ़ियत हासिल करो हाकिमों को सूरत दिखाओ इसी प्रकार कहीं न कहीं ढब लग जायगा उसके कहनेसे अम्बिकादत्त कचहरी जाने लगा और रुद्रप्रसाद के साथ काम किया करता था यहां तक कि हाकिम से दस्तख़त करा लाता हाकिम लोग उसको जानने लगे इसी बीचमें छोटे २ उहदेदारानकी दो चार एवज़ियां अम्बिकादत्तको मिलगई किसी अमले को रुख़सत की ज़रूरत हुई वह आधी तिहाई तनख़्वाह पर इसको एवज़ दे गया यहां तक कि संयोग से एक दश रुपये का मुहर्रिर पेशी तीन महीने की रुख़सत पर गया था सो तीन महीनेके पीछे उसने इस्तीफ़ा भेजदिया पण्डित अम्बिकादत्त उसकी जगह पर मुकर्रर होगया परंतु कभी २ सरस्वती से खिझकर आता तो अम्बिकादत्त हिक़ारत के साथ कहा करता कि क्या वाहियात नौकरी है दिन भर पीसना और दश रुपया और न ऊपर से कुछ पैदा है न आगे को बढ़ने की आस मैं तो इसको छोड़दूंगा सरस्वती सदा ऐसे ख़यालात पर उसको लानत मलामत करती और कहती कि तुम बड़ी नाशुकरी करते हो वह दिन भूलगये कि उम्मैदवारी भी नसीब नथी या अब नौकर होतो नौकरी की क़दर भी नहीं करते घरमें घर बैठे क्या दश रुपये कम हैं अपने बड़े भाई को देखो कि कई बर्ष तक सौदागर के यहां दश रुपये की नौकरी करते रहे और जब तुम्हारा नौकरी में मन नहीं लगता तो तुम से काम क्या ख़ाक होता होगा आख़िर को नौकरी खुद छूटजायगी इसीप्रकार थोड़े से बहुत भी होता है हमारे अब्बा पहिले आठ रुपये महीने के नक़लनवीस थे अब परमेश्वर की कृपासे तहसीलदार हैं और भगवानने चाहा तो और भी बढ़ेगी ऊपर की आमदनी पर कभी [illegible] मालमें

हर्गिज़ बरकत नहीं होती भाग से बढ़कर मिल नहीं सक्ता फिर आदमी अपनी नियत को डामाडोल क्यों करे जो इससे अधिक मिलने वाला है तो परमेश्वर यों हलालसे भी देसक्ता है ग़रज़ सरस्वती नित्य अम्बिकादत्त को समझाती रहतीथी यहां तक कि जिस हाकिम के पास अम्बिकादत्त नौकर था वह डिपटी कमिश्नर देहली का मुक़र्रर हुआ यह हाकिम अम्बिकादत्त परबहुत मेहरबानी करताथा दिन को कचहरी में यह हाल अम्बिकादत्त को मालूम हुआ शाम को अम्बिकादत्त घरमें आया तो बहुत उदास था सरस्वती ने पूछा खैरियत है आज क्यों उदास हो अम्बिकादत्त ने कहा क्या बताऊं मिस्टरवुड साहब की बदली दिल्ली को होगई वह तो एक अपने जानने वाले हाकिम थे अब कचहरी में रहने का मज़ा नहीं सरस्वती बहुत देर तक सोच में रही फिर कहा बेशक मिस्टरवुड साहब का बदल जाना अफ़सोस की बात है परन्तु न इस क़दर कि जितना तुमको है जो उनकी जगह आवेगा परमेश्वर उसके दिलमें भी रहम डाल देगा आदमी को आदमी पर भरोसा नहीं करना चाहिये सरस्वती ने पूंछा मिस्टरवुड साहब कब जायंगे अम्बिकादत्त ने कहा कल शामको डाक पर सवार हो जायंगे सरस्वतीने कहा तुम उनके बंगलेपर नहीं गये अम्बिकादत्त ने कहा अब क्या जाना सरस्वती ने कहा यही तो मिलने का समय है और कुछ न होगा तो कोई चिट्ठी परवानातुम को दे जायंगे अम्बिकादत्तने कहा अच्छा सबेरे को जाऊंगा बहुत तड़के कपड़े पहिये पहना अम्बिकादत्त मिस्टरवुड साहब के बंगलेपर गया मिस्टरवुड साहब ने कहा अम्बिकादत्त हम अब दिल्ली को जाता है और हम तुमसे बहुत राज़ी था अब तुम चाहे तो हमारे साथ दिल्ली को चलो हम तुमको वहां नौकरी देगा और जबतक नौकरी न होगी हम अपने पास से पन्द्रह रुपये देगा अम्बिकादत्त ने सोचकर कहा कि

मासे पूछलूं ग़रज़ अम्बिकादत्त घरलौटकर आया तो ज़िकर
किया कि मिस्टरवुडसाहब मुझको साथलियेजातेहैं अम्बिका
दत्त की मांने तो सुनतेही गुलमचाया सरस्वती भी सन्नाटे
में होगई आख़िर अम्बिकादत्तने पूछा कि साहबोबताओमैं
जाकरक्या जवाब दूं अम्बिकादत्तकी माबोली जवाबक्यादेना
है अब क्या तेरेलिये वह बैठारहेगा या तेरेलिये सिपाही
भेजरहा है अम्बिकादत्त ने कहा अच्छा मैं उससे इक़रार
आनेका करआंय हूं अपने जीमें कहेगा कि हिंदुस्तानीकैसे
बदमतलबी होतेहैं मतलबका हमसे भूठबोला अम्बिकादत्त
से मानेकहा अच्छा जाकर कहआओ कि साहबमेराजाना
नहींहोसक्ता अम्बिकादत्त सरस्वती से पूछा क्यों जी तुम्हारी
क्या सलाहहै सरस्वती ने कहा सलाह और होतीहै मनकी
अभिलाषा तो यहथी कि तुमयहांरहो घरकाबन्दोबस्त सिर्फ़
तुम्हारे दमसेहै और आख़िर घरमें कोई मनुष्य भी चाहिये
और सलाह पूछो तो जाना उचितहै जब एक हाकिमखुद
बेकहेसुने तुमको साथ लेजाताहै तोज़रूर अपनी जगहपहुंच-
कारबहुतसलूककरेगा अम्बिकादत्तने कहा पांचरुपयेके वास्ते
क्या दो तीन सौ कोसका सफ़र करूं मेरा तो दिल जाने को
नहीं चाहता वह मसल है कि घरकी आधी न बाहरकी
सारी सरस्वती ने कहा यों तुमको अख़तियार है परंतु ऐसी
समय भागोंसे मिलाहै फिर हाथ न आयेगा और सफ़रकौन
नहींकरता हमारे तुम्हारे अब्बा देखो इनलोगों ने सफ़र में
उमर तै करदी और अभी तुमनेपांचरुपयेसुनलिये पीछेदेखो-
गे कितने पांचहैं और जो नहींजाते तो फिर दस रुपये से
बेदिलीमत ज़ाहिर करना अम्बिकादत्त ने कहा तो यहां की
नौकरी का इस्तीफ़ा देजाऊं और फ़र्ज़किया कि वहां कोई
सरत न हुई तो इधरसे भी गया और उधरसे भी गया सर-
स्वती नेकहा कि अव्वल तो यह मानलेनाकि वहां कुछसूरत
न निकलेगी बुद्धिके बरख़िलाफ़ है वुडसाहब इतनाबड़ा हा-
किम तुमको कामदेनाचाहे और सूरत न निकले मेरेसमझ

में नहीं आता और फिर इस्तीफ़ा क्यों दो महीने दो महीने की छुट्टी लो अम्बिकादत्त ने कहा हां रुखसत मंजूर हुई पड़ी है सरस्वती ने कहा मंजूर होने को क्या हुआ उसी मिस्टर उड साहब से कहो वह चिट्ठी लिख देगा ग़रज़ सरस्वती ने जबरदस्ती जोतकर अम्बिकादत्त को जाने पर राज़ी किया और अपने पास से पचास रुपया नक़द दिया और छः जोड़े नये कपड़े बना दिये रामलाल रामदेई मिश्रायन के बेटे को साथ कर दिया पण्डित अम्बिकादत्त दिल्ली को रवाना हुये सरस्वती ने पण्डित शंकरदत्त को यह सारा हाल चिट्ठी में लिखा और यह भी कह दिया कि उड साहब दिल्ली को आगरे होकर जांयगे अगर ऐसा होसके कि आप वहां उनसे मुलाक़ात करके उनकी सिफ़ारिश कुछ रईस से करादें तो बहुत अच्छा होगा पण्डित शंकरदत्त ने मिस्टर उड साहब की तलाश की और रईस के कुछ गांव ज़िलअ देहली में भी थे शंकरदत्त ने रईस की तर्फ़ से साहब की दावत की रईस के बाग़ में ठहराया खाने के पीछे साहब और रईस दोनों बैठे हुये बातें कर रहे थे कि पण्डित शंकरदत्त ने साहब से कहा कि लखनऊ के रियाया को आप की जुदाई का बहुत रंज है अगर्चे आप सिर्फ़ दो वर्ष लखनऊ में हाकिम रहे परन्तु आप के इन्साफ़ और आपके शुफ़क़ी परवरी से वहां के सब लोग राज़ी थे एक बन्दा ज़ादा भी आपके खिदमत में हाज़िर था उसके लिखने से सब हाल मालूम रहता था साहब ने पूछा क्या कोई आप का लड़का भी मेरी कचहरी में था शंकरदत्त ने कहा अम्बिकादत्त साहब ने कहा वह तो हमारे साथ आता है वह आप का बेटा है शंकरदत्त ने कहा आप का गुलाम है रईस ने इस समय कहा कि पण्डित शंकरदत्त हमारे रियासत के बहुत पुराने नौकर हैं और हमको उनकी परवरिश हरतरह मंजूर रहती है परन्तु आपतो जानते हैं कि हमारे यहां अब गुंजायश नहीं पस अगर आप इनके बेटे की परवरिश फ़र्मायेंगे तो हम आपके बड़े इहसानमन्द होंगे मिस्टर

वुड साहब पहिले से अम्बिकादत्त के हाल पर मेहरवान था अब ऐसी समय सिफ़ारिश होने से मिस्टर वुड साहब को अम्बिकादत्त का बहुत बड़ा ख्याल होगया पहिले तो अम्बिकादत्त जवान नौ उमर दूसरे भले आदमी का बेटा तीसरे रईस का सिफ़ारसी चौथे खुद साहब का रफ़ीक़ पांचवें लायक़ अब इतने हक़ अम्बिकादत्त को हासिल होगये साहब ने पहिले रोज़ कचहरी करतेही अम्बिकादत्त को पचास रुपये का नायब सरिश्तेदार किया और पण्डित शंकरदत्त को खत लिखा कि फ़िल फ़ौल हमने अम्बिकादत्त को पचास रुपये की नौकरी दी है हम जल्द इसकी तरक्की करेंगे आप रईस की खिदमतमें इसकी इत्तिला करदीजिये शंकरदत्त ने नज़र बर मुनासिब साहब का शुकरिया अदा किया और वह अम्बिकादत्त जो कभी उम्मेदवारी का मुहताजथा और छोटे२ ओहदेदारोँ की एवजियां करताथा और सिर्फ़ दश रुपये महीने का मुहर्रिर था और पन्द्रह रुपये महीनेके वादे पर सरस्वती के जोतने से वुड साहब के साथ दिल्लीगया था अब एक दमसे पचास रुपये का ओहदेदार होगया अम्बिकादत्त की माता अगर्चि जाने से नाराज़ हुई थीं पर पचास का नाम सुनकर उनकी भी बाछें खुलगईं अब तो घरमें चौगुनी बरकतहोगई सरस्वतीका बन्दोबस्त और बीस की जगह अब साठ रुपये महीना घरमें आनेलगा क्या पूछना है अम्बिकादत्त आखिर एकही वर्ष में सरिश्तहदार होगया परन्तु सरिश्तहदार होने तक सम्हला हुआ था खर्च भी बराबर आता था चिट्ठी भी बराबर चली आती थी आखिर जवान आदमी था खुद मुख़्तार होकर रहा संगति बुरीमिल गई बहक चला चिट्ठियों में कमी होनी शुरू हुई सरस्वती तो बड़ी बुद्धिमान थी समझ गई कि कुछ दाल में काला है बहुतदिन तक सरस्वती चिन्ता में रही कि अब क्या यतकरूं अन्तको सिवाय इसके कुछ समझ में न आया कि आपजाना चाहिये हरचन्द सरस्वती ने दिल्ली जाने का दिलमें पक्का इ-

राहा कर लिया था परंतु सलाह के वास्ते जयजयवन्ती को बुला भेजा और सब वृत्तान्त उससे कहा जयजयवन्ती ने कहा बहिन दीवानी हुई है अपना वतन छोड़कर अब कहां दिल्ली जाती फिरेगी सरस्वती ने कहा मुझको जन्मभूमि से क्या प्रयोजन है जिसके साथ मेरा सम्बन्ध है जहां वह है वहीं मेरा घर है जयजयवन्ती ने कहा अय हय कुनबेवाले क्या कहेंगे हमारे कुनबे में से कोई आज तक बाहर नहीं गया सरस्वती ने कहा इसमें एक की क्या बात है आखिर यही कहेंगे कि खसम के पास चली गई तो बुरा क्या कहा और कुनबे की रीति जो पूछो तो पिछले दिनों न डाकघी न रेल न रस्ते आबाद थे स्त्रियों का सफ़र करना बहुत कठिन था इस कारण लोग नहीं जाते थे अब क्या कठिन है जो आज शाम को रेल पर बैठूं और परमेश्वर असल खैर रक्खे तो परसों दिल्ली दाखिल गोया लखनऊ से बिठूर गये जयजयवन्तीने कहा क्या बुलाये की चिट्ठी आई है सरस्वती ने कहा चिट्ठी तो नहीं आई है जयजयवन्तीने कहा बे बुलाये जाना भी उचित नहीं सरस्वती ने कहा तुम उचित और ग़ैरउचित को देखती हो और मैं कहती हूं जो मैं न जाऊंगी तो जन्म भर के लिये घर बिगड़ जावेगा जयजयवन्ती बोली अय बहिन ऐसी तुम क्यों गिरी पड़ती हो तुमको उनकी क्या परवाह है परमेश्वर तुम्हारे पाठशाले को सलामत रक्खे तुम दसको रोटी खिलासकती हो सरस्वतीने कहा वाह आपकी क्या समझ है यह पाठशाला तो मैंने अपना जी बहलानेके वास्ते मुकर्रर कर लिया है कुछ मुझको इससे कमाई करनी मंजूर नहीं भगवान जाने तुमको निश्चय होय या न होय पाठशाले की रक़मसे आजतक एक पैसा मैंने अपने ऊपर खर्च नहीं किया जब वह दिल्ली गये थे तो पचास रुपया नक़द और बीस रुपये के कपड़े उसी जायदादसे उनको बनवा दिये बाक़ी कौड़ी २ का हिसाब लिखाहुआ मौजूद है देखो स्त्रियों की कमाई भी कोई कमाई है जो स्त्रियों की कमाई से घर बसा करें तो पुरुष क्यों हों जयजयवन्ती ने

कहा बहिन ऐसी भरी बस्तीमें कहां जाओगी जाड़ा आनेदो उसका खुले मौसम में देखलेना सरस्वती ने कहा अयहाय देर करना तो गजबहै अब जो काम समझानेसे निकलेगा फिर बड़े झगड़ों से न मिटेगा जयजयवन्ती ने कहा अय बहिन घर छोड़ते हुये तुम्हाराजी नहीं कुढ़ता सरस्वतीने कहा क्यों नहीं कुढ़ता क्या मैं आदमी नहीं हूं परन्तु यह थोड़ी देर तक कुढ़ना बेहतर या जन्म भरका जलापा बेहतर जयजयवन्तीने कहा तुमने अपनी सासकेभी आज्ञा लेली है सरस्वती ने कहा भला वह क्या आज्ञादेंगी परन्तु हमारी सास विचारी सीधी आदमी है मैं समझा दूंगी तो विश्वास है कि न रोकें गरज यह कह सरस्वतीने अपनी इच्छा जाने की और उसका प्रयोजन अपनी सासरो एकदिन कहा बात तो नेकथी उसमें कौन मनाकर सक्ता था सरस्वती का जाना ठहरगया एकदिन सरस्वती सब कच्चा हाल अपनी माता से भी कह आई और विदा हो आई पाठशालेके लिये लड़कियों को समझा दिया कि यमुना तुम सबको पढ़ाने को बहुतहै मैं दो महीनेके लिये जातीहूं सब लड़कियां बदस्तूर आयाकरें सरस्वती विदा होनेके लिये अपनी बड़ी बहिन परमेश्वरी के पासभी गई वहां परमेश्वरीदत्त ने पूछा क्योंजी तुम जाती हो पाठशाले को क्या कर चली सरस्वतीने कहा पाठशाला और घर सब आपको सौंपे जातीहूं परमेश्वरीदत्तने कहा वाह क्या खूब सुझको न घरसे प्रयोजन न पाठशालेसे वास्ता मैं क्याकर सक्ताहूं सरस्वतीने कहा प्रयोजन रखना और न रखना सब आपके आधीन में है परमेश्वरीदत्त ने कहा यह बात तुमको कहनी उचित नहीं भला मेरा क्या अख्तियारहै घर तुम्हारी बहिनने छुड़वाया रहा पाठशाला सो लड़कियोंकाहै लड़कों का पाठशाला होता तो मैं सबको पढ़ादिया करता सरस्वतीने कहा अब आप और बहिन दोनों घरमें चलकर रहियेअम्मा जान अकेलीहैं परमेश्वरीदत्तनेकहा अपनी बहिनको समझावो सरस्वतीने कहा समझानेकी क्याहाजतहै वहतो आपजानती

समझतीहैं यहां अकेले उनको क्लेश होताहै न बच्चोंका कोई सम्हालने वालानघरका कोई देखनेवाला दुःख सुख आदमी के साथहै बेज़रूरत अलग रहना उचित नहीं और पिछली बातें अगई गुज़री हुईं आपुसकीनाइत्तिफ़ाक़ी क्या और इसका रंजक्यापरमेश्वरी अलग घरकरने का मज़ा खूब चख चुकीथी और बहाना ढूंढतीथी कि फिरसाथ रहनेको कोईकहे तुरंत राज़ी होगई सरस्वती अपने साथ दोनोंको लिवालाई अम्बि-कादत्तकी माको सरस्वतीके जानेका बहुत रंजथा अब उसकी भीतसल्लीहोगई कि एकबहूगईतो दूसरी मौजूद है यमुनाको अलबत्ता बड़ा सोच हुआ कि देखिये क्या हो परंतु सरस्वतीने उधर तो यमुना की तसल्ली की और समझा दिया कि अब वहबातें नहींहैं इधर अपनी बहिनको समझा दिया कि यमुना अब बड़ी होगई है कोई बात कड़ी न कहियेगा पाठशाले के हेत परमेश्वरीदत्त से इतना कह दिया कि पढ़ाना लिखाना सब यमुना कर लिया करेगी आप सिर्फ़ ऊपर के बंदोबस्त की खबर ले लियाकीजिये और पाठशालेका हिसाब यमुना को लिखवा दिया कीजियेगा ग़रज़ सरस्वती इसतरहसे बिदा हुई और रेलपर सवार हो दिल्ली पहुंची यहां अम्बिकादत्तको सरस्वतीके अचानक पहुंचने से बड़ा आश्चर्यहुआ पूछा कुशल तोहै कहीं अम्मासेतो नहीं लड़आई सरस्वतीने कहा परमे-श्वर २ करो क्या अम्माजान मेरी बराबर की थीं जो मैं उनसे लड़ती इस चार वर्षमें कभी तुमने मुझको उनसे या किसू से लड़ते देखायहां अम्बिकादत्तने खूबहाथ पांवनिकालेथे और बुरी संगतिमें फंसाहुआथा ठकुरसुहातियेजमाथे और उसको उल्लू बनाए हुये थे बाज़ार घूसका गर्म था नाच रंगतमाशा निशि दिन हुआ करता था अमीरी ठाठ थे और तनख्वाह से चौगुनाखर्चयहीहाल कुछदिनों और रहता तो ज़रूरमिस्तीर छड साहबको शकपैदा होताआखिरको नौकरी जातीरहती अच्छे समय सरस्वती जा पहुंची तुरंत उसने हर एक ओर से बन्दोबस्त करना आरंभ किया और समझाया कि तुमको पर-

मेश्वर ने सौ का नौकर कर दिया उसका यही बदला है कि तुमको उस पर संतोष नहीं अम्बिकादत्तने कहा जो खुशीसे दे उसके लेने में क्या हर्ज है सरस्वती ने कहा क्या खूबरुपया भी ऐसी चीज है कि कोई उसको बेप्रयोजन खुशीसे देता है इन दिनों लोग रुपया को ऐसा जानते हैं कि इज्ज़त तक की परवाह नहीं करते परंतु रुपया नहीं छोड़ते आदमी अपने उपर समझे कि हम किसी को क्या दिया करते हैं तुमको तो एक रुपया भी बेप्रयोजन देना बुरा मालूम होता है फिर लोगों के पास ऐसा कहां का खज़ाना भरा पड़ा है कि वह बेप्रयोजन दे जाते हैं जब देखते हैं कि काम बिगड़ता है न देंगे तो मुक़द्दमा खराब होगा लाचार उधार लेकर घरवा-लोंके गहने बेंच जमीन गिरों रख कर घूस देते हैं अम्बिका-दत्त ने कहा मैं आप नहीं मांगता वह आप देते हैं तो क्या फिर इसमें डर है सरस्वती बोली पहले तो घूस छिप नहीं सकी सिवायइसके आदमी परप्रगट न हुईपरमेश्वर जो अंदर बाहरका हाल देखता है वह तो जानता है पस आदमियों को पाप जमघ करना और परलोकके लिये अधर्म की गठरी बांधना क्या ज़रूरहै ग़रज़ ऊंच नीच समझा कर सरस्वतीने अम्बिकादत्त से तो वहकरा के थोड़े दिन पीछे सरस्वती ने पूछाये चार आदमी जिनको बाहर सीधा जाताहै कौन आ-दमी हैं अम्बिकादत्त ने कहा नौकरी के उम्मैदवार विचारे परदेशी हैं मैंने कहा अच्छा जब तक तुम्हारी नौकरी न लगे मेरे पास रहो सरस्वतीने पूछा फिर अब तकक्या इनको नौ-करी नहीं मिली अम्बिकादत्त ने कहा नौकरी मिलतीहै पर उनकी हैसियत से कम है सरस्वतीने कहा जब उनको यहां तक दशा पहुंची कि दूसरे घर पड़े हुये रोटियां खाते हैंतो हैसियत की क्या बात रही थोड़ी बहुत जोमिले कर लें अ-म्बिकादत्त ने कहा परमेश्वर जाने तुम क्या कहती हो इज्ज़त से घटकर कैसे कम दरजे की नौकरी करें सरस्वतीने कहा कमदर्जेकी नौकरीमें बेइज्ज़ती होतीहै और दूसरेकेभिरदही

देने से बेइज्जती नहीं जब इन लोगों में इतनी लज्जा नहीं तो और सुभावभी इनमें अवश्य बुरे होंगे इनका साथ रहना अच्छा नहीं जरूर तुम्हारे नाम से यह भी लेते होंगे इनसे कहो या नौकरी करें या सिधारें अम्बिकादत्त ने कहा मेरी मुरव्वत तो यह नहीं चाहती कि मैं जवाबदूं सरस्वती ने कहा जब उनमें मुरव्वत नहीं तो तुमको मुरव्वत का लिहाज क्या जरूर है अगर तुमसे बचे तो कुनबे में बहुत से अजीज हैं उनका हक़ गैरों से पहिले है और गैरों में भी ऐसों को देने से क्या हासिल और यह जरूर नहीं कि तुम सख़्ती से जवाब दो किसी तौर उनको समझा दो खुलासा यह कि ये लोग अम्बिकादत्त के बिगाड़ने वाले थे सरस्वती ने हिकमति से उनको निकलवा दिया नौकरों में से जो २ बदचलन थे छांट २ कर निकलवा दिये गये डेढ़वर्ष सरस्वती ने रहकर भीतर बाहर सब बन्दोबस्त करदिया अब दुर्गादत्त का ब्याह होने वाला था सरस्वती के बुलावे में चिट्ठी गई जयजयवन्ती ने जल्द आने को लिखा सरस्वती को गये हुये भी बहुत दिन हो चुके थे सरस्वती ने इरादा लखनऊ आने का किया परंतु अपने मनमें सोची कि अम्बिकादत्त को अकेला छोड़ना योग्य नहीं अम्बिकादत्त से कहा कि परदेश में अकेला रहना उचित नहीं अब कोई अपना सम्बन्धी साथ रहना जरूर है मेरे समझ में तुम अपने चचेरेभाई रामसहायको बुलाय लो वह यहां तुम्हारे पास कचहरी का काम सीखेगा और पढ़ेगाभी और कदाचित् कहीं उसकी नौकरी भी लगजाय पण्डित शिवदत्त चचा को अम्बिकादत्त की चिट्ठी गई और सरस्वती के रहते रामसहाय पहुंच गये यह लड़का बहुत नेक बख़्त था और अम्बिकादत्त से सिर्फ़ दो वर्ष छोटा था अब सरस्वती को सब तरह बिश्वास होगया कि दिल्ली से बिदा होकर आगरा पहुंची यहां शंकरदत्त के पास दश दिन रही शंकरदत्त की उमर बासठवर्ष की थी और सुल्तारी की नौकरी में बहुत मेहनत थी सब हाकिमों की कचहरी में जाकर रईस के

मुक़द्दमात की ख़बर लेना और सुबह शाम अमलों में जाना बेचारे पण्डित जी रातको जो आतेथे तो बहुत थक जाते थे सरस्वतीने कहा अब आपका समय नौकरी करनेका नहीं है मुनासिबहै कि आप घरबैठिये एक पुस्तकमें मैंने पढ़ा है कि आदमी अवस्था के तीन भाग करै पहला भाग गुण और विद्या सीखनेका दूसरा भाग संसारके कामोंके बन्दोबस्तका तीसरा भाग आनन्दसे रहने और परमात्मा के भजनका बस आप घर चलकर आनन्द से बैठें पण्डित शङ्करदत्त ने कहा पहले तो रईस छोड़ता नहीं और दूसरे आख़िर मेरी जगह कोई कामभी करनेवाला चाहिये सरस्वतीने कहा जब आप अपने बुढ़ापे का हाल वर्णन कीजियेगा तो निश्चय है कि अवश्यमान जायगा और काम करने को तो भाई जान क्या कम हैं पण्डितजीने कहा वह कचहरी दरबार का दस्तूर क्या जानें सरस्वतीने कहा थोड़े दिन उनको बुलाकर साथ रखिये देखने भालने से सब मालूम होजायगा पण्डितजी को सरस्वतीकी बात पसन्द आई सरस्वती तो लखनऊ पहुंची और पण्डित शङ्करदत्त ने परमेश्वरीदत्त को बुला भेजा थोड़े कालमें परमेश्वरीदत्तने बापकासबकाम उठालिया और रईस को अपनी सेवासे बहुत प्रसन्न किया तब शङ्करदत्तने रईस से कहा कि अब यह लड़का हुजूर में हाज़िर रहेगा मुझको आज्ञा दीजिये कि घरमें बैठकर परमेश्वर का भजन करूं रईस दिल चला था उसने पण्डित जी की बात मानली और बीस रुपये महीना पण्डितजीकी पिन्शन करदी और पण्डित शङ्करदत्त की जगह परमेश्वरीदत्त को पूरी तनख़ाह पर नौकर रखलिया सरस्वती लखनऊ में आई तो उसने यमुना की मंगनी की फ़िकिर की महताबकुंअरि रीवांसे अपने घर आई हुई थी और उन्हीं दिनों गुलाबकुंअरि भी ससुराल से छोटीबहिन से मिलने आईथी पण्डित अयोध्याप्रसाद का तो तमाम घर सरस्वती का चेला था दोनों बहिनें सरस्वती के आनेके समाचार सुनकर दौड़ी आईं गुलाबकुंअरि ने कहा

कि बीबी कैसाजी तुममें पड़ा था बयान नहीं होसक्ता भला महताबकुंअरि तो तुम्हारी विद्यार्थिन है परंतु मैं शागिर्दी से भी अधिक हूं मेरा उजड़ाहुआ घर तुम्हीने बसाया सरस्वती ने कहा मैं किस लायक हूं गुलाबकुंअरि ने कहा वाह २ जी तुम कैसी बातें कहतीहो मैं तो जीतेजी तुम्हारा सलूक नहीं भूलोंगी और क्या कहूं तुम तो हम लोगों की सेवा किसी प्रकार ग्रहण नहीं करती नहीं तो अपने खाल की जूतियां तुम को बनवा देती तब भी शायद तुम्हारा हक़ अदा न होता सरस्वतीने कहा पहिले तो मुझसे कोई काम बननहीं पड़ा और अगर कोई काम मेरा तुम्हारे पसंदहुआ तो परमेश्वरने तुमको सब क़ाबिल बनाया है हम ग़रीबों को खुशकरदेना कौन बड़ी बात है महताबकुंअरि बोली अय हय अपने मुंह कैसी बात कहती हो सरस्वती बोली कि परमेश्वर रक्खे उधर तुमतो पोतड़ोंके अमीर और अमीरों की शिरताज और इधर यह सरदार और सरदारों की बेटी अबतो इस शहरमें तुमसे बढ़कर दूसरा अमीर नहीं तुमतक जो आदमी पहुंचकर निरास रहे तो उसके भाग का दोष है महताबकुंअरि ने कहा अच्छो बी क्या बात है सरस्वती ने कहा बड़ा कठिन कामहै तुम क़रारकरो कि हमनिरास न करेंगी तो मैं कहूं महताबकुंअरि और गुलाबकुंअरिने जाना किसी की नौकरी चाकरी के लिये कहेंगी दोनों ने कहा बीबी परमेश्वर की सौगंध तुम्हारे लिये हम दिलोजान से हाज़िर हैं हमको तो बड़ी आरज़ू है कि तुम हम से कुछ फर्मायश करो सरस्वती ने कहा वह काम तो मेरे नज़दीक बड़ा है परन्तु अगर तुम दोनों बहिनें जीसे कोशिशकरो तो बड़ा नहीं है दोनों बहिनोंने परमेश्वर की सौगंध खाई और कहा जो हमसे हो सकेगा तो हम अपनी शक्तिभर उठा न रक्खेंगी सरस्वतीने कहा मेरी यह अभिलाषा है कि यमुना की सगाई द्वारिका प्रसादसेहोजाय यह सुनकर दोनोंबहिनें चुप हुईं फिर इधर उधर की बातें होने लगीं जब दोनों

बहिने उठनेका ऊईं तो सरस्वतीने महताबकुंअरिका दुपट्टा पकड़ा और दूसरे हाथसे गुलाबकुंअरिका और कहाकि मैं अपना हक्क झगड़कर लूंगी और जब तक मेरा सवाल पूरा न होगा परमेश्वर की सौगंध जाने न दूंगी महताबकुंअरि बोली भला बीबी इसमें हमारा क्या अख्तियारहै अभी तो हारिका मसाद लड़काहै दूसरे ऐसी बातोंमें मा बापके होते बहिनों को क्या दखलहै सरस्वती ने कहा बड़ी और ब्याही ऊई बहिनें माताके बराबर होती हैं पिछले नाते वे सब की सलाहके नहीं होने ऐसा मुमकिननहीं है कि तुमसे सलाह न हो महताबकुंअरि ने कहा अभी हमारे यहां तो कुछ इस बातका चर्चानहीं है इसी प्रकार बातमें और बातहोने लगी सरस्वतीने कहा बीबियो मेरा मतलब तो रहा जाता है हां ना का मुझको उत्तर दीजिये गुलाबकुंअरि ने कहा भला हम क्योंकर हामी भरसक्ती हैं सरस्वतीने कहा संपति स्वरूप स्वभाव तीन बातें चाहियें सो संपत्तितो हम ग़रीबों के पास नामको नहीं रही स्वभाव सो महताबकुंअरि तुम यमुना को अच्छे प्रकार जानती हो दो बर्ष तुम्हारा उसका साथ रहा तुम सचकहना लाज संकोच सुशीलता अदबनेक-बख़्ती लिखना पढ़ना सीना पिरोना अच्छे भोजन बनाना और सब प्रकारकी बातें यमुनामें हैं या नहीं क्यों महताब कुंअरि मैं झूठ कहती हूं तो तुम बोलो महताबकुंअरि ने कहा बीबी भला चांदपर कोई खाक डालसक्ता है यमुना को परमेश्वर जीता रक्खे बड़े घरोंमें तो भला कोई यमुना का पासंगतो होले सरस्वतीने कहा कि अबरहा स्वरूप सो नाक कान आंख जैसे आदमी में होते हैं वैसेही यमुना में भी हैं वह भी आदमी का बच्चा है जवान ऊये पीछे इसमें अच्छी सूरत निकल आये गी गुलाबकुंअरि बोली ऐ बीबी यमुना को तुम आदमी का बचा कहती हो परमेश्वर की सौगंध यमुना हजारों सुन्दर लड़कियों में अपना दूसरिहा नहीं रखती है बड़े घरों में ऊंची दूकान फीके पकवान हम

ने तो कोई स्वरूपवान न देखा देखो हम दोनों बहिनें मौजूद हैं भगवान सौगंधवाला लौंडियां हमसे अच्छी हैं और यमुना तो चन्द्रे आफ़ताब चन्द्रे माहताब खूबसूरत की स्त्री कहां देखने में आई सरस्वती ने कहा फिर बुआ सिवाय ग़रीबी के और हममें क्या बुराई है महताब कुंअरि ने कहा अच्छा आज हम इस बातका चर्चा अपनी माता से करेंगी सरस्वती ने कहा बात चीत तो मैंभी कर सकी हूं तुम मन से इसमें सहायता करो और अब यह बात जो छेड़ी है तो ऐसा हो कि पूरी होजाय दोनों बहिनों ने वचन दिया कि बीबी जैसा आपका मन चाहता है वैसाही होगा ग़रज़ कि उस समय दोनों बहिनें बिदा हुईं दूसरे दिन सरस्वती अब फूलकुंअरिसे मिलनेको गई तीन सौ रुपये का बहुत अच्छा घानी रूमाल कामदार जो दिल्ली से लाई थी फूलकुंअरि को भेंट दिया फूलकुंअरि ने कहा तुम हमको बहुत शर्मिन्दा करती हो हम को तुम्हारी टहल करनी चाहिये न कि उलटा तुमसे लें सरस्वती ने कहा यह रूमाल अवश्य कर मैंने आपही के लिये बनवाया था डेढ़ वर्ष से इसी हेतु मैंने गठरी में बांध रक्खा था कि लखनऊ चलकर मैं आपको दूंगी फूलकुंअरिने कहा मैं इसको लेती हूं परंतु मुझको परमेश्वर की सौगन्ध लाज आती है कभी आपने भी तो फर्मायश की होती मेरा जी प्रसन्न होता इतना सहारा पाकर सरस्वती हाथबांध कर खड़ी होगई और अपनी मनोकामना बयान की फूलकुंअरनेकहा अच्छा आप बैठियेतो सही सरस्वतीने कहा अब मैं अपनी इच्छा पूर्ण करके बैठूंगी फूलकुंअरिने हाथ पकड़ करबैठा लिया और कहा बेटा बहुओं के काम कठिन हैं कुम्हार से दमड़ी का सिकोरा लेते हैं तो ठोक बजा कर लेते हैं और यह तो जन्म भर कमाइयोंके व्योहार हैं सोचसमझ कर सलाह मशविरा करके ऐसे काम होतेहैं अब इसका तुम ने चर्चा किया अबमैं इनके पितासे और अपनी बड़ी भगिनी और कुनबे वालों से पूछोंगी जैसा होगा देखा जायगा अभी

तो द्वारिकाप्रसाद लड़का है सरस्वती ने कहा मैंने अपने हौसिले से बढ़कर सवाल किया है मेरे पास ग़रीबी और आजिजी के सिवाय देने लेनेको कुछ नहीं है अगर्चि फूलकुंअरि ने ज़बान से न कहा परंतु अन्दाज़ से मालूम हुआ कि बात बुरी नहीं लगी चलते समय सरस्वती गुलाबकुंअरि महताबकुंअरि से कहती गई कि अब इसका निवाह तुम्हारे आधीन है सरस्वती के जाने पीछे दोनों बहिनोंने यमुना की बड़ी तारीफ की फूलकुंअरि थोड़ी ही बातोंमें राजी होगई और अपनी लड़कियों से बोली कि असल तो लड़की को देखना है परमेश्वरकी कृपासे हमारे घरमें किसीवस्तु की कमीनहीं महताबकुंअरि बोली गो उनके घर में ग़रीबी है परंतु सरस्वती बड़ी चालाकी स्त्रीहै मुंहसे नहीं कहतीतो क्याहै परंतु समयपर बहुत बढ़ चढ़कर करेगी फूलकुंअरि बोलीअच्छा वह आयेंउनसे पूछाजाय संध्यासमय पण्डित अयोध्या प्रसाद आये तो गुलाबकुंअरि महताबकुंअरि ने यमुना के मुक़द्दमे को इस तरह पेश किया जैसे कचहरीमें वकील अपने मुक़ाद्दमेंको पेश करतेहैं ग़रज बहुत शोच बिचार करके पण्डित अयोध्या प्रसाद ने यमुना की बात को पसन्दकिया दूसरेदिन गुलाबकुंअरि महताबकुंअरि दोनों बहिनें पास सरस्वतीके आईं और कहा बीबी मुबारक हमारा इनाम दिलवाइये सरस्वतीने कहा परमेश्वर तुम सबको भी मुबारक करे और इनाम देने का मेरा क्या मुंहहै मेरा इनामहै आशीर्बाद सो रातदिन तुम्हारे लियेमैं करतीहूं महताबकुंअरिनेकहानहीं आनतो अवश्य करमुंहमीठा करना चाहिये सरस्वतीने कहा बैठिये२ मिठाई खाइयेगा गुलबासाको बुलाया और पांचरुपये निकाल उसके हाथदिये कहा कि पांच रुपयेकी अच्छी मिठाईपांच चारप्रकारकी ले आओ और दोनों बहिनोंको पान दिये इतनेमें मिठाईकी टोकरीभी आगई सरस्वती परमेश्वरी महताबकुंअरि गुलाबकुंअरि सबने मिलकर खाई और जो बची पाठशालामें भेजदी अब सरस्वतीने कहा इससमय तक

मैंने अम्मा जान को खबर तक नहीं की थी अब उनसे चर्चा करके परसों अच्छी सायत अच्छा लग्न मुहूर्त है परमेश्वरने चाहा तो रीतरस्म मंगनी की होजायगी दोनों बहिन विदा हुई तो सरस्वतीने नीचे उतरकर सासुके पास बैठकर कहा कि अम्माजान कुछ आप को यमुना के ब्याहकाभी सोच है सासबोली क्या सोच करूं कहीं से बातभी आई सरस्वती ने कहा मैंने एक बात सोचीहै जो आपको पसंद हो तो चर्चा चलाऊं अम्बिकादत्त की माताने पूछा वह क्या सरस्वती बोली पण्डित अयोध्या प्रसादके लड़के से अम्बिकादत्तकी म-बोली भला बेटी झोपड़े का रहना महलों का ख्वाब देखना कहां पण्डितजी का घर आज उनके यहां वह सम्पदा है कि शहर में उनका दूसरिहा नहीं और हम ग़रीब कि रहने तक का झोपड़ा दुरुस्त नहीं यहां की बात क्या उनके जीमें आवेगी ट्था कहकर बात खोनीहै सरस्वतीने कहा वह धन वाली हैं तो अपने लिये हैं परमेश्वर न करै हम क्या उनका आसरा रखती हैं वह अपने पुलाव जर्दा में मगनहैं तो हम अपनी दाल दलिया में प्रसन्नहैं जात पांतमें हम उनसे हेठी नहीं गुण जो यमुना मेंहै वह उनके बड़ोंकोभी नसीब न हुआ होगा अम्बिकादत्त की माता ने कहा बेटी सम्पति के आगे गुण हाथ बांधे खड़ा रहता है सोनेके छपरखट बनवाऊं तो उनसे बात करूं तुम इसका ध्यान मत करो सरस्वतीने कहा हज़ार सम्पति की एक सम्पति सुन्दरताई है यमुनासे अच्छा अपने कुनबे में तो ढूंढलो अम्बिकादत्त की माता बोली तुम कैसी लड़कियों की कैसी बात करती हो पहले स्वरूपभी बराबरी में पूछा जाताहै दूसरे यह बात मुंहसे कहने कीहै कि हमारी बेटी सुन्दर है और फिर सुन्दराई क्या बला है बड़े २ स्वरूपवालोंका देखाहै कि जूतियों के समान आदर है और कुरूपेहैं कि लाखोंके लाल बने बैठेहैं सरस्वतीनेकहा सुन्दरताईभी ऐसी चीज है कि आदमी उस पर मोहित न हो परन्तु बहुत आदमी जिनकी सूरत अच्छी हुई पर प्रकृति

उनकी बुद्धी और स्वभाव निकम्मे होतेहैं और मनमें घमण्ड होता है इसकारण उनकी दाल कहीं गलने नहीं पाती उनकी प्रकृति उनका मिज़ाज उनकी सुन्दराईके मोलको घटा देताहै जैसे कोई घोड़ाहै रंगतका साफ हाथ पांवका अच्छा बाल भौंरी से निर्दोष जोबन का दुरुस्त परन्तु चाल का बुरा कटहाहै दुलत्ती अलग चलाताहै खड़ा होकर उलट जाता है ऐसे घोड़े की कोई सूरत देखकर क्याकरे और जो अच्छे सूरतकेसाथ क़दमबाज ग़रीबभी होतो अमोलहै तैसे मेरीननद यमुना गुणस्वरूप और स्वभावमें अपनादुसरिहा नहींरखती अम्बिकादत्त की माता ने कहा फिर कुछ देनेकोभी चाहिये हम ग़रीबों के पास उनके देने योग्य सामान कहां है माना जो बातभी ठहरी और वहां आंखों में लड़की निरादर रही तो कुछ हासिल नहीं सरस्वती ने कहा इज्ज़त और आदर दहेज पर नहीं होताहै स्त्री पुरुषके मेल मिलाप परहै गुलाबकुंअरि क्या घोड़ा दहेज लेकर गईथी परन्तु बहुत दिनों ससुरालमें एक दिनभी रहना न मिला और दूर क्यों जाओ हमारी बड़ी बहिन को देखो कि उनकोभी हमारे बराबर दहेज मिलाथा फिर क्यों रोज लड़ाई होती रहतीहै यह तो अपना २ स्वभाव और अपना२ गुणहै अम्बिकादत्तकी माता बोली यह तो मैंने माना कि मियां बीबी का प्यार मिलाप जहेज पर नहींहै परन्तु कुनबेके लोग कब मानते हैं लड़केने खयाल न किया तो क्याहै सास नन्दें तो कभी समय पाकर कह गुज़रेंगी आखिर जीको बुरा लगताहीहै एक तो बेटी वालेका योंही सिर नीचा होताहै उसपर दान दहेजवाजबी वाजबी यह बेल मड़ये चढ़ते दिखाई नहीं देती सरस्वतीने कहा कुनबे वालों से क्या प्रयोजन कुनबे वाले क्या सदा थोड़ेही पास बैठे रहते है हां सास नन्दों के रात दिन के ताने बहुधा लोग का सामनाहै सो गुलाबकुंअरि महताब कुंअरि क्याताने देंगी ऐसा क्या अंधेर है ब्याह होने पीछे क्या आंखों पर ठिकरी रखलेंगी महताबकुंअरि को जैस

मैंने अम्मा जान को खबर तक नहीं की थी अब उनसे चर्चा करके परसों अच्छी साअत अच्छा लग्न मुहूर्त है परमेश्वरने चाहा तो रीतरस्म मंगनी की होजायगी दोनों बहिन विदा हुईं तो सरस्वतीने नीचे उतरकर सासुके पास बैठकर कहा कि अम्मा जान कुछ आप को यमुना के ब्याहकाभी सोच है सासबोली क्या सोच करूं कहीं से बातभी आई सरस्वती ने कहा मैंने एक बात सोचीहै जो आपको पसंद हो तो चर्चा चलाऊं अम्बिकादत्त की माताने पूछा वह क्या सरस्वती बोली पण्डित अयोध्या प्रसादके लड़के से अम्बिकादत्तकी माँ बोली भला बेटी झोपड़े का रहना महलों का ख़्वाब देखना कहां पण्डितजी का घर आज उनके यहां वह सम्पदा है कि शहर में उनका दूसरिहा नहीं और हम ग़रीब कि रहने तक का झोपड़ा दुरुस्त नहीं यहां की बात क्या उनके जीमें आवेगी दृथा कहकर बात खोनीहै सरस्वतीने कहा वह धन वाली हैं तो अपने लिये हैं परमेश्वर न करे हम क्या उनका आसरा रखती हैं वह अपने धुलाउ चादरों में मगनहैं तो हम अपनी दाल दलिया में प्रसन्नहैं जात पांतमें हम उनसे हेठी नहीं गुण जो यमुना मेंहै वह उनके बड़ोंकोभी नसीब न हुआ होगा अम्बिकादत्त की माता ने कहा बेटी सम्पति के आगे गुण हाथ बांधे खड़ा रहता है सोनेके छपरखट बनवाऊं तो उनसे बातकरूं तुम इसका ध्यान मत करो सरस्वतीने कहा हज़ार सम्पति की एक सम्पति सुन्दरताई है यमुनासे अच्छा अपने कुनबे में तो ढूंढ़लो अम्बिकादत्त की माता बोली तुम कैसी लड़कियों की कैसी बात करती हो पहले स्वरूपभी बराबरी में पूछा जाताहै दूसरे यह बात मुंहसे कहने कीहै कि हमारी बेटी सुन्दर है और फिर सुन्दराई क्या बला है बड़े २ स्वरूपवालोंको देखाहै कि जूतियों के समान आदर है और कुरूपेहैं कि लाखोंके लाल बने बैठेहैं सरस्वतीनेकहा सुन्दरताईभी ऐसी चीज है कि आदमी उस पर मोहित न हो परन्तु बहुत आदमी जिनकी सूरत अच्छी हुई पर प्रकृति

उनकी बुरी और स्वभाव निकम्मे होतेहैं और मनमें घमण्ड होता है इसकारण उनकी दाल कहीं गलने नहीं पाती उनकी प्रकृति उनका मिज़ाज उनकी सुन्दराईके मोलको घटा देताहै जैसे कोई घोड़ाहै रंगतका साफ हाथ पांवका अच्छा बाल भौंरी से निर्दोष जोबन का दुरुस्त परन्तु चाल का बुरा कहरहै दुलत्ती अलग चलाताहै खड़ा होकर उलट जाता है ऐसे घोड़ेको कोई सूरत देखकर क्याकरे और जो अच्छे सूरतकेसाथ कदमबाज़ ग़रीबभी होतो अमोलहै तैसे मेरीनन्द यमुना गुणस्वरूप और स्वभावमें अपनादुसरिहा नहींरखती अम्बिकादत्त की माता ने कहा फिर कुछ देनेकोभी चाहिये हम ग़रीबों के पास उनके देने योग्य सामान कहां है माना जो बातभी ठहरी और वहां आंखों में लड़की निरादर रही तो कुछ हासिल नहीं सरस्वती ने कहा इज़्ज़त और आदर दहेज पर नहीं होताहै स्त्री पुरुषके मेल मिलाप परहै गुलाबकुंअरि क्या थोड़ा दहेज लेकर गईथी परन्तु बहुत दिनों ससुरालमें एक दिनभी रहना न मिला और दूर क्यों जाओ हमारी बड़ी बहिन को देखो कि उनकोभी हमारे बराबर दहेज मिलाथा फिर क्यों रोज लड़ाई होती रहतीहै यह तो अपना २ स्वभाव और अपना२ गुणहै अम्बिकादत्तकी माता बोली यह तो मैंने माना कि मियां बीबी का प्यार मिलाप जहेज पर नहींहै परन्तु कुनबेके लोग कब मानते हैं लड़केने खयाल न किया तो क्याहै सास नन्दें तो कभी समय पाकर कह गुज़रेंगी आखिर जीको बुरा लगताहीहै एक तो बेटी वालेका योंही सिर नीचा होताहै उसपर दान दहेजवाजबी वाजबी यह बेल मड़ये चढ़ते दिखाई नहीं देती सरस्वतीने कहा कुनबे वालों से क्या प्रयोजन कुनबे वाले क्या सदा थोड़ेही पास बैठे रहते है हां सास नन्दों के रात दिन के ताने बहुधा क्रोध का सामनाहै सो गुलाबकुंअरि महताब कुंअरि क्याताने देंगी ऐसा क्या अंधेर है ब्याह होने पीछे क्या आंखों पर ठिकरो रखलेंगी महताबकुंअरि को जैस

मित्रताई यमुनाके साथहै आप देखतीहोरहीं गुलाबकुंअरि परमेश्वर जाने जाहिर में जब वह मिलती हैं खिली जातीहैं मैं भी तो आखिर जीती बैठी हूं यमुना को जो बुरी प्रकार देखेंगी मुझको क्या मुंह दिखावेंगी और सौ बातकी एक बात मैं यह जानतीहूं कि सास नन्दें भी हवा देखा करती हैं लड़केको रीझाहुआ देखेंगीतो किसी की सामर्थ्य नहींकि कोई यमुनाको आंख उठाकर देखे अम्बिकादत्त की माता ने कहा भला तुम्हारी मर्जी क्या है ढांक के पत्तेपर पांव पूजदूं सरस्वती ने कहा यह तो मैंभी नहीं कहती परन्तु न होने में क्या बेटा बेटीके काम काज इस प्रकार नहीं करते देनादिलाना एक रीति रस्म संसारकी है जितनी चादर देखे उतना पांव फैलावे जितना मक्दूर हो और जो बन पड़ा दिया और जो न होसका न दिया नाम निशानके पीछे घर का दिवाला निकालना बुद्धि के विरुद्ध है मेरी पाठशाला में एक शहजादे कुंअरि लड़की पढ़तीथी उसके पिताको बलवे की खैरखाही में सरकार से पन्द्रह हजार रुपये इनाम मिलेथे किसी अंगरेज की जान बचाई थी पन्द्रह हजार रुपया उनको इतना था कि जन्मभर इज्जतसे रहते एकबेटा और एक बेटीब्याहने कोरठी शेखीमें आकरपन्द्रह हजार सरकारका दियाहुआ उठा बैठे और दो हजार रुपया ऊपरसे उधार लेकर लगा दिया उस समयतो चारों ओर वाह२ हुई अब घरमें इसप्रकार लौटपटे करते हैं कि भोजनतकका भीठिकाना बहुत कठिन से लगता है ब्याह में मुझको भी बुलावा आया था सामान और तैयारी देखकर मेरी तो होश की चिड़ियां उड़गईं बल्कि शहजादकुंअरि की माता ने बुरा भी मानाहो इसलिये कि मैंने तो उस समय कह दिया था कि बीबी बेटा बेटीका देना आंखों सुखकलेजे ठंढकथी कहां गया खिचड़ी में परन्तु अपनी हंड़िया की खैर मनानी अवश्यहै कहनेको तो मैं कहगुजरी पीछे मुझकोभी पछतावा आया कि शहजादकुंअरि कहैगीकि लेना एक नदेनादो यह बे प्रयोजन

भांजी मारतीहै अम्बिकादत्तकी माने कहा हां सचहै मगर कमबख़्त संसारमें रहना है क्या करें कहां गांयहो न हो कर नाही पड़ताहै संसार कीसी न करें तो नकू कौन बनैगरीबी सारी बे इज़्ज़ती कराती है सरस्वती बोली ग़रीबी की क्या बातहै संसारमें तो ग़रीब लोग अधिक हैं जो ग़रीब होना बेइज़्ज़ती की बात है तो जगत में बे इज़्ज़त बहुत हैं ग़रीबी अमीरी सबअपनी अपने भागसेहै सब एकसे क्योंकर होजांय अम्बिकादत्त की माता बोली ब्याह हय शादी ब्याहमें अगर बहुत ख़र्च करने की अंगरेज़ी सरकार से मनाही होजाती तो झगड़ा मिटता सरस्वती, अख़बार से तो प्रकट होताहै कि अंगरेज़ कुछ बन्दोबस्त करने वाले हैं और कहीं २ कुछ बन्दोबस्त होगया है और ब्याहमें ख़र्च की एक हद्द बांधी गई है परंतु यह काम हम लोगों के करने काहै सब एका करके जितने ख़र्च वे फ़ज़ूल हैं छोड़दे, अम्बिकादत्त की मा बोली ख़र्चके फ़ज़ूल होने को जोतुमने कहीसो जिसको पर-मेश्वरने दिया है कुछ फ़ज़ूल नहीं हां जिसकी गांठ पैसा कौड़ीनहीं उसकोतो सभी फ़ज़ूलहै सरस्वती, यह न कहिये शादी ब्याह मेंतो वाजिबी ख़र्च कम है फ़ज़ूल बातोंमें अधिक रुपया उठ जाता है जैसे नाच, तमाशा, बाजा गाजा, आत-शबाज़ी, आरायश, नौबत, नक़्क़ारा, चौथी, चाली, बहुत भारी जोड़े जड़ाऊ गहना सभी फ़ज़ूल है अम्बिकादत्त की माता बोली तो सीधी यही एक बात क्यों नहीं कहती कि ब्याही फ़ज़ूल है सरस्वती हंसनेलगी और कहा ब्याह तो फ़ज़ूल नहीं है परंतु उसके ऊपरके सब सामान निरे ढको-सले हैं अम्बिकादत्त की माता भला रक्खें तो रक्खें तुम तो कपड़े गहने को भी वाहियात बतलाती हो सरस्वती निरे कपड़े और निरा गहना तो काम की चीज़ है परंतु भारी भारी जोड़े आपभी सोचियेकि किस काम आतेहैं मेरे जोड़ पड़े २ सड़ते हैं घरमें पहनने से कमबख़्त दिल कुढ़ताहै कभी कभाड़ शादी ब्याहमें पहन गये या त्योहार को पहनलिया

बाकी बारह महीने गठरीमें बंधे रक्खे रहतेहैं उसपर यह बखेड़ाकि आय दिन धूपदेना और जो बेचनेजाओ तो माल का मोल नहीं मिलता मसाला गोटा किनारी के दाम तक नहीं खड़ेहोते यही हालजड़ाऊ गहनेका है पण्डित सुन्दर दास की बेटीका ब्याह आपने सुनाहै मुझको तो ऐसे ब्याह भातेहैं अम्बिकादत्त की माता बोली कौन पंडित सुन्दरदास सरस्वती, लड़कियों के मदर्से के अफ़सर अम्बिकादत्त की मा बोली वह तो शहरके रहने वाले नहीं सरस्वती, नहीं पटने के ओर के रहने वाले हैं स्त्री और बच्चों को अपने पास बुला लिया है मगनी इसी शहरमें की थी घरवाली चाहतीथी कि अपने देशजाकर अपनी बेटी का ब्याह करें यहां से बरात जाय पंडितजीने स्त्रियोंको समझा बुझा यहीं करनेको राजी कर लिया एक दिन चार मेल मिलापवालों को बुला भेजा वो जो घरमें पहुंचे तो सुनाकि घरमें बेटीका ब्याहहै थोड़ी देर के पीछे समधी पुरोहित नाई लड़के को साथलिये आ मौजूद हुये ब्याह होगया ब्याहके पीछे पण्डित सुन्दरदास ने हजार रुपये नक़द बेटी दामादके आगे लाकर रखदिये और कहा भाई मेरी कमाई में तुम्हारे भाग्य का इतनाही था जो मैं चाहतातो इसमें बिरादरीकी और आस पड़ोसकी जिव- नार भी करदेता और संसार के ब्योहारके अनुसार एक दो भारी जोड़े भी बना देता परंतु जो शोचा तो यही उचित दिखाई दियाकि नक़द तुमको देदूं अब तुमचाहो जिसप्रकार अपने काम में लावो अम्बिकादत्त की माता बोली कि हां परदेश में पण्डितजी ने जो मनभाया सो किया कहने सुनने वाला कौन था सरस्वती, क्यों कहने सुनने वाला घरवाली थी परदेश पर क्या है हिम्मत चाहिये करने वाला हो तो शहर में भी कर गुजरे कहने वालोंको बकनेदिया अपने काम से काम रक्खा अम्बिकादत्त की माता बोली क्या तुम ने यमुना का इस प्रकार ऊंघता उदास ब्याह करना बिचारा है सर- स्वती, मैं तो लोगों के कहने सुनने की परवाह नहीं करती

मेरा बसचले तो यमुनाका ब्याह पण्डित सुन्दरदासकी बेटी के अनुसार करूं उन्होंने तो दो चार महमान बुलाये थे और मैं तो इसकी भी कुछ जरूरत नहीं जानती अम्बिकादत्त की माता बोली न बेटी परमेश्वरके लिये तो ऐसा अंधेर मत करो इस बुढौती में मेरी यही एक बच्ची ब्याहने को है अब क्या मैं मरघट से किसी का ब्याह करने फिर आऊंगी सरस्वती, नहीं ऐसा तो मैं नहीं कहूंगी परंतु यह बात मैंने जीमें ठान रक्खी है कि न तो एक पैसा उधार लिया जाय और न कोई जायदाद गिरों रक्खी जाय जो कुछ जोड़ा बटोड़ा यमुना के नाम रक्खा है और जो कुछ उसके भागसे समयपर मिलजाय वही बहुत है अम्बिकादत्त की माता ऐसा होतो क्या बातहै परंतु जब दूसरे तर्फवाले हामी भरें सरस्वती ने कहा जो वह राजी हो जांय अम्बिकादत्त की माता बोली उनका मान लेना क्या हंसी ठट्ठा है परमेश्वर रक्खे एक बेटा नहीं मालूम क्या २ हौंसिले उनके मनोंमें हैं वह तो बराबर के टक्कर का देखकर बातकरेंगे और सब अरमान निकालेंगे सरस्वती ने कहा जबसे मैं दिल्लीसे आई हूं इसबातकी फिकिरकर रहीहूं उधर सब बातचीत ठीकठाकहोगई है अभी गुलाब कुंअरि महताब कुंअरि दोनों भागी हुई आई थीं फूलकुंअरि और पण्डितअयोध्याप्रसाद ने मानलिया है अब बिलंबनहींकरना चाहिये परसों अच्छा बारभीहै और अच्छी सायत मुहूर्तभीहै इधरसे मिठाई भेजी जाय और बात पक्की होजाय फिर ब्याह देखा जायगा परमेश्वरदत्त की मा यह बात सुनकर आश्चर्यमें रहगई और कहा बात तो अच्छी है हमारी प्रतिष्ठासे कहीं अधिक हैं परन्तु उनके योग्य सामान हमसे होना कठिन है सरस्वतीने कहा जब यमुना का भाग्य ऐसे ऊंचे घरमें लड़ाहै तो परमेश्वर समय पर सब सामग्रीभी इकट्ठाकर देगा इतनेमें पण्डित शङ्करदत्त बाहर से आये सो वह भी सगनी का हाल सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और कहा बे सोचे साचे परसों मिठाई भेजदो अर्थात् बहुत अच्छी दो

मन मिठाई चालीस रुपये की थालियों में भरकर भेजदी मगनीका होनाथा पण्डित अयोध्याप्रसादने व्याहका सामान करना आरम्भ कर दिया और पण्डित शङ्करदत्त से कहला भेजा कि बहुत दिन से मेरी मनोकामना यह है कि तीर्थ यात्रा करूं और केवल इसी बातका इन्तिज़ारहै कि द्वारिका प्रसाद का जल्द व्याह होजाय क्योंकि जीवनेका भरोसानहीं पण्डित शङ्करदत्त ने सरस्वती से पूछा कि क्या जवाब कहला भेजें सरस्वतीने कहा इस समय यह कहला भेजना चाहिये कि हमभी इसी चिन्तामें हैं जहां तक होसक्ता है यत्न करते हैं सामान जो देना मंजूर है इकट्ठा होजाय तो हमको भी यह काम कर देना है जितना वेग होजावे उतनाही उत्तम है पण्डित अयोध्याप्रसादने इसके उत्तर में यह कहला भेजा कि मैंने दान दहेज लेनेके लिये आपके यहां नातेदारी नहीं की मुझको केवल लड़की चाहिये इधर से जवाब गया बहुत अच्छा हमकोभी वैशाख में व्याह कर देना मंजूर है अर्थात् वैशाख सुदी तीन लग्न मुहूर्त व्याहका ठीक हुआ और दोनों ओरसे सामान होने लगा सामान का आरम्भ होना था कि पण्डित शङ्करदत्तको चिन्ता आई किसीसमय कहतेथे छदामी लालसे उधार लूं कभी सोचतेथे कि रुईका कटरा बेंचडालूं सरस्वतीने पण्डित शङ्करदत्त को दुचित्ता देखकर पूछा कि आपने खर्चका क्या यत्नकियाहै पण्डित शङ्करदत्तने कहा क्या बताऊं कि व्याह का दिन सिर पर चला आता है रुपये का यत्न कहींसे बन नहीं पड़ता छदामीलालसे मैंने उधार मांगा था वहभी टाल टल गया रुई कटरा बेंच डालनेको सोचा था कोई गाहक नहीं ठहरता सरस्वतीने कहा कभी आप व्यो-हरियाका नाम न लीजे और न रुई कटरा बेचियेगा उधार से कोई वस्तु बुरी नहींहै और जायदादका बेंचडालना कौन कठिनहै परन्तु उसका मिलना फिर बहुत दुर्लभ है पण्डित शङ्करदत्त ने कहा ऋण तो लूं नहीं और कोई वस्तु बेंचूं नहीं तो क्या मैं रसायन बनाना जानता हूं रुपया कहां से

आवे सरस्वती ने कहा पहिले घर का हिसाब देखिये कपड़े तो कुछ पहिले से तैयार हैं सिर्फ थोड़ा मसाला लेना होगा सो मेरे जोड़े में कोई २ बहुत भारी हैं उनमें से कम करके इतना मसाला निकल आवेगा कि यमुना के जोड़ोंमें पूरा होजाय बर्तन भांड़ा मौजूद है कोई मोल लेना नहीं काठकबाड़ यह सब मैं अपना देदूंगी बे प्रयोजन पड़ा २ सत्यानाश होता है और रुपया आखिर आपके पासभी कुछ होगा पण्डितशङ्कर दत्तने कहा मेरे पास तो पांच सौ रुपये हैं सरस्वतीने कहा बसबहुत हैं जो मैं दिल्ली जाने लगीथी तो पाठशाले की रकममें चारसौ रुपये थे वह अबतक रक्खे हैं मेरे पीछे दोसौ रुपये और हुये आधा दीदीका हिस्सा है और आधा यमुनाका यहमिला कर पाठशालेकी रक़म पांचसौ होजायगी यमुनाके छोटे भाई को मैने चिट्ठी लिखी है और तीनसौ रुपये मंगवाये हैं दोसौ रुपये भाई जानने भेजनेको लिखा है इसप्रकार डेढ़हजारनक़द इससमय मौजूद है हजारके कड़े जो महताबकुंअरिके व्याहमें मुझको मिले थे मेरे किस कामके हैं मैंने चाहाथा कि यमुना को व्याहमें देदूं परन्तु फिर सोचा कि उसी घरके कड़े उसी घरमें जाने उचित नहीं मैं इनको बेंच डालूंगी जयजयवल्लीके वसीले से बाजार में भेजे थे कल्लूमल जौहरी तेरह सौ रुपये देताथा यमुनाके भाग्यसे शायद आगे अधिकका गांहक मिल जाय और एक यह मेरे मनमें बैठी है कि आप भाईजान के लानेको आगरा जाइये और रईससे उनको छुट्टी दिलाने में व्याहका जिकरकर दीजिये रईसबड़ा हौसलेवाला है विश्वास होता है कि वहभी कुछ सहायता करे इसलिये कि सदा से हिंदुस्तानी सरकारों की यह रीति है कि शादी व्याहमें अपने पुराने सेवकों के सहायक होते हैं सरस्वती की सलाह से पण्डित शंकरदत्त आगरा गयेतो रईसने पूछा कि पण्डित जी किस कारण आये पण्डित जीने कहा कि मेरी लड़कीका व्याह है पस इस हेतु आया हूं कि आप परमेश्वरीदत्त को एक महीने की छुट्टी देवें और यह तो अर्ज नहीं कर सका

कि हुजूर के कुनबेसे कोई शरीक होवे परंतु दीवान साहब जो इन दिनों लखनऊमें हैं सरकार की तर्फसे शादीमें तश-रीफ लावें तो बराबर वालोंमें बड़ी इज्जत बढ़ेगी रईसने पर-मेश्वरीदत्तकी छुट्टी मंजूरकी और पण्डित शंकरदत्तके आने जानेका खर्च दिया और दीवान जीको हुक्म भेज दिया कि हमारे तर्फ से पण्डित जीके यहां जाना और पांचसौ रुपये न्योता देना सरस्वतीके सलाहसे यह पांच सौ वे बैठे बैठाये मुफ्त आगये उधर जड़ाऊ कड़े जयजयवन्तीके मारफ़त म-लिका जहां के पास पहुंचे तो वह देखकर लोट पोट होगई और आंख बन्दकरके दो तोड़े हवाले कर दिये अबतो रुपये की चारों ओर से रेल पेल होगई सरस्वती के अच्छे बन्दो-बस्त से बहुत अच्छे जोड़े तैयार हुये और जो गहना बना वह दोहरा तेहरा बना पण्डित शंकरदत्तके तो कई पुस्तोंमें ऐसा ब्याह नहीं हुआ था समधियाने वाले भी यह सामान देखकर दंग होगये गहने जो २ दिये गये ब्योरा उसका सं-क्षेप से यह है नाक में नथ और कील माथे में टीका कानमें पत्ते जड़ाऊ और सादे छपके की बालियां, मगर, मुरकियां, बिजुलियां, करनफूल, झुमके, गलेमें चम्पाकली, गुलशी, तोड़ा, धुक धुकी, चन्दनहार, कण्ठमाला, पचलड़ी, भुजापर जोशन नौरत्न, भुजबन्द, नौनगे, हाथों में कड़े नौगरही, चुहेदं-तियां, पहुंचियां, जहांगीरियां, अंगुलियों में अंगूठी छल्ले आ-रसी पांवमें पायजेब कड़े कारचोबी जालदार मसालेदार मिलाकर बहुत से जोड़े और सौसे अधिक बर्तन और ऊपरी सामान भी बहुत अच्छा इसी प्रकार का दिया अर्थात् बड़े धूम धाम से यमुनाका ब्याह हुआ यमुना सुखपाल परबिदा हुई पण्डित अयोध्या प्रसाद ब्याह हुए पीछे थोड़े दिनों तक बहू का रंग ढंग देखते थे यहां क्या देखना था यमुना तो सरस्वती के खराद परचढ़ चुकीथी किसी प्रकार कोर कसर इसमें नहीं रही थी पण्डितजी ने जितना बहू को परखा गुणी चतुर पाया पण्डितजीको जबअच्छा बिश्वास हुआ कि यमुना

सब विधि घरको सम्हाल लेगी ते। पण्डित अयोध्या प्रसाद ने तीर्थ यात्रा का सामान शुरूअ कर दिया नक़द रुपिया तो आप अपने साथ लिया मकानात, दुकानात, गंज गांव गिरावं, सब बेटे के नाम लिख दिये और आप स्त्री सहित तीर्थ यात्रा को निकल खड़े हुये यमुनाका यद्यपि व्याह होचुका था परंतु यमुना सरस्वती का पहले से भी अधिक लिहाज करती थी जरा २ सी बात में सरस्वती से सलाह लेती अब सरस्वती को अपने बुद्धिके प्रकाशका अच्छा समय मिलाबड़ा कारखाना बड़े कार्य वो बन्दोवस्त किये कि द्वारिका प्रसाद को परमेश्वर झूठन बुलवाये समयका राजा महाराजा बना दियाअभी तक तो सरस्वती ग़रीबीकी दशामें थी नंगी क्या नहायेक्या निचोड़ेपरंतुअब परमेश्वर रक्खे दौलतधन सम्पदा उसकेनंदको मिलीतो फिरउसके बन्दोबस्त करनेका मनमाना समय सरस्वतीको मिलगया ऐसे समयमें जो२ काम सरस्वती ने किये वह प्रलय कालतक लोगोंकी ज़बानपर रहेंगे मगर अफसोसहै कि उसके लिखनेका सावकाश नहींरहा जोनसीहत मानने वाला हो और बातका सुनने समझने वाला हो तो जितना लिखजा चुकाहै वहभी कुछकमनहीं अनेक प्रकार की बात और अनेकप्रकारकी शिक्षाइसमें मौजूद कहने को तोकहानी क़िस्सा है परंतु हक़ीक़त में नसीहत व हिदायत है अबइस पुस्तकके समाप्तकरनेके पहिले एकबात यहलिखनी अवश्यहै कि सरस्वती बहुतसी छोटीअवस्थामें पुत्रवती होगई थी सो सरस्वतीके सन्तानोंका चर्चा इस पुस्तक में नहींहुआ अब उसका जिकरकिया जाताहै सरस्वतीके लड़केतो बहुत हुये परमेश्वर की माया से जीते कम रहे एक लड़का महेश दत्त आखिर में जीता रहा कई लड़कों के ऊपर यह लड़का हुआ था इस लड़केके उत्पन्नसे पहिले एक बेटा मंगलप्रसाद और एक बेटी मैना मरचुकी थीबच्चोंके पालनेमें एहतियात बहुतेरी होती थी सर्दी गर्मी का बचाव खाने तक के समय मुक़र्रर थे और बंधा हुआ अन्दाज़ और ख़बरदारी ऐसी

भारी कि खराबचीज़ कहीं मुंहमें न डालने पावें जब दांत निकले मसूढ़ा में नस्तरदिया गया कि ऐसा नहो कि दांतों के क्लेशको अज्ञान सम्हाल सके जब बालक चार वर्षका हुआ तुरंत चेचक के बचावके लिये टीका लगवादिया गरज़ जहां तक मनुष्य की बुद्धि काम करतीहै सब प्रकार का बन्दोबस्त किया जाता था परंतु तक़दीर के आगे तदबीर नहीं चलती मंगलप्रसाद चार वर्ष का होकर मरा पेचिश हुई दस्त बन्द करने की दवा दी बुखार आने लगा सरसाम होगया पला पलाया बालक हाथसे जाता रहा यह दाग़ मिटा न था कि मैना सात वर्षकी होकर बीमार पड़ी और कुछ ऐसे बला के दस्त छूटे कि प्राण लेकर बन्दहुए दुनियां जहान की दवायें हुईं परन्तु मौत कब दवा को मानतीहै मैनाके मरनेका सरस्वती को बहुत बड़ा दुःखहुआ पहिलेतो लड़की दूसरे कुछ समझने वाली थी अपनी माता पर ऐसी मोहित थी कि एक क्षण मात्र अलग न होती साथ सोना संग उठना माता की दवातकहो तो अवश्य चीखलेना और छोटीसी उमरमें बस पढ़ने में ध्यान जब मंगलप्रसाद मराथा तो स्त्रियोंने सरस्वती के ईमान में खलल डालना चाहा था कोई कहती कोख का खलल है प्रदुमनमिश्र का इलाजकरो कोई कहती दूध पर नज़र है चौराहे में उतारा रखवाओ कोई कहती घर अच्छा नहीं लछन ओझासे किलवाओ कोई कहतीसफरमें आई गई हो कोई चुड़यल लपटगई है किछौछे चलोगंडे तावीज़ अमल मंत्र टोने टटके सारे दुनियां जहांन के लोग बतलातेथे परंतु वाहरी सरस्वती यों ऊपर तले दो बच्चे मरे लेकिन सदा परमेश्वर पर भरोसा रखती थी किसी ने कुछ कहा भी तो यही उत्तरदियाकि जब परमेश्वर की इच्छाहोगी तो यों भी वह अपनी कृपा करसक्ता है मैनाके मरनेकी ख़बर जबदेवीदत्तको कांगड़ेमें पहुंचीतो बहुत घबड़ाये और उस घबड़ाहट की दशामें बेटीके नाम उन्होंने यह चिट्ठी लिखी॥

स्वस्तिश्री चिरंजीविनी सरस्वती को देवीदत्त का आशीष

प्राप्त होवै इससमय मुझको लखनऊ की चिट्ठीसे मैनाकेमरने का हाल मालूमहुआ मैं इसबातसे इन्कार नहीं करता कि मुझको क्षेश नहीं हुआ परंतु मेरी बुद्धि ऐसी बेठिकाने नहीं हुई कि ना समझपुरुषों के प्रकार मैं सन्तोष न करसका मुझको तुम्हारा बड़ा शोच है तुमपर यह दुख बड़ा भारी हुआ होगा परंतु हरएक समयमें मनुष्यको बुद्धि से सम्मति लेना चाहिये बुद्धि हमलोगोंको इसीहेतु परमेश्वर ने दीहै कि दुख में हमअपनी बुद्धिसे सहायता लेवें मनुष्योंको संसारकी दशा पर विचार करना अवश्यहै और यहशोचप्रयोजन से खालीन नहीं है पृथ्वी आकाश पहाड़ बन नदी मनुष्य पशु पक्षी वृक्ष अनेकप्रकार की वस्तु संसार में हैं और इस संसार का बड़ा भारी फैलाव है दिनमें एक समय पर सूर्यका निकलना रात्रि का होना चन्द्रमा और तारागणोंका चमकना कभी सर्दी कभी गर्मी कभी बसात और जल के प्रभाव से भांति २ के फलफूलका उत्पन्न होना यहसब बातें विचार करने वाले को वर्षों तक शोचने को बहुत हैं आप मनुष्य को अपनी दशा शोच विचार करने को क्या कमहै किसप्रकार मनुष्य उत्पन्न होता है और किस भांति पलता और सयाना होता है और क्योंकर बालापन और युवा और वृद्ध का समय इस पर व्यतीत होताहै और किसप्रकार अन्तमें संसारको त्याग करता है यह बड़ी उत्तम और कठिन बात विचार करने योग्यहै यह सब कारखाना किसी हेतुसे परमेश्वरने जारीकर रक्खा है और जब तक वह चाहेगा यह रचना इसीप्रकार रचा रहेगा संसारके खाने शुमारीसे प्रगट होता है कि एक घंटेमें साढ़े तीन हजार मनुष्य संसार में मरते हैं याने एक पलमेंएकआदमीऔर इतनेही उत्पन्नभीहोतेहोंगेअबहिसाब करो कि एक महीनेमें कैलाख मनुष्य मरते और पैदा होते हैं और शोचो कि लाखों वर्षसे यही तार चला आताहै पस अनगिन्त आदमी अबतक संसारमें मरचुकेहैं मौत एक मामली और जरूरी बात है बड़े २ बलवान राजा महाराजा

और बड़े ऋषि मुनि तपस्वी योगी पण्डित आचार्य्य वैद्य जो कि संसारमें मुर्दोंको जिला सक्ते थे आप कालके चबेना होगये संसारमें जो पैदा हुआहै यह परमेश्वर की आज्ञाहै कि वह एकदिन मरे फिर जो यह आज्ञा किसी दिन हमपर या हमारे किसी सम्बन्धी या नातेदार पर जारी की जाय तो हमको कोई कारण दुख माननेका नहींहै यहबात खूबसोच करनेके योग्यहै और जब तुमको मृत्युका भेद प्रकट होजावेगा तो मुझको भरोसा है कि तुमभी मेरे प्रकार समझोगी कि किसीके मरनेपर शोक करना व्यर्थहै किसीके मौतपर दुखित होना दिलके लगाओ परहै जो हम सुनें कि ब्रह्मा का बादशाह मरगया हमपर उसका कुछ खेद नहीं होगा इसलिये कि हमको उससे कुछ प्रयोजन न था बल्कि महल्ला और पड़ोस में जो कोई ग़ैर आदमी मरजाय जिससे किसीतरह का वास्ता न हो तो हमको बहुत कम दुःखहोताहै फिर हमको जो शख्सीशख्सके मरनेका होता है जिससे हमकोतअ़ल्लुक़है और जितना तअ़ल्लुक़है भारीहै उसी क़दर रंजभी भारीहै नानी के भतीजी के पोतेबहू पर पियासे के बेटे की जोरू जो मरे तो क्या दूरका वास्ता दूर के सम्बन्ध रिश्तेनाते पर कुछ नहीं बल्कि मेल मिलापमेंभी दुःख होताहै अब सोचना चाहिये कि संसार में हमको किससे अधिक तअ़ल्लुक़ है इसके वास्ते कोई दस्तूर मुक़र्रर नहीं है नजदीक का रिश्ता हो और सदा लड़ाइयां और सदा बिगाड़ रहाहो तो ऐसे रिश्तेदार ग़ैरसमझे जाते हैं या अपना गोत नहीं और सम्बन्धनहीं परन्तु प्रीति मेल मिलापहै तो उनके मरनेसे बहुत दुःख होता है और हर एक शख्स अपने हालत के मुवाफ़िक तअ़ल्लुक़ रखता है यह संसार के बन्धन सब प्रयोजन अर्थ होतेहैं जो अपना सम्बन्धी हमारे फायदे में विघ्न डाले अवश्य कि वह हमसे छूटजाय जो ग़ैर आदमी हमारे काम आवे अवश्यहै वह मिलत अपनोंके प्याराहो परन्तु वह अर्थ जिससे तअ़ल्लुक़ प्रगट होताहै जरूर नहीं कि रुपये पैसेका हो यद्यपि बहुधा

ऐसे प्रकार का होता है परन्तु कभी उम्मेद सेभी तअल्लुक़ पैदा होताहै बहुत लोग हमारे मित्रहैं जो हमको कुछ देते नहीं परन्तु यह आसराहै जो हमको कभी किसीप्रकारकी ज़रूरत होगी तो यह काम आनेवालेहैं तअल्लुक़के पैदाहोने के कई कारण होतेहैं मैं इसबातको अब बहुत नहीं बढ़ाता प्रयोजन मेरा इस चिट्ठीमें संतान के तअल्लुक़ के लिखने सेहै यह तअल्लुक़ जो संतान से है सर्वत्र है कोई मा बाप बल्कि कोई पशु पक्षी तक इससे निवृत्त नहींहै इससे मालूम होता है कि केवल अर्थ औ प्रयोजन पर इसकी बुनियाद नहीं है बल्कि परमेश्वर चाहताहै कि माता पिताको अपने संतानकी प्रीतिहो क्योंकि संतान थोड़े दिनों तक मुहताज पालने की होतीहै इसलिये यह प्रीति माता पिता को परमेश्वरने लगा दीहै कि इस प्रीति के लगाव से मा बाप बच्चों को पालें और बड़ा करें यहां तक कि वह बड़े होकर आप संसारमें रहने सहनेलगें यह सन्तानका पालदेला इतना तअल्लुक़नो परमेश्वरके तर्फसे माता पिताको दियागया अबरहे यहबखेड़े कि अब संतानकीतमन्नाहै नहींहै तो दवा है इलाजहैमंत्र तअवीज गंडाहैसंतानहुई तो यह चिन्ताहै किबेटे हों बेटियां नहोंया जोहों जीते रहें यह खुद मनुष्यों की अपनी हवसकीबातेंहैं रही यह बात कि सन्तानके आस जो मनुष्यने परमेश्वर की इच्छासे अधिक अपने मनमेंप्रगटकी निस्संदेह अपने अर्थ और प्रयोजनके हेतु होती है अर्थभी कई प्रकारके हैं बाज़ मनुष्य यह समझतेहैं कि संतानसे नाम चलता है बहुतेरे जानतेहैं कि बुढ़ापेमें हमारी सेवा करेंगे बहुतोंको यह ध्यान होता है कि हमारी सम्पत्ति धनको हमारे पीछे लेंगे अब इन खयालों पर सोच करो कि कितने वाहियात और झूठे हैं नाम चलता क्या मानी कि लोग यह जानें कि फलानेके बेटे और फलाने के पोते हैं पर जो हम जबआप संसार में न रहे तो जो किसीने हमको जाना तो क्या और न जाना तो क्या अब विचार करो कि नाम कहां तक चलता है किसी

मनुष्यसे उसके बाप दादोंके नाम पूछो तो कदाचित् परदादे तक सब कोई बता सकेगा इसके ऊपर संतान को नहीं मालूम होगा कि हमारे सगरदादा कौन थे दूसरे मनुष्यों को उनके मुरदों की हड्डियाँ उखाड़नेकी क्या ज़रूरत है फिर जो नामभी चला तो दोतीन पीढ़ीतक आगे कुशल क्षेम और दो तीन पुश्त तक नाम चलनाभी एक ख़याली बातहै दश बर्षसे मैं इस ज़िले में हूं हज़ारों आदमी मुझको जानते हैं और हज़ारोंको मैं जानता हूं परन्तु न मैं उनके बापको जानता हूं और न वह मेरे बापको जानतेहैं दूसरा कारण संतानके अभिलाषा का यहहै कि बुढ़ापे में सेवा करें यह ध्यान कितना वाहियातहै यह क्योंकर निश्चय है कि उनके बड़े होने तक हम जीते रहेंगे और मानो कि हम जीतेभी रहे तो उनके निस्बत यह ध्यान करना कि बुढ़ापे में हमारी सेवा करेंगे एक मन समझौता है इस कलियुगमें हम ऐसी संतान बहुत कम पाते हैं जिनको माता पिता का अदब और सेवा करनेका ध्यान होता है अदब और सेवा को तो अलग रहने दो इनदिनों तो बहुधा संतान से माता पिता को दुःख क्लेश पहुंचताहै जिस संतान की मनुष्य अभिलाषा करते हैं अन्त तक उनके हाथोंसे दुःख पातेहैं जब तक छोटे हैं पालना एक मुसीबत आज आंखें दुखतीहैं कभी पसुलीका दुःख कभी दस्त जारी कभी दांत निकलतेहैं कभी चेचक निकलीहै परमेश्वर २ करके बड़े हुये तो उनके खाने कपड़े का शोच आदमी नहीं मालूम किस हालमें है नौकर है या नहीं पैसा पासहै या नहीं इनको कहांसे ऐसे देना ज़रूर मातापिताको उपास हो तो हो इनको कुछ न हो तो दमड़ी छदाम रोज़के चने चाहियें अब माबाप चाहे हैं कि लड़का काम सीखे पढ़े लिखे और पूत कपूतहै कि पढ़ने के नाम से कोसों भागता है जब तक मदर्से के चार लड़के ... ंग पछाड़ के घसीट न ले जांय जाना सौगन्धहै और वहां गये ... मास्टरकी आंख बची कहीं चौराहे जा निकला कहीं सड़क ... खड़े गेंड़ियां खेलते हैं

कहीं बाज़ारोंमें ख़ाक छानते फिरतेहैं और तनिक बड़े हुये माता पिताको जवाबदेनेलगे लुच्चोंकी संगति और बदमासों का साथ न नाचसे परहेज़ न बुरी सुहबत से बचाव पुरुषों के नाम बदनाम करते फिरते हैं इसीप्रकार बहुधा लड़के चोर जुआरी ऐयाश औबाश गंजेड़ी भंगेड़ी होजाते हैं अब संतानब्याहनेयोग्य हुई सारा शहर छान मारा कहीं ढबकी बात नहीं मिलती मेल मिलापवाले हारकर बैठरहे कुनबेके लोग एक २ से कह चुके कोई हामी नहीं भरता एक दुरदशा में प्राण हैं माता बिचारी मंदिरों में मानता मांगती फिरती है नजूमी जोतिषी से जन्म पत्रा दिखाती है और हरवक़्त परमेस्वरसे यह मांगती है कि ग़ैब से किसी को भेज परमेश्वर २ करके कहीं बातचीत ठहरे तो माता बिचारीके पास चांदी तककातार नहीं समधियाने वाले साने चांदी का गहना मांगते हैं कोई बिधि घरको उजाड़ पजाड़के बांचकर ब्याह किया चिड़िया की जान गई खाने वालों को स्वाद नहीं मिला दहेज है कि फेंका २ फिरताहै समधिन कहतीहै क्या दिया ऐसे न होतमें बेटी जननी क्या ज़रूर थी कोई वस्तु आंख तले नहीं आती बात २ में ताना तिशना है दामाद जो आबे उनके मिजाज नहीं मिलते ब्याहको चार दिननहीं हुये कि जोड़ू खसम में जूती पैज़ार होनेलगी बेटीको बेटादी और लड़ाई कीलड़ाई मोललो फिर यह नहीं कि यह लड़ाई एक दिनहै बल्किजन्म भरकी मुसीबतका चर्खा चला बेटीके संतानहोने का लग्गा लगा माता बे दामोंकी चेरी बे दमड़ी की दाई बनगई जन्म भर अपने लड़कों के पालने के दुख सहती रही अब परमेश्वर परमेश्वर करके दो वर्ष से आराम मिला था कि बेटे के चेंगे पोटे सम्हालने पड़े जो बहू आई तो झगड़े की गांठ लड़ाई की पोट सासकोतो जूतोके समाननहीं समझती नन्दोंकानथुनों में प्राणकर रक्खाहै न जेठसे शर्म न ससुरेकी लाज स्त्रीहैकि पुरुषों की पगड़ी उतार लेतीहै परमेश्वर पनाहमें रक्खे बेटे नालायक़ को देखिये कि बीबीने तो यह उधम जोतरक्खीहै

यह भड़ुआ बीबीके पक्षपरहै उलटा माता पितासे लड़ताहै यहांतक कि माता पिता घर छोड़कर अलग भाड़ेके मकान में जा रहे यह फल इस समयके संतानसे माता पिताको मिलताहै बहुत थोड़े हैं वह मनुष्य जो सन्तान से सुखपाते हैं फिर हमलोग अपनी अज्ञानतासे सन्तानकी अभिलाषकरते हैं गोया हम क्लेश दुखकोकांक्षाकरके बुलातेहैं अच्छा यह हाल कि माल और सम्पत्ति का कोई वारिस हो इसकारण से पुत्रकी लालसा की जाय यह ध्यान कितना मूर्खहै क्योंकि जब आदमी आप संसारसे उठगया तो उसके धन दौलतको जो उनकेबेटोंने लियातो क्या अथवा माल लावारिसहोकर सरकारमें गयातो क्या यह दौलत सम्पत्ति परलोक में कुछ काम न आवैगी परंतु उतनीही काम आयेगी कि जितनी परमेश्वरके राहमें हम आप खर्चकर जांय या हमारे पीछे हमारे नामसे परमेश्वर के राहमें खर्चहो जब हमने धनदौलतको आप खर्च नहीं किया और ऐसाजरूरी काम सन्तान के जिम्मे छोड़गये तो हम से अधिक कोई निर्बुद्धि नहीं है जो सन्तान माता पिताके जमाकी हुई संपति सेंत मेंत पा जाते हैं उनके खर्च करनेमें उनको सोच नहीं होता मनुष्य उसी धनका आदर करताहै जिसको वह खुद अपनी मेहनत और बलसे पैदाकरता है पस माता पिता तो सन्तान के लिये संपत्ति छोड़गयेऔर उसने नाच रंगमें उड़ानी शुरूअ करदी और इतनाभी नहीं होताकि पिताके नाम एकसीधा भी किसी साधू या किसी अतिथि कोदे क्या ऐसे सैकड़ों हजारों कहानी संसार में नहीं हैं कि लोग जन्मभर इकट्ठा करते२मरगये सन्तानने दौलत पातेही वह गुलछर्रे उड़ाये कि थोड़े दिनोंमें बापकी जमाकी हुई दौलत उठाकरबैठरहे इस बातसे तुमको प्रकटहोगा कि जितना अधिक बंधन अपने मनसे तुमने सन्तान में बढ़ा लियाहै वह हमारे हक़में बहुत क्लेश देनेवाला है हमको सन्तानसे इतने बंधन रखनेकी आशाहै कि जब तक वहहमारी सहायताके मुहताज रहैं हम

उनकी पालनाकरें और इस पालनमेंभी इस बातकी तमन्ना अपने मनमें न आने दें कि सन्तान बड़ी होकर इस पालनके बदलेमें कभीहमारी सेवा करेगी यह अभिलाष प्रगटकरना बड़ी ना समझी की बात है बल्कि यह समझना चाहिये कि परमेश्वरने जो हमारा मालिकहै उनकी पालनेकी सेवा हम से तअल्लुक़की है हम संतानको पालतेहैं परमेश्वरकी आज्ञा की तामीलकरतेहैं यह फुलवाड़ी परमेश्वर की है और हम उसकी ओरसे इसफुलवाड़ीके माली हैं जो फुलवाड़ीका मालिक किसी वृक्षको क़लमकराने अथवा काटडालनेकी आज्ञा दे माली यह कब कहसक्ता है कि मैंने इस वृक्षको बड़े यत्न और क्लेशसे पालाहै यह क्योंकाटा और क़लमकिया जाता है संसार के सब बन्धन केवल इतने लिये है कि आदमी एक दूसरे को लाभ पहुंचावे हम थोड़े दिनों के लिये संसार में भेजे गये हैं और यहां हमको किसी का पिता किसी का पुत्र बनादिया है इसलिये कि वह लोग हमारी और हम उन लोगों की सहायता करें और मेल मिलाप से अपने जीवन के दिन पूरे करजांय संसार हमारा घर नहीं है हमको ऐसी जगह भी जाना होगा कि जहां न कोई हमारा है न हम किसी के हैं जो हम किसी के पिता हैं तो केवल थोड़े दिनके लिये और जो किसी के बेटे हैं तो भी थोड़े दिनों के लिये फिर हम किसी को मरता देखें तो दुःख क्लेश उठानेकी क्या बात है क्लेश तो जब हम करें जब हम यहां बैठरहैं हमको खुद भी तो जाना है नहीं मालूम किस घड़ी बुलाया हुआ और चलना ठहर जाय फिर सब से कठिन यह है कि मरना केवल यही नहीं है कि शरीर से प्राण निकल गया बल्कि वहां जाकर बात २ का लेखा देना होगा ज़बान झूठ और गाली और बेहद्दह बकवाद की जवाबदिही करेगी आंख नजर लड़ाने की सजा पायेगी कानको किसी की बदी और बुरी बातों के सुनने की सजा दी जायगी हाथसे किसी पर ज़ादती की है या पराया माल चुराया है काटा जायगा

पांव जो बेराह चले हैं शिकंजे में कसे जायंगे बड़ा टेढ़ा समय होगा परमेश्वर अपनी दया से बेड़ापार करे तो हो सक्ता है जिनको इनबातों से निश्चिन्ताई हो वह किसी के मरने पर ग़म करें या किसी के पैदा होने से आनंद करें तो हो होसक्ता है परन्तु संसारी मनुष्यों में कोई ऐसा भी मनुष्य है जो अपने परलोक से निश्चिन्त होचुका हो सरस्वती अपनी सुधि लो और परलोक के हेतु सामान करो कि जहां सिवाय अमल के कुछ काम न आयेगा और परमेश्वर से बिनती करो कि वह हम सबका अंजाम बख़ैर करे ॥

इति स्त्री दर्पण समाप्तः ॥



नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
रामायण नाना र्थ नौ स-	भगवद्गीता विष्णु सहस्त्रना-	भाषा महा भारत विजय
कुन्दावली	म सहित	मुक्ता वली
दूसरी पुस्तक रामायण माला	भरतरी गीत	शृंगार प्रकाश
तीसरी रामायण गीताष्टक	देवी भागवत नागरी	दोहा वली रत्ना वली
चौथी ज्ञान दोहा वली	कल्प सूत्र	समर विहार विन्द्रावन
पांचवीं रस सारिणी	बिहारी सतसई सटीक	रसल सार
छठी तिथि बोध	विश्राम सागर	कथा चित्र गुप्त
सातवीं पुस्तक मातृदत्त कृत	राम लगन	कायस्थ दर्पण
सत्य नारायण की कथा स०	मनुस्मृति उर्दू टीका सहित	कृष्ण बाल लीला
शनिश्चर की कथा	वैष्णवी संध्या	गीत गोविन्द सटीक
राम कलेवा	याज्ञवल्क्य भाषा टीका स०	रामाभिषेक नाटक
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	इन्द्र सभा नागरी
कवि कुल कल्पतरु भाषा	आनन्दामृत वर्षिणी	सिंहासन बत्तीसी
प्रेम रत्न	निर्णय सिन्धु	शुक बहत्तरी
बन यात्रा	ज्ञान माला	अपूर्व कथा अर्थात गुल-
भजना वली	दैवज्ञ भरण	बकावली
बारह मासा फ़क़ीर अल्ला	ज्ञान चालीसी	गुल सनोबर नागरी
बरवा	शङ्कर दिग्विजय भाषा	चित्र चन्द्रिका
बारह मासा बलदेव प्रसा-	योग वाशिष्ठ देवनागरी में	छन्दोर्णव पिङ्गल
द कृत	मार्कण्डेय पुराण	हिदायत नामा माल गुज़ारी
कृष्ण सागर	वैताल पच्चीसी	हिदायत नाम बन्दोबस्त
हारीत स्मृति नागरी	दान लीला नाग लीला	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
भगवद्गीता सटीक नागरी	सभा विलास	बाल बोध
रामायण राम विलास	विक्रम विलास	क़ानून ॥
यमुना लहरी	इन्द्र जाल नागरी	ताज़ीरात हिन्द अर्थात
षट् पञ्चाशिका	कायस्थ कुल भास्कर	ऐक्ट ४५ सन् १८५९ ई०
कल्प सूत्र भाषा	क़िस्सह गोपी चन्द भरतरी	ऐक्ट ३५ सन् १८६६ ई०
विनय पत्रिका सटीक	बहार विन्द्रावन	ज़ाबिते फ़ौजदारी
किताब पटवारी ४ भाग	पद्मावती खण्ड आल्ह खंड	मज़मूआ ऐक्ट लगान ग्र-
रस राज	लावनी व शेर बनारसी	वध जिसके साथ नीचे लि-
कृष्ण प्रिया	युगल विलास	खे हुये ऐक्ट संयुक्त हैं॥ ॥
ज्ञान स्वरोदय	जनक पच्चीसी	ऐक्ट १४ सन् १८६५ ई०

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
ऐक्ट १० सन् १८७७ ई०	भाषा चन्द्रोदय	आरण्य काण्ड
जरीद	इंगलिस्तान का इतिहास	किष्किन्धा काण्ड
ऐक्ट १६ सन् १८६१ ई०	गणित लता १ भाग	सुन्दर काण्ड
ऐक्ट नं० २६ सन् १८६६ ई०	तथा २	लंका काण्ड
ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०	तथा ३	उत्तर काण्ड
ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०	गणित प्रकाश १ भाग	अक्षरारम्भ
ऐक्ट १० सन् १८५९ ई०	तथा २	भाषा तत्त्व दीपिका
ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई०	तथा ३	बाला भूषण
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०	तथा ४	हिदायत नामा मुदर्रिसा-
ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०	शिशु बोध	न् हल्क़ह बन्दी
ऐक्ट नं० १८ सन् १८६५ ई०	पशु चिकित्सा	शिक्षा वली
क़वायद रेलवे और उस	क्षेत्र चन्द्रिका १ भाग	भोज प्रबन्ध सार
के साथ क़ानून भी हैं ॥	तथा २	राजनीति
ऐक्ट १८ सन् १८६९ ई०	रेखा गणित १ भाग	स्त्रियों की हित पत्रिका
ऐक्ट १६ सन् १८७३ ई०	तथा २	अवध भूगोल
अर्थात् क़ानून लगान	सूरज पुर की कहानी	कवित्त रत्नाकर
मुमालिक मग़रबी व शि-	तिथि चक्र	भूगोल दर्पण
माली	भूगोल तत्त्व	बीज गणित १ भाग
ऐक्ट १२ सन् १८७४ ई०	पदार्थ विद्या सार	तथा २
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	वर्ण प्रकाशिका १ भाग	क्षेत्र व्यवहारिक तत्त्व
सरिश्ते तालीम की पुस्तकें	तथा २	महाभारत भाषा छन्दप्र-
	वर्ण प्रकाशिका कैथी	बन्ध में जो श्री मन्महाराजा-
विद्या की नेव नागरी अक्षरों में	१ भाग	धिराज उदित नारायण सिं
विद्या की नेव कैथी अक्षरों में	तथा २	ह जी काशी नरेश ने गोकुल
भाषा लघु व्याकरण	मंगल कोष	नाथादि कवीश्वरों से रचना
१ भाग	पत्र दीपिका	कराय कलकत्ते में छपवाया
तथा २	भारत खण्डिका	था वही श्रीयुत माधव सिंह
धात्वर्सव	क्षेत्र प्रकाश	गढ़ अमेठी नरेश की सहाय
अक्षरावली	पत्र दिनेचिरी	ता और अनुमति से इस य
अक्षर दीपिका	रामायण सातों काण्ड	न्त्रालय में अत्युत्तम टैप के
विद्यांकुर	बाल काण्ड	पुस्तकाकारों में १४ पर्व बड़ी
बालबोध	अयोध्या काण्ड	सुन्दरता से छपा है ॥

Anetii
Jh